

[2023] 6 एस. सी. आर 281

ग्राहक, केंद्रीय विशेषज्ञ और आयुक्त

सेवा कर, हैदराबाद

वी.

अश्विनी होमियो फार्मसी

(2018 की सिविल अपील संख्या 9525)

03 मई, 2023

[दिनेश माहेश्वरी और विक्रम नाथ, जे. जे.]

केंद्रीय उत्पाद शुल्क अधिनियम, 1985: अध्याय 30, पहली अनुसूची, शुल्क वस्तु 3003 90 14-उत्पाद "अश्विनी होमियो अर्निका हेयर ऑयल"

- अध्याय 30 में टैरिफ आइटम 3003 90 14 के तहत 'दवा' के रूप में या अध्याय 33 में टैरिफ आइटम 3305 90 19 के तहत 'कॉस्मेटिक या शौचालय की तैयारी' के रूप में वर्गीकरण-आयोजित: उत्पाद अश्विनी होमियो अर्निका हेयर ऑयल को अध्याय 30 के तहत 'दवा' के रूप में वर्गीकृत किया गया है और अध्याय 33 के तहत 'कॉस्मेटिक या शौचालय की तैयारी' के रूप में नहीं-दोहरे परीक्षण-सामान्य बोलचाल परीक्षण और सामग्री परीक्षण के आधार पर, इसे उचित रूप से दवा माना जाता है-इसके अलावा, जब उक्त उत्पाद का उद्देश्य बालों के झड़ने को नियंत्रित करना, रुसी को रोकना और अच्छी नींद लाना है, जो सभी अपने स्वयं के चिकित्सीय और रोगनिरोधी अर्थ रखते हैं, तो लंबे काले बहते बालों वाली महिला की तस्वीर उत्पाद को कॉस्मेटिक नहीं बना सकती है-वर्ष में लाए गए संशोधन के माध्यम से शुल्क संरचना में परिवर्तन।

2012 अधिनियम 1985 की पहली अनुसूची के अध्याय 30 और अध्याय 33 में प्रविष्टियों के उत्पाद के वर्गीकरण-केवल व्यापक आधार पर-पर पुनर्विचार करना अपने आप में उत्पाद के पुनः वर्गीकरण के प्रयास के लिए औचित्य नहीं हो सकता था।

याचिका खारिज करते हुए कोर्ट ने कहा,

पकड़ना: 1. उत्पाद अश्विनी होमियो अर्निका हेयर ऑयल अहाहो, केंद्रीय उत्पाद शुल्क अधिनियम, 1985 की पहली अनुसूची के अध्याय 33 के तहत 'सौंदर्य प्रसाधन या शौचालय की तैयारी' के रूप में नहीं, बल्कि अध्याय 30 के तहत 'दवा' के रूप में वर्गीकरण के योग्य है और वर्ष 2012 में लाए गए संशोधन के माध्यम से शुल्क संरचना में परिवर्तन के वर्गीकरण पर किसी भी पुनर्विचार को उचित नहीं ठहराता है।

विचाराधीन उत्पाद। [पैरा 34] [353-एफ-जी]

[2023] 6 एस सी आर।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

2.1 इस सवाल के संबंध में कि क्या उत्पाद, अश्विनी होम्यो अर्निका हेयर ऑयल-ए. एच. ए. एच. ओ., के रूप में वर्गीकरण के योग्य है

परीक्षण को आगे समझा जा सकता है कि इस तरह के कर कानून का प्राथमिक उद्देश्य राजस्व बढ़ाना है और विभिन्न उत्पादों को उस उद्देश्य के लिए अलग-अलग वर्गीकृत किया जा रहा है, प्रविष्टियों को उनके वैज्ञानिक और तकनीकी अर्थ में नहीं समझा जाना चाहिए; बल्कि टैरिफ में उपयोग किए जाने वाले शब्दों और अभिव्यक्तियों को उनके लोकप्रिय अर्थ से समझा जाना चाहिए, जो उत्पाद के साथ काम करने या उपयोग करने वालों द्वारा उनसे जुड़ा अर्थ है। इसके अलावा, शब्दों और अभिव्यक्तियों को, जब तक कि कानून में परिभाषित नहीं किया गया है, उस अर्थ में समझा जाना चाहिए जिसमें उनके साथ काम करने वाले व्यक्ति समझते हैं अर्थात्, व्यापार समझ और उपयोग के अनुसार। इसके अलावा, किसी उत्पाद के सही वर्गीकरण के लिए कोई निश्चित परीक्षण या स्थिर मापदंड नहीं है और यह अनिवार्य रूप से उससे संबंधित व्यक्तियों द्वारा दिए गए अर्थ पर निर्भर करता है। आवश्यक कारकों में से एक

यह निर्धारित करना कि कोई उत्पाद अध्याय 30 के अंतर्गत आता है या नहीं, यह है कि क्या उत्पाद को आम बोलचाल में एक औषधीय उत्पाद के रूप में समझा जाता है। हालांकि, की मात्रा किसी विशेष उत्पाद में उपयोग की जाने वाली दवा एक प्रासंगिक कारक नहीं है क्योंकि, आम तौर पर, चिकित्सा अवयवों के उपयोग की सीमा बहुत कम होती है क्योंकि एक बड़ा उपयोग मानव शरीर के लिए हानिकारक हो सकता है।

एक चिकित्सक द्वारा निर्धारित किए बिना औषधीय। जिन वस्तुओं को कॉस्मेटिक अर्थ वाले नामों के तहत बेचा जा सकता है, वे फिर भी दवाएँ ही रह जाएंगी। रचना के आधार पर। इस प्रश्न के संबंध में कि क्या कोई विशेष उत्पाद अध्याय 30 के तहत वर्गीकृत किया जा सकता है

' औषधि 'या' सौंदर्य प्रसाधन 'के रूप में अध्याय 33 के तहत, आवश्यक विशेषताओं में से एक यह होगी कि क्या तैयारी ग्राहकों, केंद्रीय कर और सेवा कर, हैदराबाद V का आयुक्त है।

अश्विनी होमियो फार्मसी

अनिवार्य रूप से रोग के इलाज या रोकथाम (दवा) या देखभाल (सौंदर्य प्रसाधन) के लिए; और केवल सहायक उपचारात्मक या रोगनिरोधी मूल्य वाली तैयारी अध्याय 33 के अंतर्गत आएगी। [पैरा 18.1] [338-एफ-एच; 339-ए-एफ]

2.3 सामग्री से संबंधित परीक्षण को लेते हुए, यह सुझाव देने का कोई कारण नहीं है कि उत्पाद में सवाल, आहहो, इस परीक्षा को पास नहीं करता है। यह निर्विवाद है कि उत्पाद को सक्षम अधिकारियों द्वारा विधिवत लाइसेंस प्राप्त होने के बाद एक दवा के रूप में निर्मित किया गया है और

इसकी तैयारी में चार होम्योपैथिक दवाओं, अर्निका मोंटाना, कैथारिस, पिलोकार्पिन और सिनकोना का संयोजन। इन होम्योपैथिक दवाओं का विधिवत उल्लेख किया गया है

होम्योपैथिक फार्माकोपिया ऑफ इंडिया के साथ-साथ डिक्शनरी ऑफ प्रैक्टिकल मैटेरिया मेडिका में भी। [पैरा 22] [344-एच; 355-ए-बी]

उस पदार्थ के सार को देखे बिना कि उत्पाद स्पष्ट रूप से विचाराधीन था, उसमें कुछ अंतराल या कुछ खामियां खोजें। 1945 के नियमों की अनुसूची के तहत एक होम्योपैथिक दवा होने का संकेत दिया गया। उत्पाद की प्रकृति और उसके गुणों को देखते हुए, प्रासंगिक संकेतों को भी उचित शब्दों में निर्दिष्ट किया गया है और इसकी प्रकृति और उद्देश्य को देखते हुए, उपयोग के लिए निर्देश भी इस तरह से दिए गए हैं कि इसे सीधे खोपड़ी पर मालिश किया जाए और सर्वोत्तम परिणामों के लिए रात भर छोड़ दिया जाए। इसलिए, उपयोग की जाने वाली खुराक और जिस अवधि के लिए इसका उपयोग किया जाना है, उसके बारे में विनिर्देशन की कमी के बारे में न्यायनिर्णायक प्राधिकरण की टिप्पणियों में उनकी अपनी राय है।

कमियां हैं। विचाराधीन उत्पाद अनिवार्य रूप से खोपड़ी में और उस पर उत्पन्न होने वाली स्थितियों से निपटने के लिए है, जिसमें बाल उसका अभिन्न अंग हैं। उत्पाद में [2023] 6 एस. सी. आर. शामिल हैं।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

होम्योपैथिक दवाएँ। इसका उपयोग करने का तरीका इसे खोपड़ी पर रखना और रात भर के लिए छोड़ देना है। उत्पाद की प्रकृति और उसके उपयोगों को देखते हुए, खुराक के संबंध में विनिर्देशन की कमी के बारे में टिप्पणियाँ उत्पाद को उससे बाहर नहीं निकालती हैं। औषधीय मूल्य। इसके अलावा, कोई प्रतिकूल संकेत नहीं होने के कारण असंतोष की न्यायनिर्णायक प्राधिकरण की टिप्पणियाँ दृष्टिकोण की तर्कसंगतता से मीलों दूर चली गई हैं। यदि प्रत्यर्थी ने लेबल पर स्पष्ट शब्दों में कहा है

इसकी प्रकृति, उद्देश्य और उपयोग के तरीके को देखते हुए, कि उत्पाद में कोई विपरीत संकेत नहीं हैं, यह एक दवा बनना बंद नहीं करती है। [पैरा 22.1] [345-सी-जी; 346-ए-बी]

2.5 न्यायनिर्णायक प्राधिकरण के दृष्टिकोण की विकृति और अनुचितता को भी टिप्पणियों से देखा जाता है।

कि, यदि इरादा उत्पाद की पहचान दवा के रूप में करना था, तो इसे "हेयर ऑयल" के रूप में लेबल करने की कोई आवश्यकता नहीं थी। जबकि लेबल पर "हेयर ऑयल" अभिव्यक्ति दिखाई देती है, दूसरा अभिन्न है।

"हेयर ऑयल" अभिव्यक्ति से पहले "होमो" और "अर्निका" अभिव्यक्तियों को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता था और उन्हें अलग नहीं छोड़ा जा सकता था। न्यायनिर्णायक प्राधिकरण ने इस हद तक देखा था कि बालों का विकास तत्काल ध्यान या उपचार की आवश्यकता वाली बीमारी के बजाय एक कॉस्मेटिक आवश्यकता थी। न्यायाधिकरण ने ठीक ही कहा कि जब बाल झड़ने या गंजापन को एक चिकित्सा स्थिति के रूप में मान्यता दी जाती है, तो न्यायनिर्णायक प्राधिकरण

चिकित्सा की किसी भी शाखा से। न्यायाधिकरण ने ठीक ही बताया कि उत्पाद में स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है कि इसका उपयोग अन्य उत्पादों के लिए किया जा सकता है। सिरदर्द जैसी बीमारियाँ और इससे अच्छी नींद आती है। इसके अलावा,

ऐसा प्रतीत होता है कि न्यायनिर्णायक प्राधिकरण ने अध्याय 30 की विषय-वस्तु और इस तथ्य पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया है कि दवा के रूप में स्वीकार किए जाने के लिए, उत्पाद को हमेशा केवल चिकित्सीय उपयोग करने की आवश्यकता नहीं है। 3003 और 3004 शीर्षक के तहत रोगनिरोधी उपयोग वाले उत्पाद की भी परिकल्पना की गई है। अगर उत्पाद बालों की जड़ों में रक्त परिसंचरण में सुधार करने और इस तरह बालों के झड़ने को नियंत्रित करने का दावा करता है, इसके रोगनिरोधी उपयोग का लाभ नहीं दिया जा सकता है। [पैरा 22.2-22.3] [346-सी-एफ]

2.6 विचाराधीन उत्पाद, निस्संदेह 1945 के नियमों की अनुसूची के की क्रम संख्या 35 द्वारा कवर किया गया है और ग्राहकों, केंद्रीय अपवाद और सेवा कर, हैदराबाद बनाम के आयुक्त होने के नाते।

अश्विनी होमियो फार्मसी

1940 के अधिनियम के तहत जारी लाइसेंस के संदर्भ में निर्मित, स्पष्ट रूप से सामग्री परीक्षण को संतुष्ट करता है। दूसरे शब्दों में, उस पर

सामग्री, उत्पाद वास्तव में एक दवा है जिसमें होम्योपैथिक दवाओं का संयोजन होता है। [पैरा 22.4] [346-जी] 2.7 वर्तमान मामले में यह भी स्पष्ट है कि संबंधित उत्पाद को 'कॉस्मेटिक' के रूप में वर्गीकृत करने के लिए विभाग का रुख स्पष्ट है।

अध्याय 33 के तहत अनिवार्य रूप से उसमें होने वाली विशिष्ट प्रविष्टि "बाल तेल" पर आधारित है और ऐसा प्रतीत होता है कि उत्पाद के लेबल पर होने वाली अभिव्यक्ति "बाल तेल" को उनके द्वारा निर्णायक माना गया है। यह एक प्राकृतिक परिणाम के रूप में भी होगा कि उत्पाद के लेबल पर होने वाली अभिव्यक्ति "हेयर ऑयल" केवल उस माध्यम का संकेत दे रही है जिसके माध्यम से होम्योपैथिक दवा का उपयोग किया जाता है।

उत्पाद वाली दवाओं का उपयोग किया जाना है। द.

प्रस्तुतियाँ और अपीलार्थी की ओर से उत्पाद को अध्याय 33 में ले जाने के प्रयास केवल इसलिए किए गए क्योंकि इसके लेबल पर "हेयर ऑयल" अभिव्यक्ति है, जबकि पूर्ववर्ती महत्वपूर्ण अभिव्यक्तियों "होमो" और "अर्निका" की अनदेखी की जा सकती है।

स्वीकार कर लिया। अध्याय 30 के टिप्पणी 1 (ई) का संदर्भ भी कोई प्रासंगिकता नहीं है क्योंकि विचाराधीन उत्पाद नहीं हो सकता है

कहा जाता है कि यह हेडिंग 3305 की तैयारी है और फिर इसमें महत्वहीन या सहायक चिकित्सीय या रोगनिरोधी गुण हैं। जहां तक विचाराधीन उत्पाद का संबंध है, जो अनिवार्य रूप से होम्योपैथिक दवाओं से बना है, जिसका चिकित्सीय और रोगनिरोधी उपयोग होता है, इसे केवल सहायक दवा मूल्य वाला नहीं कहा जा सकता है। इसे अलग तरह से रखते हुए, विचाराधीन उत्पाद, ए. एच. ए. एच. ओ., मुख्य रूप से औषधीय मूल्य का है और उसमें कॉस्मेटिक की वस्तु, यानी बालों का तेल, उचित उपयोग के लिए एक माध्यम के अलावा और कुछ नहीं है।

उस औषधीय मूल्य का। [पैरा 23.1] [345-सी-जी; 346-ए-बी]

2.8 सामान्य प्रविष्टि की तुलना में विशिष्ट प्रविष्टि के बारे में प्रस्तुतियाँ अपीलार्थी के मामले को आगे नहीं ले जाती हैं। 3305 शीर्षक के तहत टैरिफ आइटम 'हेयर ऑयल' से संबंधित अध्याय 33 की निर्दिष्ट प्रविष्टि को ही एक सामान्य प्रविष्टि के रूप में लिया जाना है।

प्रविष्टि और किसी भी मामले में, जब बाल तेल का उपयोग केवल दवा के उपयोग/प्रशासन/अनुप्रयोग के लिए एक माध्यम के रूप में किया जा रहा है, तो मामला शीर्षकों 3003 या 3004 के तहत दवा से संबंधित विशिष्ट प्रविष्टि में आएगा; और यह होम्योपैथिक [2023] 6 एस. सी. आर. की दवाओं का है।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

प्रणाली में, यह या तो टैरिफ आइटम 3003 90 14 या आइटम 3004 90 14 में आएगा। किसी भी मामले में, उत्पाद अध्याय 33 के अंतर्गत नहीं आ सकता है। [पैरा 23.3] [348-बी-डी]

2.9 सामान्य बोलचाल परीक्षण की अन्य विशेषताओं पर, अर्थात्,

सवाल, ए. एच. ए. एच. ओ, एक दवा बनना बंद नहीं करती है। [पैरा 25] [348-जी-एच; 349-ए-सी]

2.10 जब तैयारी इलाज या रोकथाम के लिए होती है, तो यह दवा होगी, लेकिन अगर केवल देखभाल के लिए होती है, तो यह कॉस्मेटिक होगी। बेशक, एक कॉस्मेटिक दवा नहीं बनेगी, भले ही

सहायक उपचारात्मक या रोगनिरोधी मूल्य होना। हालाँकि, विचाराधीन उत्पाद, ए. एच. ए. एच. ओ., इस कारण से विफल नहीं होता है कि यह होम्योपैथिक दवा की तैयारी है और जब इसे उन दवाओं को ले जाने के रूप में विपणन किया जाता है, तो वाणिज्यिक और सामान्य बोलचाल में भी, इसके नाम में महत्वपूर्ण गुण होते हैं।

अभिव्यक्ति "होमो" और "अर्निका", उत्पाद को केवल मुख्य रूप से औषधीय मूल्य वाले के रूप में समझा जा सकता है न कि केवल कॉस्मेटिक मूल्य के रूप में। [पैरा 26] [349-डी-एफ]

2.11 जब विचाराधीन उत्पाद का उद्देश्य बालों के झड़ने को नियंत्रित करने के साथ-साथ रूसी को रोकने और अच्छी नींद लाने के लिए भी है, जो सभी अपने स्वयं के चिकित्सीय और रोगनिरोधी ले जाते हैं

उत्पाद एक कॉस्मेटिक है। दिलचस्प बात यह है कि उक्त तस्वीर के शीर्ष पर और उत्पाद के नाम के नीचे, यह घोषणा करता है "बालों के झड़ने को नियंत्रित करता है। खुजली को रोकता है"। द एडजुडिकेटिंग प्राधिकरण ने अपने विश्लेषण की प्रक्रिया को और अधिक अतार्किक ऊंचाइयों पर ले जाते हुए यह घोषणा की है कि बालों का विकास तत्काल ध्यान या उपचार की आवश्यकता वाली बीमारी के बजाय एक कॉस्मेटिक आवश्यकता थी। इस तरह के दृष्टिकोण को केवल अस्वीकार किया जा सकता है।

[पैरा 27] [349-जी-एच; 350-ए-बी] ग्राहक आयुक्त, केंद्रीय कर और सेवा कर, हैदराबाद बनाम. अश्विनी होमियो फार्मसी

2.12 बात का सार यह है कि आम तौर पर

ए. एच. ए. एच. ओ. होम्योपैथिक दवाई की तैयारी है। हालाँकि, न्यायनिर्णायक प्राधिकरण इस बात पर विचार करने में विफल रहा कि 1945 के नियमों की अनुसूची के तहत जारी किए गए इस तरह के दवा लाइसेंस को पूरी तरह से नजरअंदाज नहीं किया जाना चाहिए था। सामान्य बोलचाल परीक्षण और सामग्री परीक्षण दोनों के संबंध में, यह कारक अपनी प्रासंगिकता रखता है, भले ही अंत में मामले का निर्णायक न हो। प्रिस्क्रिप्शन के तहत अधिकृत चिकित्सा वितरक या खुदरा विक्रेता द्वारा बिक्री की शर्त की कमी के बारे में प्रस्तुत करने की अपनी कमियां हैं क्योंकि यह नहीं दिखाया गया है कि क्या ऐसी तैयारी इसके अंतर्गत आती है।

1945 के नियमों की अनुसूची के में भी नियम 97 के संदर्भ में इस तरह के उल्लेख की आवश्यकता थी। किसी भी मामले में, 1940 के अधिनियम और 1945 के नियमों के पालन के लिए ऐसी कोई भी आवश्यकता केवल लाइसेंस देने और दवाओं के निर्माण और बिक्री को विनियमित करने वाले अधिकारियों के विचार का विषय हो सकती है। वर्तमान उद्देश्य के लिए एकमात्र प्रासंगिक पहलू यह है कि जिस उत्पाद का होम्योपैथी दवा के रूप में निर्माण किया जा रहा है, और जिसका विपणन किया जा रहा है और इसके औषधीय मूल्य के लिए होम्योपैथिक दवा के रूप में उपयोग किया जा रहा है, वह अध्याय 30 में आएगा और इसे कॉस्मेटिक के रूप में ब्रांडेड नहीं किया जा सकता है, ताकि यह 1985 के अधिनियम की पहली अनुसूची के अध्याय 33 के तहत आ सके। [पैरा 28] [350-डी-जी]

2.14 आंध्र प्रदेश सामान्य बिक्री कर अधिनियम, 1957 में प्रविष्टि के संबंध में विचाराधीन उत्पाद

इस न्यायालय द्वारा एक के विवरण का उत्तर देने के लिए स्वीकार किया गया

दवा और एक कॉस्मेटिक उत्पाद नहीं होने के नाते, यह पाए जाने के बाद कि प्रतिवादी-निर्धारिती का इसके अवयवों के बारे में दावा और इस तरह 1940 के अधिनियम की धारा 3 के अर्थ के भीतर एक दवा होने के लिए योग्य उत्पाद का खंडन नहीं किया जा सकता है राजस्व। इस न्यायालय के उक्त निर्णय का प्रश्नगत [2023] 6 एस. सी. आर. में उत्पाद के वर्गीकरण के प्रश्न पर सीधा प्रभाव नहीं पड़ सकता है।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

विचाराधीन उत्पाद को जवाब देते हुए पाया गया है 1940 के अधिनियम के उद्देश्य के लिए और उक्त आंध्र प्रदेश सामान्य बिक्री कर के उद्देश्य के लिए एक 'दवा' का विवरण

अधिनियम, 1957। किसी भी दृष्टिकोण से देखा जाए तो यह एक दवा बनी हुई है। [पैरा 29] [350-एच; 351-ए-सी]

3.1 यह स्पष्ट है कि विचाराधीन उत्पाद को अतीत में 'दवा' के रूप में वर्गीकृत किया गया था और इसे फिर से वर्गीकृत करने के लिए सामग्री में कुछ भी नहीं बदला था। हालाँकि, राजस्व ने अपने वर्गीकरण पर फिर से विचार करने के लिए वर्ष 2012 में शुल्क संरचना के संशोधन पर भरोसा करने का प्रयास किया है। द. न्यायनिर्णायक प्राधिकरण ने इस औचित्य को इस तरीके से बताया कि शुल्क शीर्षकों में पर्याप्त बदलाव किए गए थे, विशेष रूप से जब अध्याय 30 को फिर से लिखा गया ताकि पेटेंट/स्वामित्व और जेनेरिक दवाओं के बीच के अंतर को दूर किया जा सके और उन्हें इस आधार पर वर्गीकृत किया जा सके कि उन्हें खुदरा बिक्री के लिए इकाई पात्रों में रखा गया है या नहीं; 1940 के अधिनियम और विभिन्न फार्माकोपिया के बारे में उल्लेख हटा दिया गया; और अध्याय 33 के तहत, 'हेयर ऑयल' वाक्यांश प्रमुख हो गया जिसके तहत, 'सुगंधित बाल तेल' और 'अन्य' के सहायक शीर्षकों को निर्दिष्ट किया गया। न्यायनिर्णायक प्राधिकरण के अनुसार, ये सभी परिवर्तन उस उत्पाद की तुलना में नई प्रविष्टियों की व्याख्या के योग्य हैं जो पहले तय या तय किया गया था। विभाग में फिर से मांग करने का कोई औचित्य नहीं था

केवल अध्याय 30 में किए गए कुछ परिवर्तनों के संदर्भ में उत्पाद के संबंध में तय स्थिति को खोलें।

विस्तृत विनिर्देशों के साथ। इन परिवर्तनों में अन्यथा कोई नहीं था। प्रभाव, जहाँ तक ए. एच. ए. एच. ओ. का संबंध है। [पैरा 30] [351-सी-जी]

3.2 वर्गीकरण में परिवर्तन को केवल स्वीकार नहीं किया जा सकता है।

यह दिखाए बिना कि उत्पाद ने अपना चरित्र बदल दिया है, विभिन्न कर संरचना के लागू होने के आधार पर। इस प्रकार, अधिनियम 1985 की पहली अनुसूची के अध्याय 30 और अध्याय 33 में प्रविष्टियों का केवल व्यापक आधार, अपने आप में, उत्पाद के पुनः वर्गीकरण के प्रयास के लिए औचित्य नहीं हो सकता था।

[पैरा 31] [352-बी, डी] उपभोक्ता आयुक्त, केंद्रीय कर और सेवा कर, हैदराबाद बनामा अश्विनी होमियो फार्मसी

3.3 प्रविष्टियों के संशोधन के संबंध में भी, अपीलार्थी का रुख-राजस्व यह रहा है कि अध्याय 30 को फिर से लिखा गया था

ताकि पेटेंट/स्वामित्व और जेनेरिक दवाओं के बीच के अंतर को दूर किया जा सके और उन्हें इस आधार पर वर्गीकृत किया जा सके कि उन्हें खुदरा बिक्री के लिए इकाई पात्रों में रखा गया है या नहीं। इसके अलावा, यह कहा गया है कि 1940 के अधिनियम और विभिन्न फार्माकोपिया के संदर्भ को हटा दिया गया था। तीसरा, यह तर्क दिया गया है कि अध्याय 33 में, सुगंधित बाल तेल और अन्य की सहायक प्रविष्टियों के साथ बाल तेल वाक्यांश प्रमुख हो गया था। यह न्यायालय राजस्व की ओर से इस तरह के प्रयास को केवल पदार्थ से दूर और अलग करने की कवायद के रूप में अस्वीकार कर सकता है। यह इस तथ्य के अलावा है कि शीर्ष 3004 के तहत दवा का विनिर्देशन, किसी भी मामले में, उस उत्पाद को उसी रूप में शामिल करेगा जिस रूप में इसे खुदरा बिक्री के लिए विपणन किया जाता है। [पैरा 32] [352 ई-जी]

3.4 2012 के संशोधन के माध्यम से, भले ही बालों पर उपयोग की तैयारी से संबंधित प्रासंगिक प्रविष्टियां की गई हों

पहले की प्रविष्टियों की तुलना में सूक्ष्म वर्गीकरण के साथ प्रदान किया गया (जैसा कि प्रविष्टियों से देखा जा सकता है, इसका मतलब यह नहीं लिया जा सकता है कि जो कुछ भी बालों पर उपयोग करने के लिए तैयार किया जाता है और जिसका नाम "हेयर ऑयल" होता है, वह दवा के रूप में अपना चरित्र खो देगा यदि अन्यथा इसे तैयार किया गया है।

चिकित्सीय या रोगनिरोधी उपयोग। इसके अलावा, दवाओं में विभिन्न प्रविष्टियों को फिर से लिखने और फिर से समूहबद्ध करने से उत्पाद के चरित्र पर शायद ही कोई प्रभाव पड़ता है। [पैरा 32.1] [352 जी-एच; 353 ए-बी]

3.5 अध्याय 30, दो या दो से अधिक घटकों से युक्त दवाओं से संबंधित शीर्ष 3003 के अलावा, जिन्हें चिकित्सीय या रोगनिरोधी उपयोगों के लिए एक साथ मिलाया गया है।

मापा खुराक में या खुदरा बिक्री के लिए प्रपत्रों में या पैकिंग में, शीर्ष 3004 चिकित्सीय या रोगनिरोधी उपयोग के लिए मिश्रित या गैर-मिश्रित उत्पाद वाली दवाओं से संबंधित है।

मापी गई खुराक में या खुदरा बिक्री के लिए पैकिंग के रूप में। इस प्रकार देखे जाने पर, यह निवेदन स्वीकार किया जाता है कि उत्पाद ए. एच. ए. एच. ओ. अपनी पैकेजिंग के संदर्भ में भी एक होम्योपैथिक दवा बना रहेगा और इसे अध्याय 30 के तहत शामिल किया जाएगा, जहां इसे उप-शीर्षक 3004 90 14 में रखा जा सकता है। इसी तरह, 1940 के अधिनियम या विभिन्न फार्माकोपिया [2023] 6 एस. सी. आर. के संदर्भ को हटाना।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

इसकी व्याख्या इस अर्थ में नहीं की जा सकती है कि विचाराधीन उत्पाद जैसे उत्पाद, जो अन्यथा एक दवा है, को उस आधार के आधार पर वर्गीकृत किया जाना चाहिए जिसके माध्यम से दवा का उपयोग प्रदान किया जा रहा है। [पैरा 32.2] [353-बी-ई]

3.6 संबंधित सिद्धांतों का अनुप्रयोग, उत्पाद

ए. एच. ए. एच. ओ., जुड़वां परीक्षण के माध्यम से साफ हो जाता है। इसलिए, लाए गए संशोधनों के संदर्भ में उत्पाद को फिर से वर्गीकृत करने का कोई प्रयास करने का कोई औचित्य नहीं था।

वर्ष 2012 में अध्याय 30 और 33 के बारे में। [पैरा 33] [353-ई-एफ]

बैक्सन होमियो फार्मसी (पी) लिमिटेड बनाम कलेक्टर

के

द्रीय

आबकारी, नई दिल्ली (2001) 136 ई. एल. टी. 485; अल्पाइन

उद्योग बनाम। केंद्रीय उत्पाद शुल्क कलेक्टर, नई दिल्ली

(2003) 3 एससीसी 111: [2003] 1 एससीआर 313; बी. पी. एल. फार्मास्यूटिकल्स वी. केंद्रीय उत्पाद शुल्क के कलेक्टर,

बडोदरा (1995) 3 पूरक एस. सी. सी. 1: [1995] 3 एससीआर 1235;

केंद्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्त, कलकत्ता बनाम। शर्मा
केमिकल वर्क्स (2003) 5 एस. सी. सी. 60: [2003] 3 एससीआर 1027;

मेघदूत ग्रामोद्योग सेवा संस्थान, यू. पी. बनाम

केंद्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्त, लखनऊ (2005) 4

एस. सी. सी. 15; केंद्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्त, नागपुर बनाम।

419 [2009] 5 एस. सी. आर. 879; केंद्रीय आयुक्त
उत्पाद शुल्क बनाम। वॉकहार्ट लाइफ साइंसेज लिमिटेड (2012) 5 एससीसी

585 - पर भरोसा किया।

केंद्रीय उत्पाद शुल्क कलेक्टर, गुंटूर बनाम। आंध्र चीनी

लिमिटेड वेंकटरायपुरम (1989) 1 पूरक एस. सी. सी. 144: [1988]

3 पूरक। एस. सी. आर. 543; सनी इंडस्ट्रीज (पी) लिमिटेड बनाम। कलेक्टर
केंद्रीय उत्पाद शुल्क, कलकत्ता (2003) 4 एस. सी. सी. 280: [2003]

3 एस. सी. आर. 18; सीमा शुल्क आयुक्त, कलकत्ता बनाम। जी. सी.

जैन और अन्न। (2011) 12 एससीसी 713: [2011] 8 एससीआर 798;

केंद्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्त, नागपुर बनाम। विक्को

प्रयोगशालाएँ (2005) 4 एस. सी. सी. 17; आयुक्त

वाणिज्यिक कर बनाम। मेसर्स अश्विनी होमियो फार्मसी सिविल

2011 की अपील सं. 9494-9495; श्री बैद्यनाथ

आयुर्वेद भवन लिमिटेड v. केंद्रीय उत्पाद शुल्क के कलेक्टर,

नागपुर (1996) 9 एस. सी. सी. 402-संदर्भित।

ग्राहक आयुक्त, केंद्रीय कर और सेवा कर हैदराबाद v. अश्विनी होमियो फार्मसी

मामला कानून संदर्भ

[1988] 3 पूरक। एससीआर 543

संदर्भित किया गया है

पैरा 8.1

[2009] 5 एससीआर 879

संदर्भित किया गया है

पैरा 8.3

[2003] 3 एससीआर 18

संदर्भित किया गया है

पैरा 8.4

[2011] 8 एससीआर 798

संदर्भित किया गया है

पैरा 8.4।

1

(2012) 5 एस. सी. सी. 585

पैरा 9.1

संदर्भित किया गया है

(2005) 4 एससीसी 17

संदर्भित किया गया है

पैरा 9.4

(1996) 9 एस. सी. सी. 402

संदर्भित किया गया है

पैरा 14.1

[1995] 3 एससीआर 1235

उस पर भरोसा करें

पैरा

18.1,23

[2003] 3 एससीआर 1027

उस पर भरोसा करें

पैरा

18.1,25

(2005) 4 एससीसी 15

उस पर भरोसा करें

पैरा

18.1,25

[2003] 1 एससीआर 313

उस पर भरोसा करें

पैरा

18.1,26

सिविल अपीलीय न्यायनिर्णय: सिविल अपील सं।

2018 से।

क्यूस के 31.01.2018 दिनांकित निर्णय और आदेश से

2016 के ई. ए. सं. 30050 में उत्पाद शुल्क और सेवा कर अपीलीय न्यायाधिकरण, सर्किट बेंच हैदरा।

विक्रमजीत बनर्जी, एएसजी, अक्षय अमृतांशु, अभिषेक,

खुराना, प्रशांत रावत, तथागत शर्मा, शिवम सिंघानिया, कुमार श्रीवास्तव, ब्रजेश कुमार, सुधाकर कुलवंत, मुकेश के. मरोरिया, अधिवक्ता। अपीलार्थी के लिए।

वी. वी. एस. राव, वरिष्ठ अधिवक्ता। , डी. भरत कुमार, ताडीमल्ला भा

गौतम, अमन शुक्ला, सिद्धार्थ सिन्हा, गोपाल झा, अधिवक्ता। उत्तरदाता के लिए।

23] 6 एस सी आर।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

न्यायालय का निर्णय इसके द्वारा दिया गया था

दिनेश माहेश्वरी, जे.

सामग्री की तालिका *

प्रारंभिक और संक्षिप्त रूपरेखा।

..... 2

पृष्ठभूमि: कारण-सूचना दिखाएँ और जवाब दें

... 4

सीमा शुल्क और केंद्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्त के समक्ष. 9

सीमा शुल्क, उत्पाद शुल्क और सेवा कर अपीलीय से पहले

..... 18

न्यायाधिकरण।

प्रतिद्वंद्वी प्रस्तुतियाँ।

..... 24

निर्धारण के लिए बिंदु

..... 31

उद्धृत निर्णयों में सिद्धांत

..... 33

सिद्धांतों और दोहरे परीक्षण का अनुप्रयोग।

..... 55

क्या उत्पाद के वर्गीकरण को फिर से देखें
न्यायसंगत है।

..... 72

निष्कर्ष।

... 76

प्रारंभिक और संक्षिप्त रूपरेखा

1. यह अपील सामान्य निर्णय और आदेश के खिलाफ निर्देशित है।

सीमा शुल्क, उत्पाद शुल्क और सेवा कर अपीलीय न्यायाधिकरण 1 द्वारा पारित, जहां तक अपील सं. ई/30050/2016 2, जिसके द्वारा न्यायाधिकरण ने सीमा शुल्क और केंद्रीय आयुक्त द्वारा पारित 16.10.2015 के आदेश को अस्वीकार और उलट दिया है।

एक्साइज, हैदराबाद 3 एचवाईडी में-एक्सकस-004-कॉम-042-15-16।

1.1 . के संबंध में दिनांकित उपरोक्त आदेश 16.10.2015 द्वारा

दिसंबर 2013 से नवंबर 2014 तक की अवधि, न्यायनिर्णायक

प्राधिकरण ने माना कि विचाराधीन उत्पाद, जिसे "अश्विनी होमियो अर्निका हेयर ऑयल" 4 के रूप में जाना जाता है, को टैरिफ के तहत 'दवा' के रूप में वर्गीकृत नहीं किया जा सकता है।

2 2018 की सं. 30121 वाला आदेश।
जाता है। 4 संक्षेप में, 'आहो'।

3 इसके बाद इसे 'न्यायनिर्णायक प्राधिकरण' भी कहा

* एड। ध्यान दें: तालिका में पृष्ठांकन मूल निर्णय के अनुसार है।

ग्राहक आयुक्त, केंद्रीय कर और सेवा कर, हैदराबाद बनाम। अश्विनी होमियो फार्मसी [दिनेश माहेश्वरी, जे.]

मद 3003 90 14 या केंद्रीय उत्पाद शुल्क अधिनियम, 1985-6 की पहली अनुसूची के अध्याय 30 में उल्लिखित किसी भी मद के तहत; और यह कि विचाराधीन उत्पाद, "बाल तेल" होने के कारण, टैरिफ मद 3305 90 19 के तहत 'कॉस्मेटिक' के रूप में वर्गीकृत किया जाना आवश्यक था। तदनुसार, न्यायनिर्णायक प्राधिकरण

केंद्रीय उत्पाद शुल्क अधिनियम, 1944 की धारा 11-ए (10) के संदर्भ में देय अंतर शुल्क के लिए प्रतिवादी पर 266/- रुपये की मांग की पुष्टि की; 1944 के अधिनियम की धारा 11-ए के संदर्भ में उक्त अंतर शुल्क पर ब्याज का भुगतान करने का आदेश दिया; और

उत्पाद शुल्क नियम, 2002। 1.2 . हालाँकि, प्रतिवादी द्वारा की गई अपील को न्यायाधिकरण द्वारा दिनांक 31.01.2018 के अपने विवादित आदेश और उपरोक्त द्वारा अनुमति दी गई थी।

न्यायनिर्णायक प्राधिकरण द्वारा पारित दिनांकित 16.10.2015 आदेश निर्धारित किया गया था

एक तरफ न्यायाधिकरण ने अभिनिर्धारित किया कि विचाराधीन उत्पाद, ए. एच. ए. एच. ओ., 'औषधि' की श्रेणी में आता है और इसलिए, 1985 के अधिनियम की पहली अनुसूची के अध्याय 30 के तहत उचित रूप से वर्गीकृत किया गया था।

1.3 . इस मामले का एक सहायक लेकिन परस्पर जुड़ा हुआ पहलू यह था कि विचाराधीन उत्पाद को वर्ष 1994 से उक्त अध्याय 30 के तहत 'दवा' के रूप में वर्गीकृत किया जा रहा था। प्रत्यर्थी के अनुसार, इस वर्गीकरण को विभाग द्वारा अतीत में नियमित रूप से स्वीकार किया गया था

आयुक्त (अपील) के कम से कम दो क्रमिक आदेशों के साथ और इसलिए, इस मुद्दे की फिर से जांच करने का कोई औचित्य नहीं था। न्यायनिर्णायक प्राधिकरण ने यह विचार व्यक्त किया कि सामग्री के कारण वर्ष 2012 में अध्याय 30 और 33 में शुल्क प्रविष्टियों में संशोधन, उत्पाद के वर्गीकरण के लिए पुनः परीक्षा की आवश्यकता है। हालाँकि, न्यायाधिकरण ने न्यायनिर्णायक प्राधिकरण के इस प्रस्ताव को मंजूरी नहीं दी।

1.4 . अपीलार्थी न्यायाधिकरण द्वारा इस प्रकार पारित आदेश से व्यथित है और इसलिए, इस अपील को इस बात पर जोर देते हुए प्राथमिकता दी है कि -

5 इसके बाद इसे '1985 का अधिनियम' भी कहा जाता है। 6 इसके बाद की चर्चा में, प्रासंगिक अध्याय या प्रासंगिक शुल्क वस्तु का संदर्भ हमेशा '1985 के अधिनियम की पहली अनुसूची' से संबंधित होता है, जब तक कि अन्यथा संकेत न दिया जाए।

7 इसके बाद इसे '1944 का अधिनियम' भी कहा जाता है।

23] 6 एस सी आर।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

यह कहते हुए आक्षेपित आदेश का समर्थन करता है कि उत्पाद विचाराधीन है

अध्याय 30 के संदर्भ में 'औषधि' के रूप में वर्गीकृत किया गया है। 2. उपरोक्त को ध्यान में रखते हुए, इस अपील में प्राथमिक प्रश्न यह है कि क्या विचाराधीन उत्पाद, ए. एच. ए. एच. ओ. को इस रूप में वर्गीकृत किया जाएगा

' अध्याय 30 के तहत 'औषधि' या 1985 के अधिनियम की पहली अनुसूची के अध्याय 33 के तहत 'सौंदर्य प्रसाधन' के रूप में। दूसरा सवाल यह है कि क्या वर्ष 2012 में उक्त अध्याय 30 और 33 में प्रविष्टियों के संशोधन के कारण, प्रश्रुत उत्पाद के वर्गीकरण की पुनः जांच की आवश्यकता थी, भले ही उसे वर्ष 1994 से उक्त अध्याय 30 के तहत 'औषधि' के रूप में वर्गीकृत किया गया था।

2.1 . उपरोक्त प्रश्नों के संदर्भ में, हम संबंधित पृष्ठभूमि पहलुओं और संबंधित पक्षों के रुख पर ध्यान दे सकते हैं।

प्रत्यर्थी को कारण दर्शाओ नोटिस और उसके जवाब के संदर्भ में पक्षकार।

पृष्ठभूमि: कारण-सूचना दिखाएँ और जवाब दें

3. उत्तरदाता, जिसके पास पंजीकरण संख्या है

केंद्रीय उत्पाद शुल्क के तहत ए. डी. एच. पी. बी. 1844. एच. ई. एम. 3003,

मूसापेट (वर्ष 1994 से), महेश्वरम और बाला नगर में अपनी इकाइयों में विचाराधीन उत्पाद ए. एच. ए. एच. ओ. का निर्माण। इसके अलावा, प्रतिवादी ने टैरिफ आइटम 3003 90 14 के तहत उत्पाद को 'दवा' के रूप में वर्गीकृत किया था और तदनुसार रियायती दर पर उत्पाद शुल्क का भुगतान किया था। विचाराधीन उत्पाद के इस वर्गीकरण की अवधि 1994-2004 के दौरान चार बार जांच की गई थी और प्रतिवादी के अनुसार, विभाग द्वारा विधिवत स्वीकार किया गया था।

4. ऐसा प्रतीत होता है कि जब विचाराधीन उत्पाद का वर्गीकरण 'दवा' के रूप में 1994-2004 अवधि के दौरान स्वीकार किया गया था, तब भी यह

वर्गीकरण संदेह में बना रहा और विशेष रूप से वर्ष 2012 में 1985 के अधिनियम में परिवर्तन के बाद, प्रतिवादी को विचार की विभिन्न अवधियों से संबंधित अलग-अलग कारण बताएँ नोटिस दिए गए थे, अनिवार्य रूप से इस प्रभाव के लिए कि विचाराधीन उत्पाद को अध्याय 33, टैरिफ आइटम 3305 09 19 के तहत 'कॉस्मेटिक या शौचालय की तैयारी' के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता था। इस अपील की विषय-वस्तु बनाने वाले 26.12.2014 दिनांकित कारण बताएँ नोटिस में न्यायनिर्णायक प्राधिकरण ने अन्य बातों के साथ-साथ निम्नानुसार कहा है:

" 02. निर्धारिती 'अश्विनी होम्यो अर्निका हेयर ऑयल' के निर्माण में लगे हुए हैं, जिसे उनके द्वारा केंद्रीय उत्पाद शुल्क आयोग, केंद्रीय शुल्क और सेवा कर की पहली अनुसूची की शुल्क वस्तु संख्या 3003 9014 के तहत वर्गीकृत किया गया था।

अश्विनी होमियो फार्मसी [दिनेश माहेश्वरी, जे.]

प्रशुल्क अधिनियम, 1985। हालांकि, केंद्रीय उत्पाद शुल्क अधिनियम, 1985 के अध्याय 33 के अनुसार, बालों पर उपयोग की तैयारी सही है।

अध्याय उपशीर्षक संख्या 33050919 के तहत वर्गीकृत किया जा सकता है और केंद्रीय उत्पाद शुल्क अधिनियम, 1944 की धारा 4 ए के तहत मूल्यांकन के लिए उत्तरदायी होगा। उन्हें 'कॉस्मेटिक या टॉयलेट तैयारी' के रूप में बनाना। तदनुसार, निर्धारिती को निम्नानुसार कारण दर्शाएँ नोटिस जारी किए गए थे।

अवधि

श्री.

ओ. आर. नं.

कर्तव्य

नहीं।

रु. 73,71,267 /

अप्रैल 2012

1

ओ. आर. सं. 21/2013

एडजन (कम्र) सी. ई.

सितंबर '

को

2012

डीटी। 31.1.2013 ओसी नं.

33/2013 (जी. जी. पी./एस-II)

सितम्बर 2012

रु. 1,33,21,827 /

2

ओ. आर. सं. 170/2013

एडजन (कम्र) सी. ई.,

मार्च तक '

डीटी। 6.9.2013 सी. नहीं।

2013

वी/15/14/सी. ई./एडजन/20

13 दीवान। एम)

अप्रैल 2013

रु. 1,73,17,151 /

ओ. आर. No.49/2014

3

एडजन (कम) सी. ई.,

नोवे '

को

डीटी। 14.3.2014 सी. नहीं।

2013

वी/15/02/सी. ई./एडजन/20

14 - सी. ई. (डिवन-एम)

03. वर्तमान कारण दर्शाओ नोटिस अधिनियम की धारा 11 ए (7 ए) के तहत एक बयान है जिसमें बाद की अवधि के लिए शुल्क की मांग को शामिल किया गया है, और आधार वही हैं जो पहले के कारण दिखाओ नोटिस में उल्लिखित हैं। कम भुगतान का विवरण दिसंबर, 2013 से नवंबर, 2014 तक की अवधि के लिए शुल्क निम्नानुसार है: -

(राशि रुपये में)।

ड्यूटी शॉर्ट

आंकलन योग्य मात्रा

कर्तव्य

शुल्क का भुगतान

साफ किया गया (एम. आई.)

@ 6.18 %

किया।

भुगतान

देय

मूल्य

(अ)

12.36 %

2,72,14,

266

1,18,95,973 44,03,60,296 5,44,28,532 2,72,14,266

04. ऐसा प्रतीत होता है कि निर्धारिती ने केंद्रीय उत्पाद शुल्क नियम, 2002 के नियम 4,6,8,10 और 11 के प्रावधानों का उल्लंघन [2023] 6 एस. सी. आर. के रूप में किया है।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

क्योंकि उन्होंने गलत तरीके से 'अश्विनी होमियो अर्निका हेयर ऑयल' को वर्गीकृत किया है और रुपये के शुल्क को कम कर दिया है। 2,72,14,266 / - जो प्रतीत होता है केंद्रीय उत्पाद शुल्क अधिनियम, 1944 की धारा 11 ए के तहत उनसे वसूली योग्य होगी। ऐसा भी प्रतीत होता है कि वे केंद्रीय उत्पाद शुल्क अधिनियम, 1944 की धारा 11 ए के तहत केंद्रीय उत्पाद शुल्क की उक्त राशि पर ब्याज के भुगतान के लिए उत्तरदायी हैं। ऐसा भी प्रतीत होता है कि वे

केंद्रीय उत्पाद शुल्क नियम, 2002 के नियम 25 के तहत गलत वर्गीकरण को अपनाने और इस प्रकार शुल्क के कम भुगतान का सहारा लेने और केंद्रीय उत्पाद शुल्क अधिनियम, 1944 के प्रावधानों और शुल्क के भुगतान से बचने के इरादे से बनाए गए नियमों का उल्लंघन करने के लिए दंडात्मक कार्रवाई के लिए उत्तरदायी हैं।

05. इसलिए अब मेसर्स अश्विनी होमियो फार्मसी, 6-48,49,6-50 अश्विनी होमियो फार्मसी यूनिट, बालानगर हैदराबाद को इस नोटिस की प्राप्ति के तीस (30) दिनों के भीतर सीमा शुल्क और केंद्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्त, हैदराबाद-IV आयुक्तालय, भूतल, पॉसनेट भवन, तिलक रोड, हैदराबाद को कारण बताना आवश्यक है कि क्यों;

i) केंद्रीय उत्पाद शुल्क रु। 2,72,14,266 / (रुपया दो करोड़ बत्तीस लाख चौदह हजार दो सौ छियासठ

केवल), धारा की उप धारा (1) (ए) के साथ पठित धारा 11 ए की उप धारा (7 ए) के तहत उनसे मांग नहीं की जानी चाहिए।

11 केंद्रीय उत्पाद शुल्क अधिनियम, 1944 का ए-से अवधि के लिए

(ii) एस. आई. में उल्लिखित शुल्क की राशि पर ब्याज। एन. (i) ऊपर, लागू दरों पर उनसे मांग नहीं की जानी चाहिए।
केंद्रीय उत्पाद शुल्क अधिनियम 1944 की धारा 11 ए-और

iii) केंद्रीय उत्पाद शुल्क नियम, 2002 की धारा 25 के तहत उन पर केंद्रीय नियमों के उल्लंघन के लिए जुर्माना नहीं लगाया जाना चाहिए।

उत्पाद शुल्क-नियम, 2002 में ऊपर उल्लेख किया गया है।

06. मेसर्स अश्विनी होमियो फार्मसी को आगे उन सभी साक्ष्यों को प्रस्तुत करने की आवश्यकता होती है जिन पर वे कारण बताते समय अपने बचाव के समर्थन में भरोसा करने का इरादा रखते हैं। उन्हें अपने लिखित उत्तर में यह उल्लेख करना आवश्यक है कि क्या वे मामले के निर्णय से पहले व्यक्तिगत रूप से सुनना चाहते हैं। यदि इसके भीतर कोई कारण नहीं दिखाया गया है

निर्धारित अवधि या यदि वे मामले की सुनवाई के लिए रखे जाने पर न्यायनिर्णायक प्राधिकारी के समक्ष उपस्थित नहीं होते हैं, तो मामला होगा -

अभिलेख पर उपलब्ध साक्ष्य के आधार पर योग्यता के आधार पर निर्णय लिया जाता है।

ग्राहक आयुक्त, केंद्रीय कर और सेवा कर, हैदराबाद बनाम। अश्विनी होमियो फार्मसी [दिनेश माहेश्वरी, जे.]

07. विभाग इस मामले के निर्णय से पहले उसे उपलब्ध कराए गए साक्ष्य के आधार पर इस सूचना में संशोधन, संशोधन या पूरक या अतिरिक्त करने का अपना अधिकार सुरक्षित रखता है। यह नोटिस केंद्रीय उत्पाद शुल्क अधिनियम, 1944 के प्रावधानों और उसके तहत बनाए गए नियमों या उस समय के लिए किसी अन्य कानून के तहत शुरू की गई किसी भी अन्य कार्रवाई पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना जारी किया जाता है।

भारत में लागू होना।

08. जारी करने के लिए निर्भरता दिसंबर, 2013 से नवंबर, 2014 की अवधि के दौरान निर्धारिती द्वारा प्रस्तुत ई. आर.-1 विवरणी और पात्रों पर चिपकाए गए लेबल पर आधारित है।

मूल्यांकनकर्ता "।

5. प्रत्यर्थी-निर्धारिती ने अपने दिनांकित 07.04.2015 के जवाब में कहा कि उत्पाद को अध्याय 30 के तहत 'दवा' के रूप में वर्गीकृत किया गया था

दो क्रमिक आयुक्त (अपील) और दो अधीनस्थ अधिकारी 1994-2004 के दौरान; और उक्त आदेश अपीलार्थी द्वारा स्वीकार किए गए थे, जो अंतिम रूप से प्राप्त कर चुके थे। 5.1 . प्रत्यर्थी ने, अन्य बातों के साथ-साथ, निम्नलिखित कारणों को बताया जिनके लिए इसके उत्पाद, ए. एच. ए. एच. ओ. की आवश्यकता थी, और यह उचित था:

'औषधि' के रूप में वर्गीकृत:

(i) कि निर्माण प्रक्रिया उपस्थिति का संकेत देगी

चार होम्योपैथिक दवाओं में से, अर्निका मोंटाना, कैथारिस, इसकी तैयारी में पिलोकार्पिन और सिनकोना, जिसे खोपड़ी पर लगाया जाना है और मौखिक रूप से सेवन नहीं किया जाना है।

(ii) कि इसके लेबल ने दवा और सौंदर्य प्रसाधन नियम, 19458 की अनुसूची के के तहत "होम्योपैथिक मेडिसिन" शब्दों को इंगित किया; कि

उत्पाद बालों की जड़ों में रक्त परिसंचरण की कमी, बाल झड़ना (एलोपेसिया), रूसी, सिरदर्द और नींद की कमी (अनिद्रा) को ठीक/रोकेगा और उक्त बीमारियों से उपचार से बालों में प्राकृतिक रंग के विकास और रखरखाव के मामले में अच्छा स्वास्थ्य मिलेगा।

(iii) यह कि ए. एच. ए. एच. ओ. बाजार की भाषा के संदर्भ में एक दवा थी, जो लगभग 19 वर्षों की अवधि में इसके उपयोग से प्रमाणित होती है।

औषधि नियंत्रक द्वारा जारी विनिर्माण अनुज्ञप्ति और

आयुष निदेशालय; और होम्योपैथिक दवाओं की मेटेरिया मेडिका जैसी आधिकारिक पाठ्य पुस्तकों में उपयोग की जाने वाली दवाओं की सूची से। इस प्रकार, उत्पाद को 'औषधि' के रूप में वर्गीकृत करने के लिए इस न्यायालय द्वारा स्वीकार किए गए दोहरे परीक्षणों को विधिवत रूप से संतुष्ट किया गया।

8 इसके बाद इसे '1945 के नियम' के रूप में भी संदर्भित किया गया।

23] 6 एस सी आर।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

ए. एच. ए. एच. ओ. अपने विज्ञापन, विपणन और लेबल पर दावों के आलोक में एक दवा थी और इसलिए, उक्त परिपत्र ने अपने वर्गीकरण को 'कॉस्मेटिक या शौचालय की तैयारी' में संशोधित करने को उचित नहीं ठहराया। प्रत्यर्थी ने जोर देकर कहा कि इसके शुल्क विवरण, सामग्री, निर्माण और उपयोग की प्रक्रिया में कोई बदलाव नहीं होने के कारण, उत्पाद के पुनः वर्गीकरण का सवाल ही नहीं उठेगा। द. प्रत्यर्थी ने यह भी अनुरोध किया कि कार्यवाही को हटा दिया जाए या तब तक लंबित रखा जाए जब तक कि न्यायाधिकरण उत्पाद के वर्गीकरण से संबंधित लंबित मुद्दों पर निर्णय नहीं ले लेता।

5.4 . प्रत्यर्थी ने अपने इस दावे का समर्थन करने के लिए कि ए. एच. ए. एच. ओ. एक दवा है, बक्सन में न्यायाधिकरण के एक निर्णय पर भरोसा किया। होमियो फार्मसी (पी) लिमिटेड बनाम केंद्रीय उत्पाद शुल्क, नई दिल्ली के कलेक्टर: (2001) 136 ई. एल. टी. 485, जिसमें "सनी अर्निका हेयर ऑयल" नामक एक समान उत्पाद को एक दवा माना गया था।

सीमा शुल्क और केंद्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्त के समक्ष

6. न्यायनिर्णायक प्राधिकरण ने अपने निर्णय के लिए दो मुद्दे निम्नानुसार तैयार किए: -

" (i) क्या नोटिस ने कानून की तय स्थिति को बाधित किया है।

वर्गीकरण विषय को फिर से सक्रिय करके, और यदि नहीं

((ii) क्या विवादित उत्पाद है। अहाहो के गुण

अध्याय उप-शीर्षक के तहत एक दवा के रूप में वर्गीकरण 30039014 या अध्याय उप-शीर्षक 33059019 के तहत बाल तेल के रूप में।

6.1 . पहले अंक में, न्यायनिर्णायक प्राधिकरण द्वारा यह देखा गया कि नोटिस किसी भी दिए गए निर्णय के कारण जारी नहीं किए गए थे, लेकिन

उन निर्णयों का उल्लेख यह इंगित करने के लिए किया गया था कि वर्गीकरण में संशोधन की आवश्यकता होगी।

यह भी देखा गया कि परिवर्तनों में उपभोक्ता आयोग, केंद्रीय कर और सेवा कर, 5 शामिल हैं। अश्विनी होमियो फार्मसी [दिनेश माहेश्वरी, जे.] वर्ष 2012 से 1985 के अधिनियम ने इस दृष्टिकोण को मजबूत किया कि एकीकरण पर पुनर्विचार की आवश्यकता है। न्यायनिर्णायक प्राधिकरण

पुरानी शुल्क प्रविष्टियों और नई शुल्क प्रविष्टियों को पुनः प्रस्तुत करने के लिए तैयार किया गया

- अध्याय 30 और 33 निम्नानुसार हैं: -

अध्याय 30: 30.03 दवाएं (पशु चिकित्सा दवाओं सहित)।

3003.10 - उन दवाओं के अलावा पेटेंट या स्वामित्व वाली दवाएं जो विशेष रूप से आयुर्वेदिक यूनानी, सिद्ध,

होम्योपैथिक या जैव-रासायनिक

3003.20 - अन्य दवाएं (पेटेंट या स्वामित्व के अलावा)

जो विशेष रूप से आयुर्वेदिक, यूनानी, सिद्ध हैं,

होम्योपैथिक या जैव रासायनिक प्रणालियाँ:

3003.31 - औषधि और प्रसाधन सामग्री अधिनियम, 1940 (1940 का 23) या होम्योपैथिक फार्माकोपिया ऑफ इंडिया या संयुक्त राज्य अमेरिका में निर्दिष्ट आधिकारिक पुस्तकों में वर्णित सूत्रों के अनुसार विशेष रूप से निर्मित

3003.32 - उपयोग की जाने वाली दवाएं (पशु चिकित्सा दवाओं सहित) जैव-रासायनिक प्रणाली में और कोई ब्रांड नाम नहीं

3003.39 - अन्य अध्याय 33:

बालों पर उपयोग के लिए तैयारी

33.05

सुगंधित बालों का तेल

3305.10

अन्य

3305.91 -

हेयर फिक्सर

3305.99

अन्य

वर्तमान शुल्क प्रमुख (केंद्रीय उत्पाद शुल्क, 2012 के अनुसार); [2023] 6 एस. सी. आर.

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

मापने या फॉर्म या पैकिंग में खुदरा बिक्री के लिए

3003 90 -- अन्य:

आयुर्वेदिक, यूनानी, सिद्ध, होम्योपैथिक या बायोकेमी

प्रणालीगत दवाएँ: 3003 90 14 ---- होम्योपैथिक प्रणाली

3305 बालों पर उपयोग के लिए तैयारी 3305 10- शैम्पू:

3305 10 10 --- आत्मा युक्त

3305 10 90

अन्य

3305 20 00 - स्थायी रूप से लहराने या सीधा करने की तैयारी

3305 30 00 - हेयर लैक्सर्स

3305 90 - अन्य:

- बालों का तेल:

3305 90 11- - - सुगंधित 3305 90 19 -

- अन्य

3305 90 20 --- त्रिलियंटाइन्स (आध्यात्मिक)

3305 90 30

हेयर क्रीम

3305 90 40 -

हेयर डार्ई (प्राकृतिक, हर्बल या सिंथेटिक)

3305 90 50 - - हेयर फिक्सर 3305 90 90 - - - अन्य "

6.2 . इस मोड़ पर, हम 30 के बाद कुछ अन्य सामग्री पर भी ध्यान दे सकते हैं, जिसका शीर्षक 'फार्मास्युटिकल प्रोडक्ट्स' है।

6.2. 1 . अध्याय 30 का टिप्पणी 1 उन वस्तुओं को निर्दिष्ट करता है जो इसके अंतर्गत नहीं आती हैं। इस टिप्पणी 1 के खंड (ई) को निर्णय प्राधिकरण द्वारा संदर्भित किया गया है, जो निम्नानुसार है:

- ग्राहक आयोग, केंद्रीय कर और सेवा कर, V. अश्विनी होमियो फार्मसी [दिनेश माहेश्वरी, जे.]

" टिप्पणियाँ:

1. इस अध्याय में निम्नलिखित शामिल नहीं हैं:

(ई) 3303 से 3307 तक के शीर्षकों की तैयारी, भले ही उनमें चिकित्सीय या रोगनिरोधी गुण हों;

6.2. 2 . इस अध्याय 30 में, शीर्ष 3003 के अलावा, शीर्ष 3004 के तहत दवाओं को भी निर्दिष्ट किया गया है, जिसकी प्रासंगिक सामग्री नीचे दी गई है: -

" 3004 चिकित्सीय या रोगनिरोधी उपयोग के लिए मिश्रित या मिश्रित उत्पादों से युक्त दवाएं (3002,3005 या 3006 शीर्षक के सामान को छोड़कर), मापी गई खुराक में (ट्रांसडर्मल प्रशासन प्रणालियों के रूप में उन सहित) या रूपों में या

खुदरा बिक्री के लिए पैकेजिंग

3004 90 -- अन्य:

आयुर्वेदिक, यूनानी, होम्योपैथिक, सिद्ध या जैव-रसायन

खुदरा बिक्री के लिए रखी गई प्रणालियाँ दवाएँ:

3004 90 14 ---- होम्योपैथिक प्रणाली "

6.3 . न्यायनिर्णायक प्राधिकरण द्वारा किए गए विश्लेषण की ओर लौटते हुए, यह कहा गया है कि न्यायनिर्णायक प्राधिकरण ने अनुच्छेद 30 और 33 में किए गए परिवर्तनों का उल्लेख किया और यह अभिनिर्धारित किया कि नोटिस प्रभावित नहीं हुआ था

निम्नलिखित रूप में देखते हुए कोई भी अपूर्णता: -

पेटेंट/स्वामित्व और जेनेरिक दवाओं के बीच के अंतर को हटा दें और उन्हें इस आधार पर वर्गीकृत करें कि उन्हें खुदरा बिक्री के लिए इकाई पात्रों में रखा गया है या नहीं। दूसरा, ड्रग्स एंड कॉस्मेटिक्स एक्ट और विभिन्न फार्माकोपिया के बारे में उल्लेख को हटा दिया गया। इसी तरह, अध्याय 33 के तहत भी, हेयर ऑयल वाक्यांश प्रमुख हो गया, जिसके तहत, सहायक शीर्षक " सुगंधित बालों का तेल "और" अन्य "निर्दिष्ट किया गया। ये सभी परिवर्तन निश्चित रूप से उस उत्पाद की तुलना में नई प्रविष्टियों की व्याख्या के योग्य हैं, जो पहले तय या तय किया गया था।

23] 6 एस सी आर।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

इस प्रकार, विट्को लैबोरेटरीज के अनुपात को लागू करके भी

मान लीजिए, शुल्क की एक अलग व्याख्या से उत्पाद के वर्गीकरण में परिवर्तन हो सकता है, भले ही उत्पाद के घटकों और उपयोग में कोई बदलाव नहीं हुआ हो। दूसरा, नोटिसों में दिए गए अतिरिक्त साक्ष्य निश्चित रूप से योग्य हैं

विचार करें। तदनुसार, मेरा मानना है कि आक्षेपित सूचना उक्त निर्णय के कारण किसी भी अपूर्णता से ग्रस्त नहीं है। इसलिए पहले प्रश्न का उत्तर नकारात्मक में दिया जाता है।

6.4 . न्यायनिर्णायक प्राधिकरण ने यह भी कहा कि विवादित नोटिस सामान्य अवधि में जारी किया गया था और यह ऐसा मामला नहीं था जिसमें मुद्दे को उस अवधि के लिए फिर से खोलने की मांग की गई थी जिसके लिए इसे निपटाया गया था। हालांकि, विद्वान न्यायनिर्णायक प्राधिकरण के अनुसार, ऐसे उत्पादों के वर्गीकरण के मामले में मानदंड और विचारधारा चरित्र में गतिशील थी और इसलिए, नए तथ्यों के सामने आने के कारण वर्गीकरण में संशोधन को अनुचित नहीं माना जा सकता था।

6.5 . जहाँ तक दूसरे मुद्दे का संबंध है, न्यायनिर्णायक प्राधिकरण ने पहले स्थान पर कहा कि उत्पाद का वर्गीकरण निम्नानुसार है -

टैरिफ आइटम 3003 90 14 अपने आप में संदिग्ध था क्योंकि उस वस्तु में केवल दवाएं शामिल थीं जिन्हें मापी गई खुराक या पैकिंग में नहीं रखा गया था, जबकि ए. एच. ए. एच. ओ. को निर्विवाद रूप से खुदरा बिक्री के लिए 50 मिली, 100 मिली, 200 मिली और 400 मिली बोतलों की पैकिंग में बिक्री के लिए रखा गया था। न्यायनिर्णायक प्राधिकरण ने पाया कि कथित शीर्षक के तहत उत्पाद को वर्गीकृत करने के लिए प्रतिवादी का दावा निराधार रहा। हालांकि, न्यायनिर्णायक प्राधिकरण ने यह अवलोकन करने के लिए आगे बढ़े कि टैरिफ आइटम 3004 90

14 मापा खुराक और पैकेजिंग में रखे गए समान सामान को शामिल किया गया था और इसलिए, इस मामले पर टैरिफ आइटम 3305 90 19 के साथ विचार करने की आवश्यकता थी। इसके बाद, न्यायनिर्णायक प्राधिकरण ने बताया कि 'दवा' के रूप में वर्गीकरण के लिए मुख्य पूर्व शर्त यह थी कि उत्पाद 'चिकित्सीय' या 'रोगनिरोधी' उपयोग के लिए होना चाहिए; और शब्दकोश के अर्थ के संदर्भ में, यह देखा गया कि 'चिकित्सीय' या 'रोगनिरोधी' उपयोग वाली दवा का अर्थ यह होगा कि यह उपचार के लिए या किसी बीमारी को रोकने के लिए थी। न्यायनिर्णायक प्राधिकरण ने केंद्रीय उत्पाद शुल्क और सीमा शुल्क बोर्ड द्वारा जारी परिपत्र संख्या 333/49/97-सीएक्स दिनांक 10.09.1997 का भी उल्लेख किया, जिसमें 1985 के अधिनियम के तहत उत्पादों के वर्गीकरण के लिए कुछ मानदंड निर्धारित किए गए हैं, जिनका निर्माताओं द्वारा आयुर्वेदिक दवाओं के रूप में दावा किया जाता है, जबकि विभाग द्वारा सौंदर्य प्रसाधन के रूप में दावा किया जाता है। बोर्ड ने इस परिपत्र को पिछले सभी परिपत्रों की तुलना में अधिक प्रभावी बना दिया है

9 इसके बाद इसे 'बोर्ड' भी कहा जाता है।

ग्राहक आयुक्त, केंद्रीय कर और सेवा कर, हैदराबाद बनाम। अश्विनी होमियो फार्मसी [दिनेश माहेश्वरी, जे.]

परिपत्र/निर्देश जब तक कि न्यायालयों/न्यायाधिकरण द्वारा अन्यथा निर्दिष्ट न किए जाएं। न्यायनिर्णायक प्राधिकरण ने द्वारा निर्धारित आधार का संदर्भ दिया उत्पाद के वर्गीकरण को निम्नलिखित शब्दों में दवा के रूप में तय करने के लिए बोर्ड: -

" - क्या उत्पाद में पर्याप्त चिकित्सीय या रोगनिरोधी गुण हैं और क्या इसे किसी बीमारी के इलाज के लिए एक चिकित्सा व्यवसायी द्वारा दवा के रूप में निर्धारित किया गया है और सीमित अवधि के लिए निर्धारित किया गया है।

- उत्पाद को लोकप्रिय अर्थ में कैसे समझा जाता है अर्थात्, इसका विज्ञापन कैसे किया जाता है और इसे आम तौर पर इसे बेचने या उपयोग करने वाले लोग कैसे समझते हैं; - दवा लाइसेंस केवल एक मार्गदर्शक कारक है और निर्णायक नहीं है क्योंकि अध्याय 33 के तहत अध्याय नोट के संदर्भ में, उप-शीर्षकों 3303 से 3307 के तहत आने वाले सामान इन शीर्षकों के तहत वर्गीकरण के योग्य होंगे, चाहे सहायक चिकित्सीय गुण कुछ भी हों।

उत्पाद "।

6.6 . न्यायनिर्णायक प्राधिकरण का विचार था कि ए. एच. ए. एच. ओ.

बोर्ड द्वारा निर्दिष्ट पहले मानदंड के रूप में अर्हता प्राप्त नहीं की, हालांकि सामान्य दुकानों में ए. एच. ए. एच. ओ. की उपलब्धता एकमात्र मानदंड नहीं हो सकती है, लेकिन यह सामान्य ज्ञान था कि ए. एच. ए. एच. ओ. खरीदने के लिए होमियो स्टोर या होमियो फिजिशियन के पास जाने की आवश्यकता नहीं थी; इसमें लेबल की सामग्री पर ड्रग्स एंड कॉस्मेटिक्स एक्ट, 1940 के तहत निर्धारित अनिवार्य शर्तें शामिल नहीं थीं; इसकी खुराक और उपयोग की अवधि से संबंधित कोई विनिर्देश नहीं थे और कोई विपरीत संकेत नहीं थे, चाहे उपयोग की मात्रा या अवधि कुछ भी हो, जो एक दवा की मूल अवधारणा के खिलाफ था जिसकी अधिक मात्रा के परिणामस्वरूप दस्त, अम्लता, अल्सर, चकत्ते आदि जैसे विपरीत संकेत थे। ; और यह खालित्य या अनिद्रा जैसी किसी विशेष बीमारी को ठीक करने का दावा नहीं करता था, बल्कि केवल दावा करता था

ऐसी बीमारियों को रोकने और नियंत्रित करने में सक्षम होना। 6.7 . विचाराधीन उत्पाद की सामग्री और उसके गुणों के संबंध में विद्वान न्यायनिर्णायक प्राधिकरण का विश्लेषण, जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि इसे दवा के रूप में वर्गीकृत नहीं किया जा सकता है, जिसे नीचे पढ़ा जा सकता है: -

" 11.6 मैंने उत्पाद के लेबलों को देखा है जो रिकॉर्ड में हैं।

सामग्री को लेबल पर निम्नानुसार घोषित किया गया है:

10 इसके बाद इसे '1940 का अधिनियम' भी कहा जाता है।

सी आरा।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

i) अर्निका मोंट क्यू. 0.5 मिली.

iii) सिनकोना क्यू. 0.20 मिली.

iv) प्योकार्पिन क्यू. 0.20 मिली.

उपयोग किया जाना चाहिए, जो एक दवा के लिए मानक है। एक दवा या दवा के मामले में, हम निश्चित रूप से उपयोग की जाने वाली खुराक की निर्धारित मात्रा के संबंध में एक निर्देश पाते हैं और इसके अलावा एक निर्देश जो "या चिकित्सक द्वारा निर्देशित" होता है। ये विनिर्देश इस मामले में उत्पाद लेबल पर नहीं पाए जाते हैं। तीसरा, यह दावा नहीं करता है कि यह एलोपेसिया (बालों का झड़ना) जैसी किसी विशेष बीमारी को ठीक कर सकता है। एलोपेसिया जैसी चिकित्सीय स्थितियाँ वास्तव में न केवल सिर पर बल्कि शरीर पर कहीं भी गंजापन के धब्बों के साथ अचानक होती हैं। इसी तरह नींद की कमी यानी अनिद्रा एक चिकित्सा स्थिति है जिसके परिणामस्वरूप नींद न आने की समस्या उत्पन्न होती है। तनाव और अन्य तंत्रिका संबंधी विकार। लेबल पर एलोपेसिया या अनिद्रा का उल्लेख न होना इंगित करता है कि उत्पाद किसी भी महत्वपूर्ण उपचारात्मक उद्देश्य के लिए नहीं है। इसके अलावा, ए. एच. ए. एच. ओ. द्वारा जिस तरह की रोकथाम या नियंत्रण का दावा किया गया है, वह रोगों और विचाराधीन उत्पाद के बीच एक स्पष्ट गैर-संबंध का संकेत देता है। इसके अलावा, यह उल्लेख करते हुए कि कोई विपरीत संकेत नहीं हैं, इसका तात्पर्य है कि उपयोग की मात्रा या अवधि के बावजूद, ग्राहकों, केंद्रीय कर और सेवा कर का कोई आयुक्त नहीं है।

अश्विनी होमियो फार्मसी [दिनेश माहेश्वरी, जे.]

खोपड़ी या त्वचा पर प्रतिकूल प्रभाव, जो मूल के खिलाफ है निर्धारित या सीमित अवधि के लिए उपयोग की जाती है

एक दवा की अवधारणा, जो

एक दवा की अवधि और अधिक मात्रा के परिणामस्वरूप डायरिया, अम्लता, अल्सरेशन, चकते आदि जैसे विपरीत संकेतों के लिए जाना जाता है। यहां तक कि चिकित्सकीय रूप से निर्धारित त्वचा क्रीम या मलम का भी सीमित उपयोग होता है

एक चिकित्सा व्यवसायी की निर्धारित दवा और न ही इसमें कोई पर्याप्त चिकित्सीय या रोगनिरोधी गुण होने का दावा किया जाता है। मुझे यह भी पता चला है कि लेबलों के संबंध में, माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने ईशान लैबोरेटरीज (उपरोक्त) के मामले में कहा कि "आगे यह उत्पादों के लेबलों से स्पष्ट था जिनका हमने स्वयं अदालत में निरीक्षण किया है कि उत्पाद के औषधीय गुणों के प्रत्येक लेबल में दावा किया गया है। यह भी पाया गया है कि एक विशिष्ट दावा था कि यह एक कॉस्मेटिक उत्पाद नहीं है। हालांकि उस मामले में, उत्पादों को दवा माना गया था, लेबल विवरण जिसके आधार पर ऐसा निष्कर्ष निकाला गया था (अन्य कारकों के अलावा) इंगित करता है कि उत्पाद को इस तरह से पेश और विपणन किया जाना चाहिए ताकि व्यक्त किया जा सके निर्माता का इरादा है कि उत्पाद एक दवा है न कि कॉस्मेटिक। वर्तमान में ऐसी कोई स्थिति नहीं है।

चूंकि लेबल में न तो सकारात्मक संकेत होता है कि यह एक दवा है और न ही एक नकारात्मक संकेत है कि यह एक सौंदर्य प्रसाधन नहीं है। हालांकि, इसे निश्चित रूप से बाल तेल के रूप में लेबल किया गया है, प्रमुखता से। यदि इरादा उत्पाद की पहचान करना है

दवाई, इसे हेयर ऑयल लेबल करने की कोई आवश्यकता नहीं थी। इसलिए उक्त मामले में निष्कर्ष के बाद, मैं यह मानने के लिए इच्छुक हूं कि ए. एच. ए. एच. ओ. को एक दवा के रूप में वर्गीकृत नहीं किया जा सकता है, लेकिन इसे बाल तेल के रूप में वर्गीकृत किया जाना चाहिए। तदनुसार, ए. एच. ए. एच. ओ. उक्त परिपत्र के तहत निर्धारित पहले मानदंडों में फिट नहीं बैठता है।

6.8 . जहां तक सामान्य बोलचाल के मानदंडों का संबंध है, यानी जिस तरह से आई. सी. टी. का विपणन किया गया था, यह देखा गया कि ए. एच. ए. एच. ओ. मेडिकल और जनरल स्टोरों में सुलभ था और इसे काउंटर पर खरीदा जा सकता था। आवरण, लेबल पर लंबे, काले बहते बालों वाली एक महिला का चित्रण इसका वर्गीकरण कॉस्मेटिक के रूप में किया गया न कि एक दवा के रूप में। डिक्टिंग अथॉरिटी ने यह भी देखा कि 'बालों का विकास [2023] 6 एस. सी. आर. है।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

तत्काल ध्यान या उपचार की आवश्यकता वाली बीमारी के बजाय एक कॉस्मेटिक आवश्यकता; और यह माना कि विचाराधीन उत्पाद सामान्य बोलचाल के दूसरे मानदंड पर भी विफल रहा।

6.9 . न्यायनिर्णायक प्राधिकरण ने यह भी पाया कि संबंधित अधिकारियों द्वारा जारी किए गए दवा लाइसेंस, अपने आप में ए. एच. ए. एच. ओ. को एक दवा नहीं बनाते हैं। होम्योपैथिक दवाई की तैयारी, जिससे तीसरा मानदंड विफल हो जाता है

यह देखा गया कि होम्योपैथी के साथ उक्त घटक का कोई संबंध नहीं था। 6.10 . 1985 के अधिनियम की पहली अनुसूची में संबंधित अध्यायों/शुल्क वस्तुओं से संलग्न टिप्पणियों के संबंध में व्याख्या के सामान्य नियमों के महत्व का उल्लेख करते हुए, न्यायनिर्णायक

प्राधिकरण ने पाया कि नोट 1 (ई) से अध्याय 30 के अनुसार, उक्त अध्याय में अध्याय 3303 से 3307 के शीर्षकों की तैयारी को शामिल नहीं किया गया है, भले ही उनमें चिकित्सीय या रोगनिरोधी गुण हों।

6.11 . न्यायनिर्णायक प्राधिकरण ने बोर्ड को भी संदर्भित किया

परिपत्र संख्या 890/10/2009-सीएक्स दिनांक 03.06.2009, अपने रुख को स्पष्ट करते हुए कि 200 मिलीलीटर तक के कंटेनरों में पैक किए गए नारियल तेल को जनता के सामान्य दृष्टिकोण के कारण "बाल तेल" के रूप में वर्गीकृत किया जाना था; और देखा कि 50 मिली, 100 मिली और 200 मिली की बोतलों में पैक किए गए ए. एच. ए. एच. ओ. को "हेयर ऑयल" माना जाना था और 400 मिली पैक इस वर्गीकरण को पार नहीं कर सकता था, केवल इसलिए कि यह तेज गति से नहीं चल रहा था। 6.12 . इसलिए, न्यायनिर्णायक प्राधिकरण का विचार था कि विचाराधीन उत्पाद को टैरिफ आइटम 3003 90 14 के तहत वर्गीकृत नहीं किया जा सकता है।

या अध्याय 30 में वर्णित किसी मद के अधीन। न्यायनिर्णायक प्राधिकरण ने आगे कहा कि जब कानून निर्माताओं का इरादा था

एक विशेष दर पर "बाल तेल" पर कर लगाने से बचने के किसी भी प्रयास के परिणामस्वरूप कानून की अवहेलना होगी। तदनुसार, न्यायनिर्णायक प्राधिकरण ने अपने दिनांक 1 के आदेश द्वारा मांग की पुष्टि की और प्रतिवादी पर ब्याज और जुर्माना लगाया, जैसा कि पहले देखा गया था।

6.13 . विद्वत न्यायनिर्णायक प्राधिकारी के प्रति पूरी निष्पक्षता से यह देखा जा सकता है कि उनके विस्तृत आदेश दिनांक 16.10.2015 (पीपी। 96-253 में से

पेपर-बुक), बड़ी संख्या में निर्णयों के कई अंश भी पुनः प्रस्तुत किए गए हैं, जिनका हमने ऊपर संकेत नहीं दिया है। उन निर्णयों की प्रासंगिकता, जैसा कि पक्षों की ओर से उद्धृत किया गया है, को इसके बाद प्रासंगिक स्तर पर संदर्भित और जांचा जाएगा।

ग्राहक आयुक्त, केंद्रीय कर और सेवा कर, हैदराबाद बनाम। अश्विनी होमियो फार्मसी [दिनेश माहेश्वरी, जे.]

सीमा शुल्क, उत्पाद शुल्क और सेवा कर अपीलीय से पहले

न्यायाधिकरण

7. दिनांकित उपरोक्त आदेश के विरुद्ध निर्धारित की अपील 1 1

नारियल तेल आधार में होम्योपैथिक दवाएं अन्य बीमारियों के बीच खालित्य (बालों का झड़ना) और अनिद्रा (नींद की कमी) के इलाज के लिए चिकित्सीय उपयोग के साथ; कि उत्पाद का निर्माण निदेशक, भारतीय चिकित्सा और होम्योपैथी द्वारा जारी दवा लाइसेंस के तहत किया जा रहा था, बाद में अतिरिक्त निदेशक और औषधि नियंत्रक (होमियो), आयुष विभाग, तेलंगाना सरकार द्वारा एक दवा के रूप में नवीनीकरण किया गया; कि ए. एच. ए. एच. ओ. का उल्लेख क्रम संख्या में किया गया था। 1945 के नियमों की अनुसूची के की 35, जिसमें केवल दवाएं शामिल हैं; कि लेबल स्पष्ट रूप से सामग्री को सूचीबद्ध करता है।

और संरचना, संकेत और विरोध-संकेत के साथ-साथ उपयोग का तरीका भी; कि उत्पाद को आम तौर पर इसके उपयोगकर्ताओं के साथ-साथ विक्रेताओं द्वारा होम्योपैथिक दवा के रूप में समझा जाता था; कि इस मुद्दे का स्पष्ट रूप से बैकसन होम्यो फार्मसी (ऊपर) में निर्णय लिया गया था; और यह कि ऐसा कोई परिवर्तन नहीं था, चाहे वह 1985 के अधिनियम में हो या उत्पाद के अवयवों या निर्माण प्रक्रिया में, जो इसके उपयोग के तरीके में संशोधन की गारंटी देगा।

वर्गीकरण। दूसरी ओर, विभाग ने अपील के विरोध में न्यायिक प्राधिकरण के निष्कर्षों को दोहराया।

7.2 . न्यायाधिकरण ने पारित आदेश के सार को संक्षेप में प्रस्तुत किया

न्यायनिर्णायक प्राधिकरण द्वारा निम्नानुसार: -

“ 6. हम पाते हैं कि न्यायनिर्णायक प्राधिकारी ने मुख्य रूप से इस आधार पर मांग की पुष्टि की है कि चूंकि ए. एच. ए. एच. ओ. किसी भी बीमारी के इलाज के उद्देश्य से एक चिकित्सा व्यवसायी द्वारा निर्धारित नहीं है और यह चिकित्सा दुकानों के साथ-साथ सामान्य दुकानों में भी उपलब्ध है और इसका उपयोग करने के इच्छुक कोई भी व्यक्ति काउंटर पर खरीद सकता है, इसलिए यह होम्योपैथिक दवा नहीं है। उन्होंने यह भी कहा कि लेबल चिकित्सा व्यवसायी के पर्चे के तहत अधिकृत चिकित्सा वितरक या खुदरा विक्रेता द्वारा बिक्री की शर्त का संकेत नहीं देता है, भले ही यह औषधि और प्रसाधन अधिनियम, 1940 की धारा 97 (1) के तहत अनिवार्य आवश्यकता है। यह भी शामिल नहीं है

11 अपील नं. ई/30050/2016।

23] 6 एस सी आर।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

उपयोग की जाने वाली खुराक या चिकित्सक द्वारा निर्देशित खुराक। कि इसमें ऐसा कुछ नहीं है जो एलोपैथिया (बालों का झड़ना) या अनिद्रा (नींद की कमी) जैसी किसी विशेष बीमारी का इलाज कर सके। इसके अलावा उन्होंने यह भी माना कि अपीलीय प्राधिकरण द्वारा पारित पिछले आदेश 2012 से पहले और उसके बाद शुल्क प्रविष्टि के आधार पर थे।

प्रविष्टियों की अवधि बदल गई है इसलिए इसे फिर से देखने की आवश्यकता है।

7.3 . मामले के पृष्ठभूमि पहलुओं, न्यायनिर्णायक प्राधिकरण के निष्कर्षों और द्वारा उद्धृत विभिन्न निर्णयों पर ध्यान देने के बाद अपनी-अपनी दलीलों के समर्थन में पक्षकारों को न्यायाधिकरण ने ऐसा कोई कारण नहीं पाया जिसके लिए न्यायनिर्णायक प्राधिकरण द्वारा उत्पाद के वर्गीकरण को बदलने की मांग की गई हो।

7.4 . अपने विश्लेषण के दौरान, न्यायाधिकरण ने अन्य बातों के साथ-साथ यह मत व्यक्त किया और कहा कि केवल काउंटर पर बेचे जाने के कारण और नहीं

दवा और उसी को इसके उपयोगकर्ताओं और व्यापारियों द्वारा इस तरह से समझा गया था; और यह कि विचाराधीन उत्पाद वास्तव में सामान्य बोलचाल परीक्षण में उत्तीर्ण हुआ। न्यायाधिकरण ने आगे चार होम्योपैथिक दवाओं को उत्पादों की सामग्री के रूप में संदर्भित किया और उन्हें 1945 के नियमों की अनुसूची के की क्रम संख्या 35 द्वारा कवर किया जा रहा है, जो केवल दवाओं से संबंधित है न कि सौंदर्य प्रसाधनों से। न्यायाधिकरण ने आगे कहा कि न्यायनिर्णायक प्राधिकरण एक समान दृष्टिकोण नहीं अपना रहा था और इस तथ्य का उल्लेख किया कि प्रतिवादी को अतीत में भी कारण दर्शाएँ नोटिस जारी किए गए थे और न्यायनिर्णायक प्राधिकरण ने सामान्य बोलचाल परीक्षण के साथ-साथ उत्पाद की सामग्री और उपयोग की जांच करने पर ए. एच. ए. एच. ओ. को होम्योपैथिक दवा के रूप में स्वीकार किया था। न्यायाधिकरण ने कहा कि उत्पाद वही बना रहा और इसका वर्गीकरण जैसा कि पहले स्वीकार किया गया था, वैसा नहीं था बदलने की आवश्यकता है। न्यायाधिकरण ने यह भी कहा कि एक ओर, न्यायनिर्णायक प्राधिकरण ने उल्लेख किया कि इससे पहले किया गया वर्गीकरण

संशोधन पर फिर से विचार किया जाना था लेकिन दूसरी ओर, बोर्ड द्वारा 1997 में जारी परिपत्र के साथ 2012 से पहले के निर्णयों पर निर्भर था।

7.5 . इस प्रकार, कुल मिलाकर, न्यायाधिकरण को विभाग द्वारा अब जिस वर्गीकरण को अपनाने की मांग की गई है, उसका कोई कारण नहीं मिला; और ग्राहक, केंद्रीय कर और सेवा कर आयोग, V.

अश्विनी होमियो फार्मसी [दिनेश माहेश्वरी, जे.]न्यायनिर्णायक प्राधिकरण द्वारा इस प्रकार पारित आदेश को अस्वीकार करने के लिए। उदाहरण के लिए, हम निष्कर्षों के प्रासंगिक भागों को पुनः प्रस्तुत कर सकते हैं।

न्यायाधिकरण इस प्रकार है: -

“ 9. माननीय सर्वोच्च न्यायालय और न्यायाधिकरण के उपरोक्त निर्णयों में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि भले ही माल काउंटर पर बेचा जाता है और चिकित्सा पर्चे पर नहीं, लेकिन इससे माल दवा की श्रेणी से बाहर नहीं होगा। न्यायनिर्णायक प्राधिकारी ने अभिनिर्धारित किया है कि चूंकि बालों का विकास होता है

कॉस्मेटिक आवश्यकता और उत्पाद का लेबल लंबे बालों वाली महिला को दिखाता है कि सामान कॉस्मेटिक उत्पाद हैं। हम न्यायनिर्णायक प्राधिकारी के उपरोक्त विचारों से सहमत नहीं हैं। सबसे पहले कब

चिकित्सा की विभिन्न शाखाएँ और लाइसेंस देने वाले अधिकारी गंजापन या बाल झड़ने को बीमारी के रूप में पहचानते हैं, उस मामले में न्यायनिर्णायक प्राधिकरण एक अलग दृष्टिकोण नहीं ले सकता है जो नहीं है

बालों का झड़ना, अनिद्रा, रूसी, सिरदर्द और अन्य बीमारियाँ। यह दवा और प्रसाधन नियम 1945 के नियम 25 सी के तहत जारी दवा लाइसेंस के तहत और निदेशक, भारतीय चिकित्सा और होम्योपैथी द्वारा नियम 85 डी के संदर्भ में निर्मित किया जाता है। आयुष विभाग, भारत सरकार के अतिरिक्त निदेशक और औषधि नियंत्रक (होम्यो) द्वारा समय-समय पर लाइसेंस का नवीनीकरण किया गया है। तेलंगाना राज्य। यहां तक कि विश्लेषण रिपोर्ट और औषधि नियंत्रक, आयुष विभाग के अनुसार उत्पाद दवा है। उत्पाद क्रम संख्या द्वारा कवर किया गया है। 35 औषधि आ सौन्दर्य प्रसाधन नियमक अनुसूची के (होम्योपैथिक केश तेलमे 3 गुना क्षमता धरि सक्रिय तत्व होयत छैक) आ उक्त अनुसूचीमे मात्र ओषध शामिल छैक, प्रसाधन सामग्री नहि। उत्पाद को पहले से ही [2023] 6 एस. सी. आर. द्वारा दवा माना जा चुका है।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

एपीजीएसटी के साथ-साथ वाणिज्यिक करों के संदर्भ में माननीय आंध्र प्रदेश उच्च न्यायालय का अग्रिम निर्णय प्राधिकरण वाणिज्यिक कर, तमिलनाडु सरकार के उद्देश्य के लिए

टी. एन. वी. ए. टी. अधिनियम 2006 ने उस उत्पाद को होम्योपैथिक दवा माना। हम पाते हैं कि विषयगत मामलों से पहले भी, अतीत में कई अवसरों पर, अपीलार्थी को कारण दर्शाएँ नोटिस जारी किए गए थे।

प्रसाधन सामग्री के रूप में वस्तुओं का वर्गीकरण और अपीलीय प्राधिकरण

सामान्य बोलचाल के सभी पहलुओं के साथ-साथ उत्पाद की सामग्री और इसके उपयोग में जाने के बाद यह माना गया कि उत्पाद होम्योपैथिक दवा है। न्यायनिर्णायक प्राधिकारी ने सी. सी. ई., नागपुर बनाम मेसर्स श्री बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लिमिटेड 2009 (237) ई. एल. टी. के मामले में माननीय उच्चतम न्यायालय के फैसले पर भरोसा किया है। 225 (एस. सी.) यह कहना कि विचाराधीन उत्पाद सामान्य बोलचाल परीक्षण को संतुष्ट नहीं करता है। हम पाते हैं कि उक्त निर्णय का अनुपात लागू नहीं होता है क्योंकि उक्त मामले में, उत्पाद लाल दंत मंजन को आम बोलचाल में शौचालय की तैयारी के रूप में जाना जाता था न कि आयुर्वेदिक दवा के रूप में। जबकि वर्तमान मामले में तथ्य पूरी तरह से अलग हैं क्योंकि अपीलार्थी ने माल को इस रूप में बेचा है

होम्योपैथिक दवा और इसे आम बोलचाल में होम्योपैथिक दवा के रूप में जाना जाता है। यहाँ तक कि तथ्यों से भी लेबल स्पष्ट है

नेचरेंस रिसर्च लैब्स (पी) लिमिटेड के मामले में न्यायाधिकरण बनाम सी. सी. ई., दिल्ली-III। 2003 (154) ई. एल. टी. 672 (त्रि. -डेल.) सही नहीं है क्योंकि उक्त मामले में उत्पाद वन पुष्प के रूप में बेचा गया था पैकिंग पर उल्लिखित मामले के अनुसार खोपड़ी और बालों की जड़ों को पोषण और यह बालों के झड़ने को नियंत्रित करने में भी मदद करता है और खोपड़ी के संक्रमण को रोकता है, बालों के शानदार विकास को प्रोत्साहित करता है क्योंकि वर्तमान मामले में दवा/लाइसेंस प्राधिकरण और यहां तक कि माननीय उच्च न्यायालय, वैट अधिकारियों और चिकित्सा व्यवसायियों सभी ने उत्पाद को निम्न श्रेणी में आने के लिए प्रमाणित किया है -

अनुसूची के को दवा के रूप में और यहां तक कि उत्पाद को ग्राहक, केंद्रीय कर और सेवा कर के आयुक्त के रूप में दवा के रूप में बेचा जाता है। अश्विनी होमियो फार्मसी [दिनेश माहेश्वरी, जे.]

आम बोलचाल में दवा के रूप में जाना जाता है, अल्पाइन का निर्णय उद्योग 2003 (152) ई. एल. टी. 16 (एस. सी.), जिस पर राजस्व भरोसा करता है, भी लागू नहीं है क्योंकि उक्त मामले में औषधि और प्रसाधन सामग्री अधिनियम, 1940 के तहत निर्धारिती द्वारा प्राप्त दवा लाइसेंस में ही उल्लेख किया गया है कि यह एक गैर-फार्माकोपिया वस्तु के रूप में बाहरी अनुप्रयोग के लिए मलम और क्रीम के लिए एक लाइसेंस है, जबकि वर्तमान मामले में उत्पाद को अतिरिक्त निदेशक, भारतीय चिकित्सा और होम्योपैथी द्वारा होम्योपैथिक दवा के रूप में पंजीकृत किया गया है।

विभाग, आंध्र प्रदेश सरकार। यहां तक कि आंध्र प्रदेश के माननीय उच्च न्यायालय ने भी उत्पाद को दवा और चिकित्सा की श्रेणी में आने वाला माना और इसे दवा के रूप में बेचा जाता है। सी. सी. ई. बनाम ज़ांडू के मामले में निर्णय का अनुपात

(181) बक्सन होमियो फार्मसी (पी) लिमिटेड के मामले में ई. एल. टी. 206 (एस. सी.) और न्यायाधिकरण का आदेश। बनाम सी. सी. ई., नई दिल्ली 2001 (136) ई. एल. टी. 485 (टी. आर.-डी. ई. एल.) हमारे उपरोक्त निष्कर्षों को देखते हुए वर्तमान मामले में पूरी तरह से लागू होते हैं और हमें उन निर्णयों से अलग होने का कोई कारण नहीं मिलता है। 10. हम यह भी पाते हैं कि एक ओर न्यायनिर्णायक प्राधिकरण ने यह माना है कि वर्ष 2012 में केंद्रीय उत्पाद शुल्क में संशोधन से पहले किए गए वर्गीकरण पर फिर से विचार करने की आवश्यकता होगी।

विचाराधीन उत्पाद का वर्गीकरण और इस प्रकार अपीलार्थी के पक्ष में पारित अपीलीय आदेशों के संदर्भ में अध्याय 30 के तहत वस्तुओं के तय किए गए वर्गीकरण को स्वीकार करने से इनकार कर दिया। हालांकि दूसरी ओर न्यायनिर्णायक प्राधिकरण ने वर्ष 2012 से पहले केंद्रीय उत्पाद शुल्क के संदर्भ में दिए गए निर्णयों और वर्ष 1997 में जारी बोर्ड परिपत्र पर भरोसा किया है जो स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि इस मुद्दे को तय करने के लिए उनके द्वारा कोई एकरूपता नहीं अपनाई गई है। न्यायनिर्णायक प्राधिकारी ने परिपत्र सं. 333/49/97 CX dt पर भरोसा किया है। 10.09.1997 यह अभिनिर्धारित करना कि दवा एक चिकित्सक द्वारा निर्धारित की गई है, जिसका उपयोग सीमित समय के लिए किया जाता है और हर दिन नहीं जब तक कि यह विशिष्ट बीमारी से निपटने के लिए निर्धारित नहीं किया जाता है। उन्होंने अल्पाइन इंडस्ट्रीज बनाम सीसीई, दिल्ली 1997 के मामले में भी निर्णयों पर भरोसा किया। (92) ई. एल. टी.

53 (टी. आर. आई.), सी. सी. ई., मुंबई बनाम मेसर्स मुलर एंड फिप्स, रिचर्डसन हिंदुस्तान लिमिटेड 1998 (35) ई. एल. टी. 424 (टी. आर. आई.) का मानना है कि इस शब्द का अर्थ लोकप्रिय अर्थों में अर्थात् [2023] 6 एस. सी. आर. के रूप में किया जाना चाहिए।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

उनसे बात करने वाले लोग समझते हैं। न्यायनिर्णायक प्राधिकारी ने अभिनिर्धारित किया है कि यद्यपि इसके पीछे कोई तर्क नहीं है।

मांगों की पुष्टि करने के लिए ऊपर दिया गया है। हालांकि यह देखा जाना चाहिए कि उक्त मामले में माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने अपने फैसले पर भरोसा किया है बी. पी. एल. फार्मास्युटिकल्स लिमिटेड के मामले में। बनाम। सी. एक्साइज के कलेक्टर, वडोदरा 1995 (77) ई. एल. टी. 485 (एस. सी.)। जिसमें यह अभिनिर्धारित किया गया था कि केवल इसलिए कि शुल्क प्रविष्टियों में कुछ अंतर है, उत्पाद अपने मूल्य को नहीं बदलेगा।

वर्गीकरण बिल्कुल गलत है क्योंकि उत्पाद वही बना हुआ है और इसे होम्योपैथिक दवा के रूप में वर्गीकृत किया जाएगा।

11. ऊपर बताए गए तथ्यों की सावधानीपूर्वक जांच करने के बाद हमें अध्याय उपभोक्ता आयुक्त, केंद्रीय शुल्क और सेवा कर, हैदराबाद बनाम के तहत उत्पाद को प्रसाधन सामग्री के रूप में वर्गीकृत करने का कोई कारण नहीं मिलता है।

अश्विनी होमियो फार्मसी [दिनेश माहेश्वरी, जे.]

33 सीईटीए, 1985। इस प्रकार हम मानते हैं कि वस्तुओं को केंद्रीय उत्पाद शुल्क के अध्याय 30 के तहत होम्योपैथिक के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है। दवा और तदनुसार कर्तव्य के लिए उत्तरदायी। अपीलार्थी के खिलाफ निर्णय किए गए कर्तव्यों और दंड की मांग करने का कोई कारण नहीं है।

प्रतिद्वंद्वी प्रस्तुतियाँ

8. वर्तमान अपील में, विद्वान अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल

श्री विक्रमजीत बनर्जी ने विभिन्न आधारों पर आई. डी. 1 के विवादित फैसले और आदेश की आलोचना करते हुए कहा कि न्यायाधिकरण ने यह अभिनिर्धारित करने में गलती की है कि विचाराधीन उत्पाद केंद्रीय उत्पाद शुल्क अधिनियम, 1985 की पहली अनुसूची के अध्याय 33 के तहत नहीं, बल्कि अध्याय 30 के तहत आएगा, जैसा कि वर्ष 2012 में संशोधित किया गया था।

8.1 . विद्वान ए. एस. जी. ने प्रस्तुतियों के साथ उत्पाद के वर्गीकरण पर फिर से विचार करने की आवश्यकता पर जोर दिया है।

कि प्रशुल्क संरचना में परिवर्तन के कारण, 2012 से पहले के आदेशों ने अपना पूर्ववर्ती मूल्य खो दिया था। विद्वान ए. एस. जी. प्रस्तुत करेगा कि पेटेंट/स्वामित्व के बीच के अंतर को दूर करने के लिए अध्याय 30 को फिर से लिखा गया है

और जेनेरिक दवाओं और उन्हें इस संदर्भ में वर्गीकृत करने के लिए कि उन्हें खुदरा बिक्री के लिए इकाई पात्रों में रखा गया है या नहीं; और 1940 के अधिनियम के साथ-साथ विभिन्न फार्माकोपिया के बारे में उल्लेख भी हटा दिया गया है। विद्वान ए. एस. जी. ने आगे कहा कि अध्याय 33 के तहत "हेयर ऑयल" ने "सुगंधित बाल" के सहायक शीर्षकों के कारण ध्यान आकर्षित किया।

8.2 . लर्नड ए. एस. जी. ने दृढ़ता से तर्क दिया है कि विचाराधीन उत्पाद अध्याय 30 के तहत निर्धारित मानदंडों को पूरा नहीं करता है। यह प्रस्तुत किया गया है कि प्रासंगिक टिप्पणियों को पढ़ने पर, भले ही उत्पाद में कुछ उपचारात्मक या रोगनिरोधी मूल्य होने के लिए कहा गया हो, फिर भी यह कॉस्मेटिक होगा, क्योंकि इसमें सहायक उपचारात्मक और रोगनिरोधी मूल्य वाले लोग शामिल नहीं हैं। विद्वान ए. एस. जी. प्रस्तुत करेगा कि प्रतिवादी ने उत्पाद को टैरिफ आइटम 3003 90 14 के तहत वर्गीकृत किया है, लेकिन उक्त प्रविष्टि में दवाओं को मापी गई खुराक या पैकेजिंग में नहीं डालने का प्रावधान है, जबकि ए. एच. ए. एच. ओ. यह 50 मिली, 100 मिली, 200 मिली और 400 मिली बोतलों की पैकेजिंग में बेचा जाता है। विद्वान ए. एस. जी. के अनुसार, टैरिफ आइटम 3305 90 19, विशेष रूप से "बालों के तेल" के लिए, सीधे उत्पाद, ए. एच. ए. एच. ओ. को कवर करता है।

23] 6 एस सी आर।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

8.3 . लर्नड एएसजी ने यह भी तर्क दिया है कि एक विशिष्ट प्रविष्टि होगी

केंद्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्त, नागपुर बनाम में इस न्यायालय द्वारा अभिनिर्धारित सामान्य प्रविष्टि पर वरीयता लें। श्री बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लिमिटेड। : (2009) 12 एस. सी. सी. 419; और जब "बालों के तेल" का विशेष रूप से अध्याय 33 में उल्लेख किया गया है और जब ए. एच. ए. एच. ओ.

बोलचाल एक सामान्य सौंदर्य प्रसाधन आवश्यकता की है, इसे 'दवा' के रूप में वर्गीकृत करना एक दूरगामी प्रस्ताव है। 8.4 . प्रस्तुतियों के दूसरे अंग में, विद्वान ए. एस. जी. ने तर्क दिया है कि उत्पाद का सामान्य बोलचाल परीक्षण इसके पक्ष में नहीं है

उत्तरदाता, क्योंकि उत्पाद किसी भी चिकित्सा व्यवसायी द्वारा निर्धारित नहीं है, चिकित्सा और सामान्य दुकानों में बिना किसी पर्चे के स्वतंत्र रूप से उपलब्ध है, और काउंटर पर खरीदा जा सकता है, जैसा कि उत्तरदाता द्वारा स्वीकार किया गया है। इसके अतिरिक्त, लेबल 1940 के अधिनियम के तहत अनिवार्य प्रिस्क्रिप्शन के तहत अधिकृत चिकित्सा वितरक या खुदरा विक्रेता द्वारा बिक्री की शर्त का संकेत नहीं देता है; यह किसी विशेष बीमारी का इलाज नहीं करता है; और लेबल पर दावे केवल विपणन उद्देश्यों के लिए हैं। लर्नड ए. एस. जी. ने अल्पाइन इंडस्ट्रीज बनाम में निर्णय पर भरोसा किया है। केंद्रीय उत्पाद शुल्क, नई दिल्ली के कलेक्टर: (2003) 3 एस. सी. सी. 111 प्रस्तुत करेगा कि कोई सहायक चिकित्सीय या

उत्पाद के रोगनिरोधी उपयोग से "बाल तेल" के रूप में इसकी प्रकृति नहीं बदलेगी, अगर आम बोलचाल में, इसे कॉस्मेटिक के रूप में माना जाता है। सनी इंडस्ट्रीज (पी) लिमिटेड बनाम में इस न्यायालय का एक और निर्णय। केंद्रीय उत्पाद शुल्क कलेक्टर, कलकत्ता: (2003) 4 एस. सी. सी. 280 पर भी भरोसा किया गया है।

8.4. 1 . ए. एस. जी. ने फिर से यह प्रस्तुत करने के लिए सामान्य बोलचाल परीक्षण का उल्लेख किया है कि उत्पाद का विज्ञापन बाल तेल के रूप में किया जाता है न कि एक दवा के रूप में और जनता द्वारा माना जाता है जो उत्पाद को बाल तेल (कॉस्मेटिक) के रूप में खरीदते और बेचते हैं न कि दवा के रूप में। कानून में शब्दों को समझने के उद्देश्य से, विद्वान ए. एस. जी. ने सीमा शुल्क आयुक्त, कलकत्ता बनाम में निर्णय का उल्लेख किया है। जी. सी. जैन और अन्न। : (2011) 12 एस. सी. सी. 713 ने यह प्रस्तुत करने के लिए कि जब तक कानून शब्दों और अभिव्यक्तियों को परिभाषित नहीं करता है, उनका अर्थ उस अर्थ में लगाया जाना चाहिए जिसमें उनके साथ काम करने वाले व्यक्ति समझते हैं अर्थात् व्यापार और समझ और उपयोग के अनुसार। आगे केंद्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्त बनाम में निर्णय। वॉकहार्ट लाइफ साइंसेज लिमिटेड: (2012) 5 एस. सी. सी. 585 पर यह प्रस्तुत करने के लिए भरोसा किया गया है कि किसी कर योग्य वस्तु को वर्गीकृत करने के लिए कोई निश्चित परीक्षण नहीं है और किसी विशेष वस्तु के वर्गीकरण पर निर्णय मूर्त सामग्री पर या इसे "सामान्य बोलचाल" या "वाणिज्यिक दुनिया" या "व्यापार मंडल" में या इसके लोकप्रिय अर्थ में कैसे समझा जाता है, इस पर निर्भर करेगा।

ग्राहक आयुक्त, केंद्रीय कर और सेवा कर, हैदराबाद बनाम। अश्विनी होमियो फार्मसी [दिनेश माहेश्वरी, जे.]

9. दूसरी ओर, प्रतिवादी के लिए विद्वान वरिष्ठ वकील

श्री वी. वी. एस. राव ने इस बात पर जोर दिया है कि ए. एच. ए. एच. ओ. के वर्गीकरण ने अंतिम रूप प्राप्त कर लिया है, जिसकी चार बार जांच की गई है; इसकी संरचना एक बेस ऑयल माध्यम में चार होम्योपैथिक दवाओं की है; इसे होम्योपैथिक दवा के रूप में निर्माण और बिक्री के लिए लाइसेंस दिया गया है। निदेशक, भारतीय औषधि और होम्योपैथी, सरकार द्वारा

आंध्र प्रदेश; यह खालित्य, रूसी, बाल झड़ने आदि का इलाज/रोकथाम करता है। इसके चिकित्सीय और रोगनिरोधी गुणों के कारण; और इसका लेवल 1945 के नियमों की अनुसूची के तहत एक होम्योपैथिक दवा के रूप में उत्पाद की प्रकृति को अवयवों, संरचना, संकेतों, विपरीत संकेतों और अनुप्रयोग के तरीके के साथ इंगित करता है।

9.1 . विद्वान वरिष्ठ वकील प्रस्तुत करेंगे कि हालांकि वहाँ थे

वर्ष 2012 में शुल्क संरचना में परिवर्तन लेकिन फिर, संशोधनों के बावजूद, ए. एच. ए. एच. ओ. अध्याय 30 के तहत वर्गीकृत किया जा सकता है, क्योंकि इसकी सामग्री या निर्माण प्रक्रिया में कोई बदलाव नहीं हुआ है जो अध्याय 33 के तहत एक सौंदर्य प्रसाधन के रूप में इसके वर्गीकरण की गारंटी देता है। इन पहलुओं पर विस्तार से बताते हुए, विद्वान वरिष्ठ वकील ने प्रस्तुत किया है कि 2004 05 तक होम्योपैथिक दवाओं के लिए शुल्क प्रविष्टि केवल 3003 39 थी और

खुराक में या खुदरा बिक्री के लिए उपयुक्त रूपों या पैकेजिंग में रखें)। बी. पी. एल. फार्मास्युटिकल्स में लिए गए फैसलों के संदर्भ में यह तर्क दिया गया है। वी. केंद्रीय उत्पाद शुल्क, बडोदरा के कलेक्टर: 1995 सप्लीमेंट (3) एस. सी. सी. 1 और केंद्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्त, नागपुर बनाम। विक्को प्रयोगशालाएँ:

(2005) 4 एस. सी. सी. 17 ने कहा कि उत्पाद के समान रहने पर शुल्क प्रविष्टियों में कुछ अंतर इसके चरित्र को नहीं बदलेंगे। विद्वान वकील के अनुसार, अध्याय 33 में उप-शीर्षकों को शामिल करने से कोई फर्क नहीं पड़ता क्योंकि विचाराधीन उत्पाद अध्याय 33 में "बाल तेल" के किसी भी संशोधित विवरण में फिट नहीं होता है, क्योंकि ए. एच. ए. एच. ओ. स्पष्ट रूप से दवा की परिभाषा द्वारा कवर किया गया है।

9.1. 1 . वर्गीकरण को फिर से देखने के प्रश्न के संबंध में, यह भी प्रस्तुत किया गया है कि अपीलार्थी की ओर से तर्क है कि प्रतिवादी ने उत्पाद को 3003 90 14 के तहत वर्गीकृत किया, जो उन दवाओं के लिए प्रदान करता है जो मापी गई खुराक या पैकेजिंग में नहीं रखी गई हैं, जबकि [2023] 6 एस. सी. आर.

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

मान लीजिए कि ए. एच. ए. एच. ओ. को 50 मिली, 100 मिली आदि की पैकेजिंग में बेचा जाता है, यह एक नया ग्राउंड है जो शो-काँज नोटिस का हिस्सा नहीं था। बल्कि प्रत्यर्थी को कभी भी कारण दिखाने के लिए नहीं कहा गया कि वर्गीकरण को क्यों नहीं बदला जाना चाहिए। इसलिए, सभी कार्यवाहियाँ हैं दूषित हो जाता है। हालाँकि, यह प्रस्तुत किया गया है कि अपीलार्थी के दावों के संबंध में भी, ए. एच. ए. एच. ओ. अभी भी अध्याय 30 (यातायात वस्तु 3004 90 14) के तहत रहेगा जो होम्योपैथिक के लिए है।

खुदरा बिक्री के लिए पैकेजों में पैक की गई दवा और, किसी भी मामले में, यह अध्याय 33 (टैरिफ आइटम 3305 90 15) के तहत नहीं आएगा; और, उप-वर्गीकरण में परिवर्तन के बावजूद, शुल्क की दर में कोई बदलाव नहीं होगा और स्थिति राजस्व तटस्थ रहेगी।

सरकारी अधिकारियों द्वारा भी दवा/दवा के रूप में मान्यता जैसा कि इस न्यायालय द्वारा वाणिज्यिक कर आयुक्त v में 27.02.2019 पर किया गया है। मेसर्स अश्विनी होमियो फार्मसी: 2011 की सिविल अपील No.9494-9495।

9.3 . विद्वान वरिष्ठ वकील ने प्रस्तुत किया है कि सामान्य बोलचाल परीक्षण को लागू करने की कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि उत्पाद की प्रकृति है

सक्षम प्राधिकारी द्वारा एक औषधि के रूप में प्रमाणित और यह कि अपीलार्थी ने प्रत्यर्थी के पक्ष में तथ्यात्मक साक्ष्य को गलत साबित नहीं करने के अलावा यह स्थापित करने के लिए कोई बाजार पूछताछ नहीं की थी कि उत्पाद एक सौंदर्य प्रसाधन है।

9.4 . विद्वान वरिष्ठ वकील ने केंद्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्त, कलकत्ता बनाम में निर्णय पर भरोसा किया है। शर्मा केमिकल

कार्य: (2003) 5 एस. सी. सी. 60 ने यह प्रस्तुत किया कि केवल इसलिए कि कोई उत्पाद काउंटरों पर बेचा जाता है और बिना पर्चे के, यह स्वयं इस निष्कर्ष पर नहीं पहुंचेगा कि यह एक दवा नहीं है। ए. एच. ए. एच. ओ. के उपयोग की विधि इसके लेबल पर स्पष्ट रूप से बताई गई है और मैटेरिया मेडिका स्पष्ट रूप से उपयोग की जाने वाली सामग्री के चिकित्सीय गुणों को बताती है। यह भी प्रस्तुत किया गया है

कि एनासिन, डोलो 650, कफ सिरप आदि जैसी कई दवाएं काउंटर पर उपलब्ध हैं; और किसी भी होम्यो दवा को खरीदने के लिए किसी भी पर्चे की आवश्यकता नहीं होती है।

मेघदूत ग्राहक आयोग, केंद्रीय कर और सेवा कर, हैदराबाद बनाम के मामले में इस न्यायालय का एक और निर्णय। अश्विनी होमियो फार्मसी [दिनेश माहेश्वरी, जे.]

ग्रामोद्योग सेवा संस्थान, उत्तर प्रदेश बनाम. केंद्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्त, लखनऊ: (2005) 4 एस. सी. सी. 15 पर भी भरोसा किया गया है। 9.5 . विद्वान वरिष्ठ वकील ने वर्तमान मामले के तथ्यों को अल्पाइन इंडस्ट्रीज (सुप्रा) के मामले से अलग किया है, क्योंकि ए. एच. ए. एच. ओ. तेल के माध्यम से उपचारात्मक/रोगनिरोधी दवा है।

खोपड़ी से संबंधित रोग। इस उत्पाद का विज्ञापन "हेयर ऑयल" के रूप में नहीं किया जाता है, बल्कि इसका विपणन केवल "अश्विनी होमियो अर्निका हेयर ऑयल" के रूप में किया जाता है। 9.6 . बैक्सन होमियो फार्मसी (ऊपर) के मामले में न्यायाधिकरण के बहुमत निर्णय के संदर्भ में

उत्पाद, "सनी अर्निका हेयर ऑयल", विद्वान वरिष्ठ वकील ने प्रस्तुत किया है

कि उक्त निर्णय ने अंतिमता प्राप्त कर ली है, और स्वयं प्रतिवादी के मामले में, विभाग ने उत्पाद के वर्गीकरण को चार बार दवा के रूप में स्वीकार कर लिया है, वर्गीकरण पर फिर से विचार करने का प्रयास किया है पूरी तरह से अनुचित किया गया है और न्यायाधिकरण द्वारा उचित रूप से अस्वीकृत किया गया है

9.7 . इस प्रकार, प्रत्यर्थी की ओर से यह तर्क दिया गया है कि दिनांक 31.01.2018 के विवादित आदेश में, न्यायाधिकरण ने उचित रूप से अलग कर दिया है।

तथ्यों और मामले में लागू कानून की सराहना करने के बाद विभाग द्वारा उठाई गई मांगें, क्योंकि संबंधित अवधि के दौरान, उक्त अध्याय 30 में कोई बदलाव नहीं हुआ था; और ए. एच. ए. एच. ओ. की निर्माण प्रक्रिया या सामग्री में कोई बदलाव नहीं हुआ था। इस प्रकार, उत्पाद पहली अनुसूची के अध्याय 30 के तहत एक दवा बना रहा

2012 से पहले और उसके बाद भी केंद्रीय उत्पाद शुल्क अधिनियम, 1985। इसलिए यह याचिका खारिज की जानी चाहिए।

निर्धारण के लिए बिंदु

10. यहाँ ऊपर जो देखा गया है, वह अनिवार्य रूप से महत्वपूर्ण है।

इस मामले में निर्धारण के लिए उत्पन्न होने वाला यह है कि क्या विचाराधीन उत्पाद, ए. एच. ए. एच. ओ., केंद्रीय उत्पाद शुल्क अधिनियम, 1985 की पहली अनुसूची के अध्याय 33 के तहत अध्याय 30 के तहत 'दवा' के रूप में या 'सौंदर्य प्रसाधन या शौचालय की तैयारी' के रूप में वर्गीकरण के योग्य है; और परस्पर जुड़ा मुद्दा यह है कि क्या वर्ष 2012 में लाए गए संशोधन के माध्यम से शुल्क संरचना में परिवर्तन ने वर्गीकरण पर फिर से विचार करना उचित ठहराया।

उत्पाद के बारे में।

11. जैसा कि देखा गया है, यह निर्विवाद है कि विचाराधीन उत्पाद, ए. एच. ए. एच. ओ., को कम से कम अध्याय 30 के तहत 'दवा' के रूप में वर्गीकृत किया गया था।

विभाग द्वारा चार अलग-अलग अवसरों पर दो आदेश पारित किए गए

1994-2004 के दौरान क्रमिक आयुक्त (अपील) द्वारा; और उक्त आदेशों ने अंतिमता प्राप्त कर ली थी। प्रतिवादी, अपने [2023] 6 एस. सी. आर. का समर्थन करने के लिए।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

यह दावा करते हुए कि ए. एच. ए. एच. ओ. एक दवा है, बैक्सन होमियो फार्मसी (ऊपर) के मामले में न्यायाधिकरण के फैसले पर भी भरोसा किया।

जिसमें "सनी अर्निका हेयर ऑयल" के नाम से बेचे जाने वाले इसी तरह के उत्पाद को अध्याय 30 के तहत दवा माना गया था। हालांकि, विभाग ने वर्गीकरण की पुनः परीक्षा के लिए अपने औचित्य के रूप में वर्ष 2012 में शुल्क प्रविष्टियों के संशोधन पर भरोसा करने का प्रयास किया।

12. हमने न्यायनिर्णायक प्राधिकरण और न्यायाधिकरण द्वारा दर्ज किए गए अलग-अलग निष्कर्षों की बारीकी से जांच की है और इन पर भी ध्यान दिया है दलों द्वारा लिए गए प्रतिस्पर्धी स्टैंड। मूल प्रश्न की जांच करने के लिए कि क्या विचाराधीन उत्पाद के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है

' अध्याय 30 के तहत 'औषधि' या अध्याय 33 के तहत 'सौंदर्य प्रसाधन या शौचालय की तैयारी' के वर्गीकरण में आएगा और साथ ही पिछले की पुनः परीक्षा के औचित्य के संबंध में अन्य प्रश्न भी।

विचाराधीन उत्पाद का वर्गीकरण, हम, सबसे पहले, उद्धृत निर्णयों से स्पष्ट सिद्धांतों पर ध्यान दे सकते हैं।

उद्धृत निर्णयों में सिद्धांत

13. वर्गीकरण की पुनः परीक्षा के औचित्य के संबंध में

विचाराधीन उत्पाद के बारे में, न्यायनिर्णायक प्राधिकरण ने पाया कि शुल्क प्रविष्टियों में पर्याप्त बदलाव हुए थे, विशेष रूप से जब अध्याय 30 को फिर से लिखा गया ताकि पेटेंट/स्वामित्व और जेनेरिक दवाओं के बीच के अंतर को दूर किया जा सके और उन्हें निम्नलिखित के अनुसार वर्गीकृत किया जा सके:

उन्हें खुदरा बिक्री के लिए इकाई पात्रों में रखा जाता है या नहीं; 1940 के अधिनियम और विभिन्न फार्माकोपिया के बारे में उल्लेख आया

हटा दिया जाए; और अध्याय 33 के तहत, वाक्यांश "बाल तेल" प्रमुख हो गया जिसके तहत, "सुगंधित बाल तेल" और "अन्य" के सहायक शीर्षकों को निर्दिष्ट किया गया। लर्नड ए. एस. जी. ने अपनी दलीलों के समर्थन में न्यायनिर्णायक प्राधिकरण द्वारा अपनाए गए कारणों पर भी भरोसा किया है और आंध्र शुगर लिमिटेड (ऊपर) में निर्णय का हवाला दिया है।

13.1 . आंध्र शुगर लिमिटेड (उपरोक्त) के मामले में, अनिवार्य रूप से शामिल मुद्दा यह था कि क्या एसिटिक एनहाइड्राइड का निर्माण किया जाता है। प्रतिवादी द्वारा और दवा निर्माताओं को बेचा गया दवा मध्यवर्ती के रूप में छूट का लाभ उठाने के लिए पात्र था। इस न्यायालय ने छूट अधिसूचना की भाषा और उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए कहा कि उक्त उत्पाद

एसिटिक एनहाइड्राइड को अधिसूचना में 'दवा मध्यवर्ती' अभिव्यक्ति द्वारा कवर किया गया था। उस संदर्भ में, इस न्यायालय ने निर्दिष्ट पैराग्राफ में निम्नलिखित टिप्पणी की:

- ग्राहक आयुक्त, केंद्रीय कर और सेवा कर, हैदराबाद बनाम। अश्विनी होमियो फार्मसी [दिनेश माहेश्वरी, जे.]

" 5. यह अच्छी तरह से तय किया गया है कि अधिसूचना जारी करने वाले प्राधिकारी द्वारा दिया गया अर्थ समकालीन व्यक्ति के लिए एक अच्छा मार्गदर्शक है। कानून की स्थिति का प्रदर्शन। के. पी. वर्गीज बनाम में इस न्यायालय की टिप्पणियों का संदर्भ दिया जा सकता है। आईटीओ [(1981) 4 एससीसी 173]। यह व्याख्या का एक अच्छी तरह से स्थापित सिद्धांत है कि अदालतें एक कानून का अर्थ लगाने में इसके अधिनियमन के समय और उन लोगों द्वारा की गई व्याख्या को बहुत महत्व देंगी, जिनके द्वारा

एक ही अधिनियम का निर्माण, निष्पादन और लागू करना कर्तव्य रहा है। "

13.2 . प्रत्यर्थी की ओर से उद्धृत बी. पी. एल. फार्मास्युटिकल्स (उपरोक्त) के मामले में, इस न्यायालय के समक्ष मुद्दा "सेलेनियम सल्फाइड लोशन यू. एस. पी.". के वर्गीकरण के बारे में था जो निर्मित और बेचा जाता था। निर्धारिती द्वारा "सेलसन शैम्पू" ब्रांड नाम के तहत। इस न्यायालय ने अन्य बातों के साथ-साथ यह अभिनिर्धारित किया कि किसी उत्पाद के अध्याय 33 के अंतर्गत आने के लिए, उसमें टिप्पणी 2 के संदर्भ में, इसे पहले प्रसाधनिक और उपयोग के लिए उपयुक्त होना चाहिए। इस न्यायालय ने उत्पाद के सक्रिय घटक की भी जांच की (हालांकि

मात्रा में बहुत कम) और यह माना कि तैयारी, लेबल, साहित्य, चरित्र, सामान्य और वाणिज्यिक बोलचाल को ध्यान में रखते हुए, उत्पाद को एक दवा के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है। इसके अलावा, इस न्यायालय ने निर्धारिती की ओर से इस निवेदन को स्वीकार कर लिया कि केवल शुल्क प्रविष्टियों में कुछ अंतर के कारण, उत्पाद अपने चरित्र को नहीं बदलेगा; और वर्गीकरण को बदलने के लिए कुछ और की आवश्यकता है, खासकर जब उत्पाद वही रहता है। इस न्यायालय की प्रासंगिक टिप्पणियाँ और व्याख्याएँ निम्नानुसार हैं: -

" 29. अध्याय टिप्पणियों पर आधारित तर्क भी सही नहीं है। यह अभिनिर्धारित करने के लिए कि सेलसन अध्याय 33 के अंतर्गत आएगा, नीचे दिए गए अधिकारियों द्वारा दिए गए कारणों में से एक यह था कि संरचना को ध्यान में रखते हुए, उत्पाद केंद्रीय उत्पाद शुल्क अधिनियम, 1985 की अनुसूची के नोट 2 से अध्याय 33 के दायरे में आएगा। अधिकारियों के अनुसार उत्पाद में केवल सहायक औषधीय मूल्य और मूल्य शामिल हैं। इसलिए, औषधीय मूल्य वाले उत्पाद के बावजूद अध्याय 33 के अंतर्गत आएगा। हम पहले ही नोट 2 को अध्याय 33 में निर्धारित कर चुके हैं। में।

नोट 2 को अध्याय 33 में आकर्षित करने के लिए उत्पाद को आवश्यक है सबसे पहले कॉस्मेटिक होना चाहिए, कि उत्पाद इसके लिए उपयुक्त होना चाहिए

शीर्षक संख्या के तहत माल के रूप में उपयोग करें। 33.03 33.08 तक और उन्हें लेबल, साहित्य और अन्य के रूप में पैकिंग में रखा जाना चाहिए।

संकेतों से पता चलता है कि वे कॉस्मेटिक या शौचालय की तैयारी के लिए हैं। उपरोक्त के विपरीत वर्तमान मामले में [2023] 6 एस. सी. आर. में से कोई भी नहीं।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

आवश्यकताओं को पूरा किया जाता है। इसलिए, अध्याय 33 का टिप्पणी 2 आकर्षित नहीं है। फिर से यह बिना किसी सार के अधिकारियों द्वारा दिया गया कारण है कि उत्पाद में सेलेनियम सल्फाइड का 2.5% डब्ल्यू/वी होता है जो केवल एक सहायक उपचारात्मक या रोगनिरोधी मूल्य का होता है। स्थिति यह है कि यू. एस. फार्माकोपिया सहित तकनीकी अंतरों के अनुसार अनुमत चिकित्सीय मात्रा 2.5% है। किसी भी चीज की अधिकता से नुकसान होने या प्रतिकूल प्रभाव पड़ने की संभावना होती है। एक बार उपयोग किए गए घटक की चिकित्सीय मात्रा स्वीकार हो जाने के बाद, यह मानना संभव नहीं है कि घटक सहायक है। महत्वपूर्ण कारक यह है कि यह घटक

(सेलेनियम सल्फाइड) मुख्य घटक है और एकमात्र सक्रिय घटक है।

30. जैसा कि अपीलार्थियों के विद्वान वरिष्ठ वकील ने सही तर्क दिया कि केवल इसलिए कि शुल्क प्रविष्टियों में कुछ अंतर है, उत्पाद अपने चरित्र को नहीं बदलेगा। वर्गीकरण को बदलने के लिए कुछ और चाहिए।

विशेष रूप से जब उत्पाद वही रहता है।

33. उपयोग के लिए चेतावनी, सावधानी और निर्देश देने वाले लेबल सामान्य शैम्पू से अलग होते हैं जिसमें उपयोग के लिए ऐसी चेतावनी या सावधानी नहीं होती है। इसके अलावा कोई भी व्यक्ति सामाजिक सभा में कहने के लिए तैयार नहीं होगा। कि वह डैंड्रफ या इसी तरह की अन्य बीमारियों से छुटकारा पाने के लिए सेलसन का उपयोग कर रहा है, जबकि कोई भी इसी तरह की सभा में यह कहने में संकोच नहीं करेगा कि वह अपने बालों को सुंदर बनाने के लिए शैम्पू के एक विशेष ब्रांड का उपयोग कर रहा है। इस प्रकार उत्पाद का इलाज करने के लिए बहुत सारी अनुकूल सामग्री हैं।

कॉस्मेटिक के बजाय दवा। इस संबंध में अपीलार्थियों के लिए विद्वान वकील द्वारा इंडियन मेटल्स एंड फेरो अलॉयज लिमिटेड के मामले में इस अदालत की रिपोर्ट के निर्णय पर भरोसा व्यक्त किया गया। सी. सी. ई. [(1991) 51 ई. एल. टी. 165 (एस. सी.)] को उपयोगी रूप से संदर्भित किया जा सकता है। उस मामले में इस न्यायालय ने अभिनिर्धारित किया:

" यह (न्यायाधिकरण) ऐसा कहता प्रतीत होता है कि, भले ही माल

अपीलार्थी द्वारा निर्मित को उचित रूप से वर्गीकृत किया गया था मद 26-ए. ए. 1-3-1975 से पहले, मद 68 की शुरुआत

मद 26-एए की व्याख्या में अंतर।

यह ग्राहकों का आयुक्त, केंद्रीय कर और सेवा कर नहीं है। अश्विनी होमियो फार्मसी [दिनेश माहेश्वरी, जे.]

सही है। मद 68 केवल एक अवशिष्ट मद के रूप में अभिप्रेत थी। इसमें वे सामान शामिल हैं जिनका पहले की किसी भी वस्तु में स्पष्ट रूप से उल्लेख नहीं है। अगर, जैसा कि न्यायाधिकरण द्वारा माना गया है, निर्मित खंभों को वस्तु 26-एए, संशोधन के प्रश्न के तहत उचित रूप से वर्गीकृत किया गया था।

वर्गीकरण केवल इसलिए उत्पन्न नहीं हो सकता क्योंकि मद 68 है अनुसूची में निर्धारित विभिन्न मदों के दायरे में नहीं आने वाली वस्तुओं को कर दायरे में लाने के लिए पेश किया गया। ऐसा नहीं है और न ही हो सकता है।

में सूचीबद्ध वस्तुओं की व्याख्या को प्रभावित करता है

अनुसूची. इसलिए न्यायाधिकरण का यह तर्क स्पष्ट रूप से गलत है।

34. यह निर्णय अपीलार्थी के मामले का समर्थन करता है जब यह तर्क दिया जाता है कि केवल नए केंद्रीय उत्पाद शुल्क अधिनियम, 1985 के लागू होने के आधार पर वर्गीकरण को बदलने का कोई उचित कारण नहीं है, बिना यह बताए कि उत्पाद ने अपना चरित्र बदल दिया है।

35. विद्वान वकील ने अपने इस तर्क का समर्थन करने के लिए कई निर्णयों पर भी भरोसा किया कि सामान्य और व्यावसायिक भाषा में उत्पाद को सौंदर्य प्रसाधन के बजाय दवा के रूप में जाना जाता है। जैसा कि पहले ही बताया जा चुका है और उस प्रस्तुति के समर्थन में, शपथ पत्र

और रसायनज्ञों, डॉक्टरों और ग्राहकों के पत्रों को यह दिखाने के लिए दायर किया जाता है कि उत्पाद केवल रसायनज्ञों की दुकानों में पर्चे के तहत बेचा जाता है, जबकि प्रावधान की दुकानों सहित किसी भी दुकान में बेचे जाने वाले शैंपू के विपरीत। यह निष्कर्ष, अर्थात्, कि उत्पाद को सामान्य और वाणिज्यिक बोलचाल में एक पेटेंट और स्वामित्व वाली दवा के रूप में समझा जाता है, केंद्रीय उत्पाद शुल्क और सीमा शुल्क बोर्ड द्वारा भी 1981 में पाया गया था और उत्पाद शुल्क अधिकारियों द्वारा स्वीकार किया गया था। प्रत्यर्थियों की ओर से किसी भी नई सामग्री की अनुपस्थिति अपीलार्थियों के वकील द्वारा उद्धृत निर्णय का उल्लेख किए बिना इस तर्क को स्वीकार करने में कोई कठिनाई नहीं है।

36. अपीलार्थियों के मामले को स्वीकार नहीं करने के लिए सी. ई. जी. ए. टी. द्वारा दिया गया एक और कारण यह था कि उत्पाद को सुखद गंध के साथ बेचा जाता है और इसलिए, इसे एक सौंदर्य प्रसाधन के रूप में माना जाना चाहिए। सेलेनियम सल्फाइड में एक अप्रिय गंध होती है और इससे छुटकारा पाने के लिए मामूली मात्रा में इत्र का उपयोग किया जाता है और इसे लोगों के लिए स्वीकार्य बनाया जाता है।

उपभोक्ता। एक दवा, उदाहरण के लिए, चीनी-लेपित गोली फिर भी चीनी-लेपन के बावजूद दवा होगी। इसी तरह गंध को दबाने के लिए इत्र की नगण्य मात्रा को जोड़ने से उत्पाद का चरित्र दवा या दवा के रूप में दूर नहीं होगा। फिर से न्यायाधिकरण [2023] 6 एस. सी. आर. द्वारा दिया गया एक और कारण।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

पैकिंग के बारे में है। न्यायाधिकरण ने माना है कि उत्पाद है कॉस्मेटिक क्योंकि यह एक आकर्षक प्लास्टिक की बोतल में पैक किया जाता है। यह

अपने आप चरित्र को नहीं बदलेगा, जैसा कि कॉस्मेटिक के लिए रखा गया है
बोतल या लेबल पर कुछ संकेत के साथ बिक्री करें कि इसका उपयोग किया जाना है
कॉस्मेटिक के रूप में या इसे कॉस्मेटिक के रूप में उपयोग किया जाता है। पहले की तरह
नोट किया कि यहाँ लेबल चेतावनी देता है। तथ्य यह है कि यह एक में पैक किया जाता है
प्लास्टिक की बोतलें पूरी तरह से अप्रासंगिक मानदंड हैं।

37. सम्पूर्ण सामग्री के अवलोकन पर हम संतुष्ट हैं कि

विचाराधीन उत्पाद, तैयारी लेबल को ध्यान में रखते हुए,

साहित्य, चरित्र, आम और व्यावसायिक बोलचाल
केंद्रीय बोर्ड की समझ और पहले के निर्णय

उत्पाद शुल्क और सीमा शुल्क, उप-शीर्षक संख्या 3003.19 के अंतर्गत आएगा।

और वर्गीकरण को बदलने का कोई उचित कारण नहीं है।

जैसा कि हम उपरोक्त निष्कर्ष पर पहुंच गए हैं

तथ्यों पर हमारे सामने रखी गई सामग्री, हम इसे आवश्यक नहीं मानते हैं

बार में उद्धृत अन्य निर्णयों में जाने के लिए। परिणामस्वरूप अपीलें
यह धारण करने की अनुमति है कि उत्पाद 'सेलसन' टैरिफ के अंतर्गत आएगा

मद 3003.19 "।

(जोर दिया
गया)

13.3 . विक्को लैबोरेटरीज (ऊपर) में, यह न्यायालय किसके साथ काम कर रहा था

हल्दी त्वचा क्रीम, वज्रदंती टूथपेस्ट और टूथ पाउडर को अध्याय 30 के तहत दवा उत्पादों के साथ या
अध्याय 33 के तहत आवश्यक तेलों और रेसिनॉइड, इत्र, सौंदर्य प्रसाधन या शौचालय की तैयारी के साथ
वर्गीकृत करने का प्रश्न। सामान्य बोलचाल परीक्षण लागू करने के बाद

वर्गीकरण, और बी. पी. एल. फार्मास्यूटिकल्स (ऊपर) पर निर्भर करते हुए और

अन्य निर्णयों में, इस न्यायालय ने निम्नलिखित शब्दों में पुनर्वर्गीकरण के प्रयास के खिलाफ निर्णय दिया: -

" 4. अधिक के बिना कानून की अदालत का केवल निर्णय नहीं हो सकता है

बिना किसी परिवर्तन के वर्गीकरण को बदलने के लिए पर्याप्त औचित्य

किसी उत्पाद की प्रकृति या उत्पाद के उपयोग में परिवर्तन, या इस तरह के निर्णय के शीर्ष पर शुल्क की एक नई व्याख्या।

14. इस समय दोनों निर्णयों का उल्लेख करना उचित होगा।

निर्धारिती श्री बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लिमिटेड से संबंधित।

14.1 . 13.04.2009 पर दिए गए निर्णय में, जो किया गया है

पक्षों के लिए विद्वान वकील द्वारा निर्दिष्ट [(2009) 12 एस. सी. सी. 419 में सूचित], पिछले निर्णय का व्यापक संदर्भ दिया गया है-ग्राहक आयोग, केंद्रीय कर और सेवा कर, हैदराबाद बनाम।

अश्विनी होमियो फार्मसी [दिनेश माहेश्वरी, जे.]

उसी निर्धारिती के संबंध में और उसी उत्पाद के वर्गीकरण के संबंध में 30.03.1995 पर प्रस्तुत किया गया है जिसका नाम दंत मंजन लाल 1 2 है। उक्त पिछले निर्णय में, श्री बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लिमिटेड का मामला है। केंद्रीय उत्पाद शुल्क, नागपुर के कलेक्टर: (1996) 9 एस. सी. सी. 402, मुद्दा यह था कि क्या निर्धारिती द्वारा निर्मित डी. एम. एल. अधिसूचना संख्या 62/78 के तहत उत्पाद शुल्क के भुगतान से छूट के लिए अर्हता प्राप्त करने के लिए एक आयुर्वेदिक दवा के अर्थ के भीतर आ रहा था। केंद्रीय उत्पाद शुल्क नियम, 1944 के नियम 8 (1) द्वारा प्रदत्त शक्ति का प्रयोग करते हुए जारी किया गया सी. ई. दिनांक 01.03.1978। संशोधन द्वारा प्रस्तुत प्रासंगिक प्रविष्टि 'सभी दवाएं, दवाएं, फार्मास्यूटिकल्स और दवा मध्यवर्ती जो कहीं और निर्दिष्ट नहीं हैं' के रूप में पढ़ी गई थी। अपीलार्थी ने तर्क दिया कि विचाराधीन उत्पाद एक वैज्ञानिक चिकित्सा है जो उपरोक्त प्रविष्टि को आकर्षित करेगा और इसलिए भुगतान से मुक्त होगा।

उत्पाद शुल्क। न्यायाधिकरण ने इन दलीलों से असहमति जताई और कहा कि विचाराधीन उत्पाद को शौचालय के रूप में वर्णित किया जा सकता है।

तैयारी करें। इस संबंध में, यह देखने के बाद कि उत्पाद के लिए घटक गेरू (लाल मिट्टी) को 70 प्रतिशत तक शीतलन गुणवत्ता वाला बताया गया था, न्यायाधिकरण ने कहा कि इसका उपयोग बड़े पैमाने पर भराव या रंग देने वाले एजेंट के रूप में किया जाता था और इसे आम बोलचाल में दवा के रूप में वर्णित नहीं किया गया था। विभिन्न ग्रंथों, 1940 के अधिनियम के तहत 'दवा' की परिभाषा और आयुर्वेदिक पुस्तकों के साथ-साथ इस संबंध में विशेषज्ञों की राय को देखने के बाद, न्यायाधिकरण ने निष्कर्ष निकाला कि विचाराधीन उत्पाद को औषधीय तैयारी के रूप में वर्णित नहीं किया जा सकता है और तदनुसार, अपीलार्थी के दावे को खारिज कर दिया। इस न्यायालय ने अन्य बातों के साथ-साथ निम्नानुसार टिप्पणी करते हुए न्यायाधिकरण के तर्क और निष्कर्षों को मंजूरी दी:

" 3. न्यायाधिकरण ने ठीक ही कहा है कि उत्पाद शुल्क अधिनियम जैसे कानूनों की व्याख्या करने में, जिसका प्राथमिक उद्देश्य राजस्व बढ़ाना है और जिसके लिए विभिन्न उत्पादों को अलग-अलग वर्गीकृत किया गया है, उपयोग किए गए शब्दों और अभिव्यक्तियों के वैज्ञानिक और तकनीकी अर्थ का सहारा नहीं लेना चाहिए, बल्कि उनके लोकप्रिय अर्थ, अर्थात् उत्पाद का उपयोग करने वालों द्वारा उनसे जुड़े अर्थ का सहारा लेना चाहिए। यही कारण है कि न्यायाधिकरण इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि वैज्ञानिक और तकनीकी अर्थ अपीलार्थियों के मामले को आगे नहीं बढ़ाएंगे यदि वे उत्पाद को लोकप्रिय बोलचाल में समझने के तरीके के विपरीत हैं। यही कारण है कि न्यायाधिकरण ने कहा

निर्णय के पैरा 86 में निम्नानुसार है:

1 2 'डी. एम. एल.', संक्षेप में।

23] 6 एस सी आर।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

" इसलिए वैद्यों द्वारा दिए गए प्रमाण पत्र और शपथ पत्र नहीं हैं।

श्री बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लिमिटेड के मामले को आगे बढ़ाते हुए यह दिखाने और साबित करने के लिए कि आम आदमी जो अपने दांतों को साफ करने के लिए रोजाना इस दंत मंजन का उपयोग करता है, वह इस दंत मंजन को एक दवा के रूप में मानता है न कि शौचालय की आवश्यकता के रूप में।

यह तर्क की वह रेखा है जिससे हम सहमत हैं। न्यायाधिकरण ने अपीलार्थी के इस दावे को खारिज कर दिया कि आम तौर पर एक दवा एक चिकित्सक द्वारा निर्धारित की जाती है और इसका उपयोग सीमित समय के लिए किया जाता है और हर दिन नहीं जब तक कि यह मधुमेह जैसी विशिष्ट बीमारी से निपटने के लिए निर्धारित नहीं किया जाता है। इसलिए, हमारी राय है कि न्यायाधिकरण ने यह निष्कर्ष निकालने में सही सिद्धांतों को लागू किया कि विचाराधीन उत्पाद एक औषधीय तैयारी ('आयुर्वेदिक') नहीं था और इसलिए, अपीलार्थी छूट अधिसूचना के लाभ का हकदार नहीं था। विद्वान वकील को विस्तार से सुनने और न्यायाधिकरण द्वारा अपनाए गए तर्क को पढ़ने के बाद, जिसके साथ हम सामान्य रूप से सहमत हैं, हम निष्कर्ष में हस्तक्षेप करने का कोई कारण नहीं देखते हैं।

न्यायाधिकरण द्वारा पहुँचा गया और इसलिए, हम इन अपीलों को खारिज करते हैं, लेकिन लागत के बारे में कोई आदेश नहीं देते हैं।

14.2 . उपरोक्त मामला 1944 के अधिनियम के तहत बनाए गए नियमों और उसके तहत जारी अधिसूचना से संबंधित है। पेन्डेंसी के दौरान

और वर्ष 1996-1997 में इसके संशोधनों के साथ, निर्धारिती ने एक याचिका के साथ बोर्ड से संपर्क किया कि अब, आयुर्वेदिक दवाओं की विशिष्ट परिभाषा है और इसलिए, इसके उत्पाद डी. एम. एल. को उस परिभाषा के आधार पर वर्गीकृत किया जाना चाहिए। इसके कारण बोर्ड ने डी. एम. एल. के वर्गीकरण के संबंध में केंद्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्त, नागपुर को पत्र भेजा। इन प्रस्तावों के कारण विभिन्न निर्णय लिए गए जहां निर्धारिती ने तर्क दिया कि उत्पाद डी. एम. एल. 1985 के अधिनियम के अध्याय उपशीर्षक 3003.31 के तहत एक दवा थी, जबकि विभाग का रुख यह था कि उक्त उत्पाद एक सौंदर्य प्रसाधन/प्रसाधन सामग्री की तैयारी/दाँत था।

अध्याय शीर्षक 3306 के तहत वर्गीकृत पाउडर। न्यायाधिकरण की पश्चिम क्षेत्रीय पीठ ने निर्धारिती के पक्ष में वर्गीकरण का निर्णय लिया और कहा कि डी. एम. एल. को अध्याय उप-शीर्षक 3003.31 के तहत वर्गीकृत किया जा सकता है। न्यायाधिकरण की पूर्वी क्षेत्रीय पीठ ने भी ऐसा ही विचार रखा था।

तथापि, उपभोक्ता आयुक्त, केंद्रीय कर और सेवा कर, हैदराबाद बनाम। अश्विनी होमियो फार्मेसी [दिनेश माहेश्वरी, जे.]

न्यायाधिकरण की बड़ी पीठ, जिसे डी. एम. एल. के वर्गीकरण का मुद्दा भेजा गया था, ने अभिनिर्धारित किया कि डी. एम. एल. अध्याय उपशीर्षक 3306.10 के तहत वर्गीकृत किया जा सकता है।

14.3 . उपरोक्त पृष्ठभूमि में, निर्धारिती श्री बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लिमिटेड से संबंधित दूसरा निर्णय प्रस्तुत किया गया था

यह न्यायालय, जिसे विद्वान वकील द्वारा संदर्भित किया गया है पार्टियाँ। इसमें, इस न्यायालय ने 30.03.1995 [बैद्यनाथ I के निर्णय के रूप में उल्लिखित] पर दिए गए उक्त पिछले निर्णय पर ध्यान दिया और कहा कि चूंकि उत्पाद की संरचना, चरित्र और उपयोग समान रहे हैं, इसलिए नए उप-शीर्षक 3301.30 को शामिल करने के बाद भी, वर्गीकरण में परिवर्तन उचित नहीं था। इस न्यायालय ने उत्पादों के वर्गीकरण के निर्धारण के लिए दोहरे परीक्षण (सामान्य बोलचाल परीक्षण) के बारे में विस्तार से बताया

उनमें से एक होने के नाते) और यह भी माना कि विशिष्ट शीर्षक सामान्य शीर्षक पर प्रबल होगा। इस न्यायालय की प्रासंगिक टिप्पणियों और व्याख्याओं को उपयोगी रूप से निम्नानुसार पुनः प्रस्तुत किया जा सकता है: -

" 46. वास्तव में, इस न्यायालय ने लगातार आवेदन किया है यह पता लगाने के लिए कि क्या उत्पाद अध्याय 30 के अंतर्गत आता है या नहीं, मान्यता प्राप्त परीक्षणों में से एक के रूप में सामान्य बोलचाल परीक्षण

अध्याय 33। प्यूमा आयुर्वेदिक हर्बल (पी) लिमिटेड में हाल के एक निर्णय में V. सी. सी. ई. [(2006) 3 एस. सी. सी. 266] इस न्यायालय ने कहा कि यह निर्धारित करने के लिए कि कोई उत्पाद कॉस्मेटिक है या दवा, एक जुड़वां परीक्षण (सामान्य बोलचाल परीक्षण उनमें से एक है) को अदालतों का समर्थन मिला है। इस न्यायालय ने यह टिप्पणी की: (एससीसी पीपी। 269-70 , पैरा 2)

" 2. यह निर्धारित करने के लिए कि कोई उत्पाद कॉस्मेटिक है या दवा, एक दोहरे परीक्षण को अदालतों का समर्थन मिला है।

परीक्षण को इस न्यायालय की भी मंजूरी है।

सी. सी. ई. वी. रिचर्डसन हिंदुस्तान लिमिटेड [(2004) 9 एस. सी. सी. 156] इस बारे में कोई विवाद नहीं है क्योंकि राजस्व भी स्वीकार करता है कि परीक्षण शामिल मुद्दे के लिए निर्धारक है। परीक्षणों

ये हैं:

I. क्या वस्तु को आम तौर पर एक के रूप में समझा जाता है

दवा जिसे सामान्य बोलचाल परीक्षण कहा जाता है। इस परीक्षण के लिए यह देखना होगा कि क्या आम बोलचाल में इस वस्तु को एक दवा के रूप में स्वीकार किया जाता है। यदि कोई उत्पाद दवा की श्रेणी में आता है तो यह

आम उपयोग की वस्तु नहीं होगी। एक उपयोगकर्ता इसका उपयोग केवल एक विशेष बीमारी के इलाज के लिए करेगा और [2023] 6 एस. सी. आर.

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

बीमारी ठीक होने के बाद इसका उपयोग बंद कर दें। का दृष्टिकोण

उत्पाद के प्रति उपभोक्ता बहुत सामग्री है। कोई खरीद सकता है। बाजार में उपलब्ध कोई भी सामान्य साबुन। लेकिन अगर एक

त्वचा की समस्या है, उसे एक औषधीय साबुन खरीदना पड़ सकता है।

ऐसा साबुन एक साधारण कॉस्मेटिक नहीं होगा। यह होगा।

शुल्क अधिनियम के अध्याय 30 में आने वाली दवा।
में उल्लिखित उत्पाद में उपयोग की जाने वाली सामग्री हैं

II.

आयुर्वेद पर आधिकारिक पाठ्यपुस्तकें?

48. उत्पादों के वर्गीकरण (सामान्य बोलचाल परीक्षण सहित) के निर्धारण के लिए दोहरे परीक्षणों को लागू करते हुए, प्यूमा में यह न्यायालय

आयुर्वेदिक हर्बल (पी) लिमिटेड [(2006) 3 एस. सी. सी. 266] ने अभिनिर्धारित किया कि वस्तुएँ 1,2,3,4,7,9,10 और 11 दवाएँ थीं जबकि वस्तुएँ 5,6 और 8 अध्याय उप के तहत सौंदर्य प्रसाधनों के रूप में वर्गीकृत की जाने योग्य थीं।

शीर्षक 33.04। हम इस विचार का समर्थन करते हैं कि

यह निर्धारित करना कि क्या कोई उत्पाद "सौंदर्य प्रसाधन" या "दवाओं" द्वारा कवर किया गया है या दूसरे शब्दों में, क्या कोई उत्पाद अध्याय 30 या अध्याय 33 के अंतर्गत आता है, प्यूमा आयुर्वेदिक हर्बल (पी) लिमिटेड [(2006) 3 एस. सी. सी. 266] में देखे गए दोहरे परीक्षण प्रासंगिक बने हुए हैं।

49. उत्पाद शुल्क अधिनियम का प्राथमिक उद्देश्य राजस्व बढ़ाना है जिसके लिए नए टैरिफ अधिनियम में विभिन्न उत्पादों को अलग-अलग वर्गीकृत किया गया है। रिसॉर्ट को, परिस्थितियों में, उत्पाद का उपयोग करने वालों द्वारा ऐसे उत्पादों के साथ लोकप्रिय अर्थ और समझ से जुड़ा होना चाहिए और वैज्ञानिक और तकनीकी के लिए नहीं होना चाहिए।

प्रयुक्त शब्दों और अभिव्यक्तियों का अर्थ। इस प्रकार, उत्पाद के प्रति उपभोक्ता या उपयोगकर्ता का दृष्टिकोण महत्वपूर्ण है। यह देखना महत्वपूर्ण है कि उपभोक्ता किसी उत्पाद को कैसे देखता है और ऐसे उत्पाद के संबंध में उसकी क्या धारणा है। उपयोगकर्ता की समझ वर्गीकरण के निर्धारण में एक मजबूत कारक है उत्पाद।

52. हम ऊपर जो संकेत दिया है, उसमें पश्चिम क्षेत्रीय पीठ का दृष्टिकोण गलत है क्योंकि यह ग्राहकों, केंद्रीय कर और सेवा कर के सामान्य आयोग की अनदेखी और उपेक्षा करता है।

अश्विनी होमियो फार्मसी [दिनेश माहेश्वरी, जे.]

पार्लेन्स टेस्ट जो यह निर्धारित करने के लिए अच्छी तरह से मान्यता प्राप्त परीक्षणों में से एक है कि उत्पाद दवा या सौंदर्य प्रसाधन के रूप में वर्गीकृत है या नहीं। और इस उत्पाद के संबंध में इस न्यायालय द्वारा लगातार इसका पालन किया गया है। यह कुँ को भी देखता है।

तय कानूनी स्थिति कि प्रकृति में परिवर्तन या उत्पाद के उपयोग में परिवर्तन के बिना और वैधानिक परिभाषा के अभाव में, उत्पाद अपने चरित्र को नहीं बदलेगा। उत्पाद डी. एम. एल. अपनी संरचना में समान रहता है। चरित्र और उपयोग। हम पहले ही यह मान चुके हैं कि उपशीर्षक 3003.31 आयुर्वेदिक चिकित्सा को परिभाषित नहीं करता है और इसलिए, उत्पाद डी. एम. एल. के वर्गीकरण को बदलने के लिए पर्याप्त कोई औचित्य नहीं हो सकता है जिसे इस न्यायालय द्वारा आयुर्वेदिक चिकित्सा नहीं माना गया है।

56. इसमें कोई संदेह नहीं है कि एक विशिष्ट प्रविष्टि एक पर प्रबल होनी चाहिए

सामान्य प्रविष्टि। यह व्याख्या के सामान्य नियमों के नियम 3 (ए) से परिलक्षित होता है जिसमें कहा गया है कि शीर्षक जो प्रदान करता है

अधिक सामान्य विवरण प्रदान करने वाले शीर्षकों की तुलना में अधिकांश विशिष्ट विवरण को प्राथमिकता दी जाएगी। डी. एम. एल. एक दाँत चूर्ण है जिसे बैद्यनाथ प्रथम [(1996) 9 एस. सी. सी. 402] में आम बोलचाल में आयुर्वेदिक दवा नहीं माना गया है। 57. हम पहले ही देख चुके हैं कि सामान्य बोलचाल परीक्षण किसी उत्पाद के वर्गीकरण के लिए निर्धारक परीक्षणों में से एक है, चाहे वह दवा हो या सौंदर्य प्रसाधन। डी. एम. एल. की प्रकृति, चरित्र और उपयोग में कोई बदलाव नहीं होने के कारण, इसे दाँतों का चूर्ण माना जाना चाहिए-जैसा कि बैद्यनाथ 1 में माना गया है। डी. एम. एल. का नियमित रूप से उपयोग किया जाता है

दंत स्वच्छता। चूँकि दाँतों का चूर्ण विशेष रूप से ढका होता है

अध्याय उप-शीर्ष 3306, इसे इसके तहत वर्गीकृत किया जाना है। अध्याय 30 के अध्याय टिप्पणी 1 (डी) के आधार पर, भले ही उत्पाद डी. एम. एल. में कुछ चिकित्सीय या औषधीय गुण हों, उत्पाद को अध्याय 30 से बाहर रखा गया है। 58. बैद्यनाथ के विद्वान वरिष्ठ वकील ने इस पर भरोसा किया

विक्को लैबोरेटरीज [(2005) 4 एस. सी. सी. 17 में इस न्यायालय का निर्णय: (2005) 179 ई. एल. टी. 17] यह दिखाने के लिए कि बैद्यनाथ I [(1996) 9 एस. सी. सी. 402] में, वर्गीकरण के लिए कोई परीक्षण निर्धारित नहीं किया गया था। सबसे पहले, बैद्यनाथ I [(1996) 9 एस. सी. सी. 402] में न्यायाधिकरण द्वारा लागू सामान्य बोलचाल परीक्षण को मंजूरी दी गई है। दूसरा, और इससे भी महत्वपूर्ण, [2023] 6 एस. सी. आर.

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

उसी उत्पाद (डी. एम. एल.) के संबंध में, इस न्यायालय ने अभिनिर्धारित किया कि इसे आयुर्वेदिक चिकित्सा के रूप में वर्गीकृत नहीं किया जा सका और बल्कि उत्पाद एक शौचालय की आवश्यकता है। बैद्यनाथ I [(1996) 9 SCC 402], इसमें कोई संदेह नहीं है कि यह पुरानी शुल्क अवधि यानी इससे पहले की अवधि से संबंधित है नए टैरिफ अधिनियम का अधिनियमन लेकिन चूंकि उत्पाद में रचना, चरित्र और उपयोग समान बने हुए हैं।

नया उपशीर्षक 3301.30 डालने के बाद भी, हमारे पास है पहले से ही माना गया है कि वर्गीकरण में परिवर्तन उचित नहीं है

सामान्य बोलचाल परीक्षण इसके लिए प्रासंगिक बना हुआ है

वर्गीकरण। विक्को लैबोरेटरीज [(2005) 4 एस. सी. सी. 17: (2005) 179

ई. एल. टी. 17] निर्धारित के लिए कोई मददगार नहीं है।

(जोर दिया

गया)

15. निर्धारण के लिए आवेदन किए जाने वाले परीक्षण के संबंध में

किसी उत्पाद का उचित वर्गीकरण और शुल्क प्रविष्टियों का निर्माण किसी उत्पाद के संदर्भ में, हम अन्य उद्धृत निर्णयों को अवसंरचना के रूप में संदर्भित कर सकते हैं।

15.1 . अल्पाइन इंडस्ट्रीज (ऊपर) का मामला अनिवार्य रूप से संबंधित है

रक्षा सेवाओं के विनिर्देशों के अनुसार निर्मित और पूरी तरह से सैन्य कर्मियों को आपूर्ति किए जाने वाले उत्पाद 'लिप साल्वे' के वर्गीकरण का प्रश्न, अध्याय 30 के तहत 'दवा' के रूप में या अध्याय 33 के तहत 'त्वचा की देखभाल के लिए तैयारी' के रूप में। इस न्यायालय ने सामान्य बोलचाल के सिद्धांत पर विचार करते हुए कहा कि प्रविष्टियों को उनके वैज्ञानिक या तकनीकी अर्थों में नहीं, बल्कि व्याख्या के उद्देश्य से उनके लोकप्रिय अर्थ से समझा जाना चाहिए। इस अदालत ने कहा: -

" 5. यह अच्छी तरह से स्थापित है कि टैरिफ प्रविष्टियों की व्याख्या में

उत्पाद शुल्क के वर्गीकरण से संबंधित विवाद पर उच्चतम न्यायालय शुल्क, उत्पाद-श्री द्वारा निर्मित लाल दंत मंजन

बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लिमिटेड ने श्री के मामले में रिपोर्ट दी

बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लिमिटेड बनाम। सीसीई [(1996) 9 एससीसी 402]।

निर्माता ने दावा किया कि उत्पाद एक आयुर्वेदिक उपभोक्ता, केंद्रीय कर और सेवा कर आयुक्त है। अश्विनी होमियो फार्मसी [दिनेश माहेश्वरी, जे.]

दन्त देखभाल के लिए औषधीय तैयारी उत्पाद। न्यायाधिकरण के दृष्टिकोण को इस न्यायालय द्वारा (एस. सी. सी. पीपी में) अभिनिर्धारित करके बरकरार रखा गया था। 404-05 , पैरा 3) कि "आम तौर पर एक दवा एक चिकित्सक द्वारा निर्धारित की जाती है।

चिकित्सक और इसका उपयोग सीमित समय के लिए किया जाता है और हर दिन नहीं जब तक कि यह मधुमेह जैसी विशिष्ट बीमारी से निपटने के लिए निर्धारित नहीं किया जाता है।

7. यह दृढ़ता से स्थापित है कि केंद्रीय उत्पाद शुल्क अधिनियम के तहत किसी उत्पाद के वर्गीकरण के सवाल पर, "वाणिज्यिक बोलचाल सिद्धांत" को लागू करना होगा। यह सच है कि इसके उत्पाद "लिप साल्वे" की अपीलकर्ता द्वारा पूरी आपूर्ति सेना के उपयोग के लिए रक्षा विभाग को की गई है।

"त्वचा की देखभाल" के लिए और "त्वचा के इलाज" के लिए नहीं। इसलिए, इसे त्वचा की देखभाल करने वाली क्रीम के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है न कि एक दवा के रूप में। से उत्पाद की प्रकृति और जिस उपयोग के लिए इसे रखा जाता है, हम यह नहीं पाते हैं कि अपीलार्थी का दावा स्वीकार्य है कि यह मुख्य रूप से है

चिकित्सीय उपयोग के लिए। न्यायाधिकरण के समक्ष प्रस्तुत सामग्री से हमें जो पता चलता है वह यह है कि अनिवार्य रूप से उत्पाद होंठों के फटने के लिए एक सुरक्षात्मक/निवारक तैयारी है। यह कोई इलाज नहीं है। उत्पाद, शायद, संयोग से फटे और फटे होंठों पर, इसका कुछ उपचारात्मक प्रभाव पड़ता है। इस बात से भी इनकार नहीं किया जाता है कि उत्पाद "लिप साल्वे" केवल ऊंचाई वाले क्षेत्रों में काम करने वाले सैनिकों के लिए उपयुक्त नहीं है, बल्कि यह शुष्क, ठंड के मौसम या धूप की किरणों से सुरक्षा के लिए सभी के लिए उपयोगी है। इसलिए, उत्पाद अनिवार्य रूप से होंठों की त्वचा की सुरक्षा करता है। यह एक होंठ-देखभाल उत्पाद है न कि एक "दवा"। यह न तो किसी डॉक्टर द्वारा निर्धारित किया जाता है और न ही बाजार में रसायनज्ञ या दवा की दुकानों से प्राप्त किया जा सकता है।

8. अपीलार्थी उत्पाद को अध्याय 30 के तहत एक औषधीय उत्पाद के रूप में और शीर्षक 30.03 के तहत एक "दवा" के रूप में वर्गीकृत करने की मांग करता है। केंद्रीय उत्पाद शुल्क के तहत अनुसूची की व्याख्या के नियमों के तहत

अधिनियम, 1985, वर्गीकरण अध्याय नोटों के उद्देश्य के लिए शुल्क के विभिन्न शीर्षकों के तहत उनकी विभिन्न प्रविष्टियों को समझने के लिए एक सहायता के रूप में लिया जा सकता है। टैरिफ अधिनियम के अध्याय 30 से ध्यान देने योग्य बात यह है कि नोट 1 (डी) की तैयारी के तहत अध्याय [2023] 6 एस. सी. आर.

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

33 भले ही उनमें "चिकित्सीय या रोगनिरोधी गुण" हों
"को परिभाषित किया गया है

अध्याय 30 से बाहर रखा गया। दवा

नोट 2 (i) का अर्थ है "ऐसी वस्तुएँ जो या तो सम्मिलित उत्पाद हैं।

दो या दो से अधिक घटक जो मिश्रित या यौगिक किए गए हैं

उपचारात्मक या रोगनिरोधी उपयोग के लिए एक साथ "। के एक पढ़ने पर
अध्याय 30 के नोट 2 (i) के साथ नोट 1 (डी)

शीर्षक के तहत

" औषधीय उत्पाद ", यह स्पष्ट है कि तैयारी जो

अध्याय 33 के अंतर्गत आते हैं, भले ही उनके पास चिकित्सीय या

रोगनिरोधी गुण शीर्षक 30.03 के अंतर्गत नहीं आते हैं।

"दवाओं" के रूप में

13. प्रविष्टि 33.04 के साथ नोट 2 और नोट 5, हम खुद को पाते हैं

न्यायाधिकरण की बहुमत की राय से सहमति में कि
"क्रीम" या सुरक्षात्मक है।

उत्पाद "लिप साल्वे" एक प्रकार की "बैरियर

त्वचा की जलन के खिलाफ क्रीम। इसलिए यह स्पष्ट रूप से प्रविष्टि के अंतर्गत आता है।
और देखभाल की तैयारी के विवरण के अनुरूप है।

33.04

न्यायाधिकरण की बहुमत राय में लिया गया दृष्टिकोण।
अनिवार्य रूप से एक है

हम पुष्टि करते हैं कि उत्पाद "लिप साल्वे"

होंठ और त्वचा की सुरक्षा के लिए तैयारी और एक नहीं है

" दवा "। ऐसी तैयारी जिनका एक सहायक है

अध्याय 33 के तहत टिप्पणी 2 के अनुसार 33.07 तक। उत्पाद.
5 के साथ पढ़ी गई प्रविष्टि 33.04 द्वारा कवर किया गया है।

स्पष्ट रूप से अध्याय के नोट

33 , यह अनिवार्य रूप से होंठों की सुरक्षा के लिए एक तैयारी है

या त्वचा। हमने व्यक्त की गई अल्पमत की राय को भी देखा है

न्यायाधिकरण के सदस्यों में से एक द्वारा और उसमें तर्क

अपीलार्थी की ओर से हमारे समक्ष समर्थन किया गया। कारणों से उपरोक्त, हम अल्पमत के दृष्टिकोण से सहमत नहीं हैं। मैं

परिणामस्वरूप, हम इन अपीलों में कोई योग्यता नहीं पाते हैं और वे इसके द्वारा हैं

खारिज कर दिया गया "।

(जोर दिया गया)

15.2 . जी. सी. में। जैन (ऊपर), इस न्यायालय ने अभिनिर्धारित किया कि शब्द और

सार का अर्थ व्यापार और समझ के उपयोग के अनुसार लगाया जाना चाहिए।

कानून में परिभाषित। इस अदालत ने कहा:

- ग्राहक आयोग, केंद्रीय कर और सेवा कर, V. अश्विनी होमियो फार्मसी [दिनेश माहेश्वरी, जे.]

" 18. मान लीजिए, अभिव्यक्ति "चिपकने वाला" में परिभाषित नहीं है

एकट करें। अब यह अच्छी तरह से तय हो गया है कि शब्दों और अभिव्यक्तियों को, जब तक कि कानून में परिभाषित नहीं किया गया है, उस अर्थ में समझा जाना चाहिए जिसमें उनके साथ काम करने वाले व्यक्ति समझते हैं अर्थात् व्यापार के अनुसार और

समझ और उपयोग।

15.3 . वॉकहार्ट लाइफ साइंसेज (ऊपर) में, इस न्यायालय ने सामान्य बोलचाल परीक्षण पर आगे निम्नानुसार मूल्यांकन किया: -

" 33. कर योग्य के वर्गीकरण के लिए कोई निश्चित परीक्षण नहीं है। वस्तु। शायद यही कारण है कि "सामान्य बोलचाल परीक्षण" या "वाणिज्यिक उपयोग परीक्षण" सबसे आम हैं (ए. नागराजू ब्रदर्स देखें। वी. ए. पी. राज्य [1994 सप्लीमेंट (3) एस. सी. सी. 122])।

क्या कोई विशेष वस्तु किसी विशेष शुल्क के दायरे में आएगी

शीर्षक या नहीं का निर्णय मूर्त के आधार पर किया जाना है

यह निर्धारित करने के लिए सामग्री या साक्ष्य कि ऐसा लेख कैसा है "आम बोलचाल" या "वाणिज्यिक दुनिया" में समझा जाता है

या "व्यापार मंडल" में या इसके लोकप्रिय अर्थ में। यह है।

वे जो इससे संबंधित हैं और यह वह अर्थ है जिसमें वे इसे समझते हैं जो विधायी के निश्चित सूचकांक का गठन करता है।

इरादा, जब कानून लागू किया गया था (देखें दिल्ली क्लॉथ एंड जनरल मिल्स कंपनी लिमिटेड V. राजस्थान राज्य [(1980) 4 एससीसी 71] .

34. यह निर्धारित करने के लिए आवश्यक कारकों में से एक कि क्या उत्पाद अध्याय 30 के अंतर्गत आता है या नहीं, यह है कि उत्पाद को आम तौर पर एक औषधीय उत्पाद के रूप में समझा जाता है या नहीं।

बोलचाल [सी. सी. ई. वी. देखें। श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन

लिमिटेड [(2009) 12 एस. सी. सी. 419] और सी. सी. ई. बनाम। ईशान रिसर्च लैब (पी) लिमिटेड [(2008) 13 एस. सी. सी. 349]। इसके अलावा, किसी विशेष उत्पाद में उपयोग की जाने वाली दवा की मात्रा भी एक प्रासंगिक कारक नहीं होगी, आमतौर पर, औषधीय अवयवों के उपयोग की सीमा बहुत कम होती है क्योंकि अधिक उपयोग मानव शरीर के लिए हानिकारक हो सकता है। [प्यूमा आयुर्वेदिक हर्बल (पी) लिमिटेड V. सीसीई [(2006) 3 एससीसी 266], गोवा राज्य बनाम। कोलफैक्स लैबोरेटरीज लिमिटेड [(2004) 9 एस. सी. सी. 83] और वी. पी. एल.

फार्मास्युटिकल्स लिमिटेड बनाम सी. सी. ई. [1995 सप (3) एस. सी. सी. 1]।

35. हालाँकि, इसके लिए एक स्थिर पैरामीटर नहीं हो सकता है
भारतीय में यह न्यायालय

किसी वस्तु का सही वर्गीकरण।

एल्यूमीनियम केबल्स लिमिटेड v. भारत संघ: (1985) 3 एस. सी. सी. 284 ने इस सिद्धांत को
निम्नलिखित शब्दों में व्यक्त किया है: (एस. सी. सी पी. 291 ,

पैरा 13)

सी आरा।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

" 13. सही स्थिति को जोड़ते हुए, निर्माण की प्रक्रिया

किसी उत्पाद का और अंतिम उपयोग जिसके लिए इसे रखा जाता है, जरूरी नहीं कि

एक के तहत उस उत्पाद के वर्गीकरण का निर्धारक होना
केंद्रीय उत्पाद शुल्क की तरह राजकोषीय अनुसूची। इससे अधिक और क्या है?

महत्वपूर्ण यह है कि क्या लेख का व्यापक विवरण इसमें फिट बैठता है

शुल्क में उपयोग की गई अभिव्यक्ति के साथ "।

36. इसके अलावा, कार्यात्मक उपयोगिता और प्रमुख या

जिस वस्तु को वर्गीकृत किया जा रहा है, उसका प्राथमिक उपयोग

समझ के अलावा ध्यान में रखा जाना चाहिए

आम बोलचाल में। [ओ. के. प्ले (भारत) देखें। लिमिटेड वी. सी. सी. ई. (2005)

एस. सी. सी. 460]

2

अल्पाइन

उद्योग बनाम। सीसीई [(2003) 3 एससीसी 111], सुजानिल चेमो उद्योग बनाम। सी. सी. ई.
और सीमा शुल्क (2005) 4 एस. सी. सी. 189), आई. सी. पी. ए. स्वास्थ्य

उत्पाद (पी) लिमिटेड v. सीसीई [(2004) 4 एससीसी 481], प्यूमा आयुर्वेदिक

हर्बल [(2006) 3 एस. सी. सी. 266], ईशान रिसर्च लैब (पी)

लिमिटेड [(2008) 13 एस. सी. सी. 349] और सी. सी. ई. बनाम। यूनी प्रोडक्ट्स इंडिया

लिमिटेड [(2009) 9 एससीसी 295]]

39. हमारे विचार में, जैसा कि हम पहले ही कह चुके हैं, संयुक्त कारक जिसे वर्गीकरण के उद्देश्य के लिए ध्यान में रखने की आवश्यकता है

वस्तुओं की संरचना, उत्पाद साहित्य, लेबल,

उत्पाद का चरित्र और उपयोगकर्ता जिसके लिए उत्पाद है

डाल दिया। हालांकि, रोगनिरोधी की छोटी मात्रा घटक एक प्रासंगिक कारक नहीं है। तत्काल मामले में, यह

इस बात पर विवाद नहीं है कि इसका उपयोग शल्यचिकित्सकों द्वारा किया जाता है

अपने हाथों को साफ करने या रगड़ने और रगड़ने का उद्देश्य रोगी की त्वचा की सतह उस हिस्से से पहले है

ऑपरेशन किया। उद्देश्य संक्रमण को रोकना है या

रोग होता है। इसलिए, विचाराधीन उत्पाद सुरक्षित हो सकता है।

एक "दवा" के रूप में वर्गीकृत जो अध्याय के तहत आता है उपशीर्षक 3003 जो एक विशिष्ट प्रविष्टि है और अध्याय के तहत नहीं है

उप-शीर्षक 3402.90 जो एक अवशिष्ट प्रविष्टि है।

(जोर दिया गया)

15.4 . सनी इंडस्ट्रीज (ऊपर) में, यह न्यायालय इस मामले पर विचार कर रहा था -

अनुमान लगाएँ कि क्या 'एड-विटामिन मसाज ऑयल फोर्टे' अभी भी वर्गीकृत था

शुल्क में बदलाव के बाद भी तंबू और मालिकाना दवा

1985 के बजट के बाद विकल्प।

इस न्यायालय ने उपभोक्ता आयोग, केंद्रीय कर और सेवा कर, 5 की अपील को खारिज कर दिया। अश्विनी होमियो फार्मसी [दिनेश माहेश्वरी, जे.] देखें कि विचाराधीन उत्पाद तेल था, जिसका उपयोग त्वचा को हटाने के लिए मालिश के लिए किया जाता था, और त्वचा को ठीक करने के लिए नहीं और इसलिए, 'सौंदर्य प्रसाधन' के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता था और 'दवाओं' के तहत नहीं। इस न्यायालय ने टिप्पणी की

एलडी निम्नानुसार: -

" 11. उपरोक्त अध्याय टिप्पणियों से, यह स्पष्ट है कि शीर्षक 33.03 में उत्पाद शामिल होंगे चाहे उनमें सहायक दवा या एंटीसेप्टिक घटक हों या नहीं, या उन्हें सहायक दवा या एंटीसेप्टिक घटक के रूप में माना जाता है।

सहायक उपचारात्मक या रोगनिरोधी मूल्य और शीर्षक 33.04

अन्य बातों के साथ-साथ इसमें निर्दिष्ट उत्पाद और मैनीक्योर या काइरोपोडी और बैरियर क्रीम में उपयोग के लिए अन्य तैयारी शामिल होंगी। त्वचा की जलन से सुरक्षा देने के लिए। इसलिए, उत्पाद,

मुख्य रूप से कुछ ए और डी विटामिन वाला तेल जिसका उपयोग किया जाता है

मालिश के लिए, भले ही यह रिकेट्स और उपचार की बीमारी को रोकता हो इसे एक दवा नहीं माना जा सकता है।

12. इसलिए, हमारे विचार में, पूरे साक्ष्य और अभिलेख पर प्रस्तुत प्रमाणपत्रों के साथ-साथ रासायनिक विश्लेषक की रिपोर्ट के सत्यापन के बाद, न्यायाधिकरण उचित रूप से इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि विचाराधीन उत्पाद मालिश के लिए उपयोग किया जाने वाला तेल है और

शीर्षक 33.04 द्वारा कवर किया जाएगा। इसी तरह का विवाद था

अल्पाइन इंडस्ट्रीज बनाम में उठाया गया। सीसीई [(2003) 3 एससीसी 111: जे. टी. (2003) 1 एस. सी. 130] न्यायालय ने कहा (एस. सी. सी. पी. में 116, पैरा 8) कि "औषधि" को टिप्पणी 2 (i) में परिभाषित किया गया है जिसका अर्थ है "ऐसी वस्तुएँ जो या तो दो या दो से अधिक घटकों वाले उत्पाद हैं जो -

चिकित्सीय या उपचारात्मक उपचार के लिए एक साथ मिश्रित या यौगिक किया गया है

रोगनिरोधी उपयोग"। नोट 1 (डी) को नोट 2 (आई) के साथ पढ़ने पर

अध्याय 30 "औषधीय उत्पाद" शीर्षक के तहत, यह स्पष्ट है कि जो तैयारी अध्याय 33 के तहत आती हैं, भले ही उनमें चिकित्सीय या रोगनिरोधी गुण हों, उन्हें शीर्षक 30.03 के तहत "दवा" के रूप में शामिल नहीं किया जाता है। इसके बाद न्यायालय ने इस प्रकार निर्णय दिया: (एस. सी. सी पी. 115, पैरा 7)

" सेना प्राधिकरणों द्वारा जारी प्रमाण पत्र और

उत्पाद के रासायनिक तत्व उत्पाद शुल्क लगाने के लिए उत्पाद के वर्गीकरण के सवाल पर निर्णायक नहीं होते हैं। यह दृढ़ता से स्थापित है कि केंद्रीय उत्पाद शुल्क अधिनियम के तहत किसी उत्पाद के वर्गीकरण के सवाल पर 'वाणिज्यिक बोलचाल सिद्धांत' को लागू करना होगा। यह सच है कि इसके उत्पाद 'लिप साल्वे'

की अपीलकर्ता द्वारा पूरी आपूर्ति सैन्य कर्मियों के उपयोग के लिए रक्षा विभाग को की गई है, लेकिन वह
[2023] 6 एस. सी. आर.

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

इसे वर्गीकृत करने के लिए। यह विवादित नहीं है कि उत्पाद 'लिप साल्वे' इसका उपयोग होंठों की देखभाल के लिए किया जाता है। यह अनिवार्य रूप से एक उत्पाद है

'त्वचा की देखभाल 'और' त्वचा के इलाज 'के लिए नहीं। अतः यह है कि

एक त्वचा-देखभाल क्रीम के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है न कि एक दवा के रूप में। से

उत्पाद की प्रकृति और जिस उपयोग में इसे रखा जाता है, हम करते हैं

यह न पाएँ कि अपीलार्थी का दावा स्वीकार्य है कि यह है मुख्य रूप से चिकित्सीय उपयोग के लिए "।

13. वर्तमान मामले में भी यही स्थिति होगी।

तेल का उपयोग त्वचा के इलाज के लिए नहीं बल्कि मालिश के लिए किया जाता है। और यह त्वचा की देखभाल करता है।

14. मामले के इस दृष्टिकोण में, हम इन अपीलों में कोई सार नहीं पाते हैं

और उन्हें तदनुसार बर्खास्त कर दिया जाता है। इसके बारे में कोई आदेश नहीं होगा लागत "।

(जोर दिया गया)

15.5 . शर्मा केमिकल्स (उपरोक्त) मामले में, यह न्यायालय संबंधित था।

यह मुद्दा कि क्या उत्पाद बानफूल ऑयल को वर्गीकृत किया जा सकता है

आयुर्वेदिक दवा या सुगंधित बाल तेल के रूप में। इस अदालत ने कहा

केवल यह तथ्य कि एक उत्पाद काउंटर पर बेचा जाता है न कि एक के तहत

आर का प्रिस्क्रिप्शन, वास्तव में इस निष्कर्ष पर नहीं पहुँचता है कि यह है

औषधि। यह न्यायालय, अन्य बातों के साथ-साथ, निम्नलिखित रूप में अभिनिर्धारित और अभिनिर्धारित करता है: -

“ 12. यह तय किया गया कानून है कि दिखाने की जिम्मेदारी या बोझ कि एक उत्पाद हमेशा एक विशेष शुल्क वस्तु के भीतर आता है

राजस्व के बारे में। केवल यह तथ्य कि एक उत्पाद पूरे देश में बेचा जाता है काउंटर और डॉक्टर के पर्चे के तहत नहीं, करता है

यह अपने आप में इस निष्कर्ष पर नहीं पहुँचता है कि यह एक दवा नहीं है।

हम श्री के निवेदन से भी सहमत हैं।

लक्ष्मीकुमारन ने कहा कि केवल इसलिए कि प्रतिशत में इसका मतलब यह नहीं है

किसी उत्पाद में दवा कम होती है, वास्तव

कि उत्पाद एक दवा नहीं है। आम तौर पर

दवाई का प्रतिशत या खुराक इस प्रकार होगी -

मानव शरीर द्वारा अवशोषित किया जा सकता है। दवा होगी

उपयोग करने योग्य उत्पाद। इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता है कि सभी सामग्री तेल में उपयोग किए जाने वाले वे हैं जो आयुर्वेद में दिए गए हैं।

बनफूल

भारत के सर्वोच्च न्यायालय द्वारा जारी शुद्धिपत्र सं। एफ. 3/एड। B.J./92/2003

9-9-2003 .

ग्राहक आयोग, केंद्रीय कर और सेवा कर, V. अश्विनी होमियो फार्मसी [दिनेश माहेश्वरी, जे.]

पाठ्यपुस्तकों। बेशक फॉर्मूला पाठ्यपुस्तकों के अनुसार नहीं हो सकता है।

लेकिन एक दवा पेटेंट या स्वामित्व के तहत भी हो सकती है।

सूत्र। वर्गीकरण निर्धारित करने के लिए मुख्य मानदंड है - आम तौर पर इसका उपयोग उन ग्राहकों द्वारा किया जाता है जो इसका उपयोग करते हैं। द.

यह साबित करने का बोझ कि ग्राहक बनफूल तेल को समझते हैं

ऐसा कोई प्रमाण प्रस्तुत नहीं किया जाता है। इसके विपरीत, हम पाते हैं कि तेल सिरदर्द, आँखों की समस्या, रात के इलाज के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है

अंधापन, रीलिंग हेड, कमजोर स्मृति, हिस्टीरिया, भूलने की बीमारी,

रक्तचाप, अनिद्रा आदि। आवश्यक खुराकें हैं -

लेबल पर भी सेट किया गया। उत्पाद के साथ पंजीकृत है

दवा नियंत्रक और एक दवा के तहत निर्मित किया जा रहा है

लाइसेंस "।

(जोर दिया गया)

15.6 . मेघदूत (ऊपर) के मामले में,

छह वस्तुओं, अर्थात् भृंगराज पूंछ, त्रिफला ब्राह्मी, के वर्गीकरण का आयन

नीम हर्बल सत, सत रीठा, मेघदूत हर्बल सत, मेघदूत

अल पाउडर और बी. पी. एल. फार्मास्यूटिकल्स में निर्णय का पालन करना), इस न्यायालय ने 'मेडिसिन' शीर्षक के तहत वस्तुओं को वर्गीकृत किया।

या वह वस्तुएँ जिन्हें सौंदर्य प्रसाधन वाले नामों के तहत बेचा जा सकता है

ओटेशन लेकिन ई. एम. एस. की संरचना के आधार पर दवाएँ बनी रहेंगी, निम्नलिखित शब्दों में: -

“ 5 एक उत्पाद औषधीय हो सकता है जिसके बिना

एक चिकित्सक द्वारा निर्धारित। यह भी नहीं था

चिकित्सा उत्पादों का निर्माण करने वाले व्यक्ति के लिए आवश्यक

शुल्क उप-शीर्षक 3003.30 के तहत दावा वर्गीकरण यह स्थापित किए बिना कि उत्पाद का वास्तव में परीक्षण किया गया था

नियंत्रित स्थितियों में रोगियों पर या कि परिणाम था

प्रभावशीलता के लिए परीक्षण नहीं किया गया। यह विशेष रूप से
उन मामलों में सही है जहां उत्पादों को आधारित होने का दावा किया जाता है
पारंपरिक आयुर्वेदिक सूत्रों पर।

7. इस न्यायालय ने इसी तरह के मामलों में निष्कर्ष निकाला है
जिन वस्तुओं को एक नाम के नाम से बेचा जा सकता है

" कॉस्मेटिक अर्थ फिर भी बना रहेगा।
दवाएँ।

बी. पी. एल. में वस्तुओं की संरचना के आधार पर

सी आरा।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

फार्मास्युटिकल्स लिमिटेड बनाम सी. सी. ई. [1995 पूरक (3) एस. सी. सी. 1: (1995) 77

न्यायालय ने सी. सी. ई. बनाम. में कहा है। पंडित डी. पी. शर्मा [(2003) 5 एस. सी. सी. 288: (2003) 154 ईएलटी 324] और सी. सी. ई. v. हिमताज आयुर्वेदिक उद्योग

केंद्र [(2003) 5 एससीसी 290: (2003) 154 ई. एल. टी. 323] संबंध में

बनफूल तेल और हिममतज तेल के साथ माना जाता है कि आयुर्वेदिक बाल तेल,
दवाइयाँ थीं और उन्हें टैरिफ के तहत ठीक से वर्गीकृत किया जाना चाहिए

शुल्क उप-शीर्षक के बजाय उप-शीर्षक 3003.30 3305.10 या 3305.50।

9. जहां तक मद (4), (5) और (6) का संबंध है, कारणों के लिए

शुल्क उप-शीर्षक के तहत दवाओं के तहत वर्गीकृत 3003.30 . "

(जोर दिया गया)

16. उपरोक्त के अलावा, प्रत्यर्थी की ओर से, संदर्भ

अतः इस न्यायालय के दिनांक 27.02.2019 से संबंधित निर्णय पर किया गया है।

आंध्र प्रदेश सामान्य बिक्री में प्रविष्टि के संबंध में अपहरण अधिनियम, 1957 और यह दावा किया गया है कि इसमें, इस न्यायालय ने स्वीकार किया कि विचाराधीन उत्पाद एक दवा थी न कि कॉस्मेटिक उत्पाद। न्यायालय ने निम्नलिखित रूप में अवलोकन और अभिनिर्धारित किया: -

प्रत्यर्थी की दलील है कि बाल तेल द्वारा निर्मित उत्तरदाता में 'अर्निका माउंट क्यू, कैथारिस क्यू, सिनकोना क्यू शामिल हैं।

और पिलोकार्पिन क्यू 'और इसलिए, इसके भीतर एक दवा होने के योग्य होंगे।

औषधि और प्रसाधन सामग्री अधिनियम, 1940 की धारा 3 का अर्थ,

और यदि ऐसा है, तो अनुसूची-I की प्रविष्टि 37 के तहत शामिल किया जाएगा।

उत्तरदाता द्वारा निर्मित उत्पाद एक दवा थी और कॉस्मेटिक उत्पाद नहीं।

7. तथ्य यह है कि प्रतिवादी होम्योपैथिक का उपयोग कर रहा है

हेयर ऑयल के निर्माण में पहले फार्माकोपिया का उल्लेख किया गया था।
नहीं किया गया है।

अपीलार्थी द्वारा पारित

न ही ग्राहक आयोग, केंद्रीय कर और सेवा कर, हैदराबाद बनाम। अश्विनी होमियो फार्मसी [दिनेश माहेश्वरी, जे.]

आयुक्त ने प्रत्यर्थी के उस तर्क पर विचार किया और न ही

अपीलार्थी द्वारा उच्च न्यायालय के समक्ष ऐसी याचिका दायर की गई थी। इस पर विचार करते हुए, हम निष्कर्ष से भटकने का कोई कारण नहीं देखते हैं

उच्च न्यायालय द्वारा पहुँचा गया कि प्रत्यर्थी द्वारा निर्मित उत्पाद का मूल्यांकन वर्षों 1994-1995 और 1995-1996 में प्रासंगिक समय पर सही मूल्यांकन किया गया था, जैसा कि इसके अंतर्गत आता है:

ए. पी. जी. एस. टी. अधिनियम की अनुसूची-1 की प्रविष्टि 37।

8. हम एक बार फिर यह स्पष्ट करते हैं कि इन अपीलों में लिया गया दृष्टिकोण इस मामले की तथ्य स्थिति में है और केवल मूल्यांकन वर्ष 1994-1995 और 1995-1996 तक ही सीमित है और नहीं होगा।

में किए गए संशोधन को ध्यान में रखते हुए, उत्तरदाता को बाद के मूल्यांकन वर्षों के लिए लागू करें या कोई लाभ हो। एपीजीएसटी अधिनियम "।

17. निर्धारित मामलों से संबंधित इस खंड को समाप्त करने से पहले, हम निम्नलिखित मामलों में न्यायाधिकरण के निर्णय पर भी ध्यान दे सकते हैं - बैकसन होमियो फार्मसी (ऊपर) जिस पर पूरे समय भरोसा किया गया था

प्रत्यर्थी द्वारा इस कारण से कि उसमें, काफी हद तक समान उत्पाद को एक दवा माना गया था। वास्तव में, उक्त निर्णय में, न्यायाधिकरण ने दो उत्पादों, "सनी अर्निका हेयर ऑयल" और "सनी अर्निका शैम्पू" से संबंधित प्रश्नों की जांच की। उत्पाद शैम्पू से संबंधित मुद्दे के संबंध में, न्यायाधिकरण ने मामले को

नए सिरे से निर्णय के लिए निचले प्राधिकारी, लेकिन बाल तेल के संबंध में, न्यायाधिकरण ने निर्धारिती की राय के संदर्भ में उसके तर्क को बरकरार रखा।

बहुमत और माना कि उक्त उत्पाद मुख्य रूप से परीक्षणों को लागू करते हुए होम्योपैथिक दवा के विवरण का जवाब दे रहा था

सामग्री से संबंधित। प्रमुख राय में, न्यायाधिकरण के विद्वान सदस्य ने व्यापक रूप से व्यक्तिगत संपत्तियों का उल्लेख किया

होम्योपैथिक दवाओं के साथ-साथ उत्पाद के अन्य प्राकृतिक अवयव भी। विद्वान सदस्य ने चिकित्सा उपचार की होम्योपैथी प्रणाली के अर्थों के साथ-साथ अवयवों के चिकित्सीय और रोगनिरोधी गुणों को भी रेखांकित किया और निम्नलिखित रूप में देखा: -

" उत्पादित और ऊपर उल्लिखित सामग्रियों पर सावधानीपूर्वक विचार और जांच करने पर, हम देखते हैं कि अर्निका हेयर ऑयल के निर्माण में उपयोग की जाने वाली सामग्री विशेष रूप से प्राकृतिक पदार्थ हैं और उनका संदर्भ इसमें पाया गया है।

भारत का होम्योपैथिक फार्माकोपिया। निर्माताओं ने दवा का लाइसेंस प्राप्त कर लिया है और होम्योपैथ द्वारा दवा के रूप में बाल तेल के उपयोग की सिफारिश की गई है। अपीलार्थियों के पास [2023] 6 एस. सी. आर. हैं।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

यह दिखाया गया है कि सामग्री प्रकृति में होम्योपैथिक हैं और

चिकित्सीय और रोगनिरोधी। इसलिए, उनका तर्क नहीं हो सकता है

प्रस्तुत साक्ष्य के आलोक में अस्वीकार कर दिया जाए। वर्तमान में

मामला, हम अर्निका हेयर ऑयल से चिंतित हैं, जिसका दावा किया जाता है

आवश्यक सामग्री के संदर्भ में दवा होना

त्वचा संबंधी रोगों के लिए एंटीसेप्टिक, एंटीफ्लोजिस्टिक कार्रवाई।

इसका उपयोग गंजापन के इलाज के लिए भी किया जाता है और यह एक एंटीऑक्सीडेंट के रूप में कार्य करता है।

डैंड्रफ एजेंट और कूलिंग एजेंट के रूप में। प्रत्येक को देखते हुए

एक या दूसरे चिकित्सीय या अन्य सामग्री वाली सामग्री

इसलिए, यह माना जाना चाहिए कि अर्निका बाल तेल एक नहीं है कॉस्मेटिक तैयारी या उप-शीर्षक के तहत बालों पर उपयोग के लिए

3505.90 केंद्रीय उत्पाद शुल्क, क्योंकि वे नहीं हैं

सफाई, सौंदर्यीकरण, प्रचार के लिए अभिप्रेत

माननीय के संदर्भ में आकर्षण या उपस्थिति में परिवर्तन

बी. पी. एल. फार्मास्युटिकल्स के मामले में सुप्रीम कोर्ट का फैसला लिमिटेड लेकिन वे रूसी के लिए विशिष्ट उपचार के लिए हैं

त्वचा और बालों की अन्य समस्याएं। इसलिए, अपीलार्थी का

एक दवा के रूप में उपचार के लिए विवाद होम्योपैथिक सामग्री और होम्योपैथिक माना जाता है

वर्गीकरण के लिए दवा को स्वीकार करना आवश्यक है

पूर्ववर्ती शुल्क का टीआई 14 ई और उप-शीर्षक 3003.30 के तहत नए शुल्क का "।

(जोर दिया गया)

18. हम उपयोगी रूप से स्पष्ट सिद्धांतों को सारांशित कर सकते हैं

इस अपील में उत्पन्न होने वाले बिंदुओं के निर्धारण के उद्देश्य से अब तक प्रासंगिक उद्धृत निर्णयों के साथ-साथ अन्य निर्दिष्ट आदेश भी इस प्रकार हैं:

18.1 . इस सवाल के संबंध में कि क्या उत्पाद विचाराधीन है,

ए. एच. ए. एच. ओ., अध्याय 30 के तहत 'दवा' के रूप में या अध्याय 33 के तहत 'सौंदर्य प्रसाधन या शौचालय की तैयारी' के रूप में वर्गीकरण के योग्य है, जांच को एक साथ लिए गए कुछ परीक्षणों की ओर निर्देशित किया जाएगा, जो सामान्य/वाणिज्यिक बोलचाल परीक्षण है, यानी उत्पाद को आम तौर पर कैसे समझा जाता है, जिसमें उसी में काम करने वाले व्यक्ति और अंतिम उपयोगकर्ता शामिल हैं। और

सामग्री परीक्षण यानी उत्पाद में उपयोग की जाने वाली सामग्री आधिकारिक पाठ्यपुस्तकों में उल्लिखित पाई जाती है या नहीं [श्री बैद्यनाथ के माध्यम से]

आयुर्वेद भवन लिमिटेड (ऊपर)]। अल्पाइन इंडस्ट्रीज (उपरोक्त) के मामले से सामान्य बोलचाल परीक्षण के अर्थों को आगे समझा जा सकता है, कि इस तरह के कर कानून का प्राथमिक उद्देश्य ग्राहकों, केंद्रीय कर और सेवा कर, हैदराबाद बनाम के आयुक्त को बढ़ाना है।

अश्विनी होमियो फार्मसी [दिनेश माहेश्वरी, जे.]

राजस्व और विभिन्न उत्पादों को उस उद्देश्य के लिए अलग-अलग वर्गीकृत किया जा रहा है, प्रविष्टियों को उनके वैज्ञानिक और तकनीकी अर्थ में नहीं समझा जाना चाहिए; बल्कि शुल्क में उपयोग किए जाने वाले शब्दों और अभिव्यक्तियों को उनके लोकप्रिय अर्थ से समझना होगा, जो उत्पाद के साथ काम करने या उपयोग करने वालों द्वारा उनसे जुड़ा अर्थ है। इसके अलावा, जैसा कि जीसी में देखा गया है। जैन (ऊपर), शब्दों और अभिव्यक्तियों को, जब तक कि कानून में परिभाषित नहीं किया गया है, उस अर्थ में समझा जाना चाहिए जिसमें व्यक्ति व्यवहार करते हैं।

वे समझते हैं अर्थात् व्यापार समझ और उपयोग के अनुसार। इसके अलावा, किसी उत्पाद के सही वर्गीकरण के लिए कोई निश्चित परीक्षण या स्थिर मापदंड नहीं है और यह अनिवार्य रूप से उससे संबंधित व्यक्तियों द्वारा दिए गए अर्थ पर निर्भर करता है। यह निर्धारित करने के लिए कि कोई उत्पाद अध्याय 30 के अंतर्गत आता है या नहीं, आवश्यक कारकों में से एक यह है कि क्या उत्पाद को आम बोलचाल में एक दवा उत्पाद के रूप में समझा जाता है। हालांकि, किसी विशेष उत्पाद में उपयोग की जाने वाली दवा की मात्रा एक प्रासंगिक कारक नहीं है क्योंकि, आम तौर पर, चिकित्सा सामग्री के उपयोग की सीमा बहुत कम होती है क्योंकि एक बड़ा उपयोग मानव के लिए हानिकारक हो सकता है। शरीर [वॉकहार्ट लाइफ साइंसेज (ऊपर) के माध्यम से]। इसके अलावा, जैसा कि शर्मा केमिकल्स (ऊपर) में कहा गया है, केवल यह तथ्य कि एक उत्पाद काउंटरों पर बेचा जाता है और डॉक्टर के पर्चे के तहत नहीं, अपने आप में इस निष्कर्ष पर नहीं पहुंचता है कि यह एक दवा नहीं है; और मेघदूत (ऊपर) में,

18.2 . आम तौर पर, हमने न्यायाधिकरण के किसी अन्य निर्णय पर विचार नहीं किया होगा, लेकिन उक्त निर्णय को संदर्भित करना उचित पाया है। बक्सन होमियो फार्मसी (उपरोक्त) के मामले में, जिस पर प्रतिवादी द्वारा पूरे समय भरोसा किया गया था, क्योंकि यह "सनी अर्निका हेयर ऑयल" के नाम से बेचे जाने वाले एक समान उत्पाद से संबंधित था, जिसे एक "दवा" माना गया था। न्यायाधिकरण द्वारा विवादित आदेश में भी उक्त निर्णय पर भरोसा किया गया है। महत्वपूर्ण विशेषता [2023] 6 एस. सी. आर.

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

उक्त निर्णय का यह है कि उसमें, बहुमत की प्रमुख राय में, घटक परीक्षण को व्यापक रूप से निपटाया गया है और औषधीय गुणों और कई अवयवों के चिकित्सीय/रोगनिरोधी उपयोग का विश्लेषण किया गया है, जिसमें वर्तमान मामले में शामिल उत्पाद के सभी अवयव शामिल हैं।

18.3 . जहां तक वर्गीकरण के पुनः वर्गीकरण या पुनः परीक्षा के औचित्य के प्रश्न का संबंध है, इस न्यायालय ने स्पष्ट रूप से कहा है कि

केवल कर संरचना में परिवर्तन या शुल्क प्रविष्टियों के आधार पर किसी उत्पाद की प्रकृति और चरित्र में परिवर्तन या उत्पाद के उपयोग में परिवर्तन दिखाए बिना वर्गीकरण को बदलने का कोई उचित कारण नहीं है [बी. पी. एल. फार्मास्यूटिकल्स और विट्रो में निर्णयों के अनुसार] प्रयोगशालाएँ (ऊपर)]। जैसा कि श्री बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लिमिटेड (उपरोक्त) में देखा गया है, इस न्यायालय ने नए टैरिफ अधिनियम के अधिनियमन के बाद उत्पाद, डी. एम. एल. के पुनर्वर्गीकरण की मांग करने वाली दलीलों को खारिज कर दिया क्योंकि उत्पाद की संरचना, चरित्र और उपयोग नए उपशीर्षक 3301.30 को शामिल करने के बाद भी समान रहे।

19. इस प्रकार स्पष्ट सिद्धांतों को संक्षेप में प्रस्तुत करने के बाद, जहां तक वर्तमान उद्देश्य के लिए प्रासंगिक है, हम निर्धारण के लिए उत्पन्न होने वाले बिंदुओं को उठा सकते हैं। जैसा कि देखा गया है, इस मामले में निर्धारण के लिए उत्पन्न होने वाला प्रमुख बिंदु यह है कि क्या विचाराधीन उत्पाद, ए. एच. ए. एच. ओ., अध्याय 30 के तहत 'दवा' के रूप में या केंद्र की पहली अनुसूची के अध्याय 33 के तहत 'कॉस्मेटिक या शौचालय की तैयारी' के रूप में वर्गीकरण के योग्य है। उत्पाद शुल्क अधिनियम, 1985। इस बिंदु के निर्धारण के लिए, जांच को ऊपर देखे गए दोहरे परीक्षणों की ओर निर्देशित किया जाएगा।

सिद्धांतों और दोहरे परीक्षण का अनुप्रयोग

20. विचाराधीन उत्पाद के उद्देश्य के लिए दोहरे परीक्षणों को लागू करने से पहले, हम उपयोगी रूप से अलग-अलग प्रस्तावों को दोहरा सकते हैं।

इस मामले में प्रस्तुत किया गया, जहां न्यायनिर्णायक प्राधिकरण के निष्कर्ष 14 वर्तमान मामले के तथ्यों और बैक्सन होमियो फार्मेसी (उपरोक्त) के मामले में दिखाई देने वाली टिप्पणियों से यह पता चलता है कि वर्तमान मामले (ए. एच. ए. एच. ओ.) में शामिल उत्पाद की सभी सामग्री समान रूप से विचाराधीन उत्पाद की सामग्री थीं, अर्थात्, अर्निका मोंटाना, कैथारिस, पिलोकार्पिन, सिनकोना। जैसा कि हमारे सामने रखे गए मैटेरिया मेडिका के प्रासंगिक पृष्ठों से देखा गया है,

होम्योपैथिक शब्दावली, सिनकोना ऑफिसिनालिस को चाइना ऑफिसिनालिस भी कहा जाता है; और पिलोकार्पिन को अनिवार्य रूप से जाबोरांडी से अलग किया जाता है। कहा जाता है कि बैक्सन होमियो फार्मेसी (सुप्रा) में शामिल इसी तरह के उत्पाद में अन्य सामग्रियों के अलावा अर्निका मोंट, जाबोरांडी, कैथारिस और चीन की सामग्री शामिल थी।

ग्राहक आयुक्त, केंद्रीय कर और सेवा कर, हैदराबाद बनाम। अश्विनी होमियो फार्मसी [दिनेश माहेश्वरी, जे.]

और अपीलार्थी की ओर से की गई प्रस्तुतियाँ एक तरफ खड़ी होती हैं जबकि, प्रतिवादी की ओर से की गई प्रस्तुतियों के साथ न्यायाधिकरण के निष्कर्ष दूसरी तरफ खड़ी होती हैं।

20.1 . जैसा कि देखा गया है, न्यायनिर्णायक प्राधिकरण ने उत्पाद की सामग्री के साथ-साथ इसके लेबल की भी जांच की और पाया कि इसमें कोई सामग्री नहीं थी। शर्त जैसे "चिकित्सा व्यवसायी के पर्चे के तहत अधिकृत चिकित्सा वितरक या खुदरा विक्रेता द्वारा बेचा जाना" भले ही इस तरह का उल्लेख 1940 के अधिनियम के तहत एक अनिवार्य आवश्यकता थी; और यह नहीं था

अचानक न केवल सिर पर बल्कि शरीर पर कहीं भी गंजापन के धब्बे; और यह कि अनिद्रा एक चिकित्सा स्थिति थी जिसके परिणामस्वरूप तनाव और अन्य तंत्रिका संबंधी विकारों के कारण नींद नहीं आती थी। इन टिप्पणियों के अनुसार, लेबल पर एलोपेसिया या अनिद्रा का उल्लेख न होने से संकेत मिलता है कि उत्पाद किसी भी महत्वपूर्ण उपचारात्मक उद्देश्य के लिए नहीं था। न्यायनिर्णायक प्राधिकरण ने यह भी कहा कि उल्लेख करते हुए इसके विपरीत कोई संकेत नहीं है, इसका तात्पर्य यह है कि उपयोग की मात्रा या अवधि के बावजूद, खोपड़ी या त्वचा पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ा, जो एक दवा की मूल अवधारणा के खिलाफ था, जिसे निर्धारित किया जाता है या सीमित अवधि के लिए उपयोग किया जाता है और अधिक मात्रा को विपरीत परिणाम के लिए जाना जाता है-दस्त, अम्लता, अल्सरेशन, चकत्ते आदि जैसे संकेत। न्यायनिर्णायक प्राधिकरण ने आगे कहा कि लेबल में न तो एक सकारात्मक संकेत था कि यह एक दवा थी और न ही एक नकारात्मक संकेत था कि यह एक सौंदर्य प्रसाधन नहीं था, लेकिन इसे निश्चित रूप से "बाल तेल" के रूप में लेबल किया गया था; और यदि इरादा उत्पाद को दवा के रूप में पहचानने का था, तो इसे लेबल करने की कोई आवश्यकता नहीं थी।

"बाल तेल" के रूप में। इसलिए, न्यायनिर्णायक प्राधिकरण ने माना कि ए. एच. ए. एच. ओ. को एक दवा के रूप में वर्गीकृत नहीं किया जा सकता है, लेकिन इसे "बाल तेल" के रूप में वर्गीकृत किया जाना चाहिए। जहाँ तक सामान्य बोलचाल परीक्षण का संबंध है, न्यायनिर्णायक प्राधिकरण ने पाया कि ए. एच. ए. एच. ओ. चिकित्सा और सामान्य दोनों में सुलभ था। स्टोर और काउंटर पर खरीदा जा सकता है। इसके अलावा, इसके लेबल पर लंबे, काले बहते बालों वाली एक महिला का चित्रण इसका संकेत देता है

कॉस्मेटिक के रूप में वर्गीकरण और एक दवा के रूप में नहीं। न्यायनिर्णायक प्राधिकरण ने यह भी कहा कि 'बालों का विकास तत्काल होने वाली बीमारी के बजाय एक कॉस्मेटिक आवश्यकता है।

ध्यान या उपचार '। न्यायनिर्णायक प्राधिकरण ने यह भी देखा कि संबंधित अधिकारियों द्वारा जारी किए गए दवा लाइसेंसें ने अपने आप में [2023] 6 एस. सी. आर. नहीं बनाया।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

ए. एच. ए. एच. ओ. होम्योपैथिक दवाई की तैयारी है। मैटेरिया मेडिका का उल्लेख करते हुए, न्यायनिर्णायक प्राधिकरण ने एक घटक (पिलोकार्पिन) के बारे में उनकी आपत्तियों को नोट किया और देखा कि होम्योपैथी के साथ उक्त घटक का कोई संबंध नहीं था। से संलग्न टिप्पणियों के संबंध में व्याख्या के सामान्य नियमों के महत्व का उल्लेख करते हुए

1985 के अधिनियम की पहली अनुसूची में संबंधित अध्याय/शुल्क आइटम,

20.1. 1 . लर्नड ए. एस. जी. ने न्यायनिर्णायक प्राधिकरण के उपरोक्त निष्कर्षों का समर्थन करते हुए और न्यायाधिकरण के निष्कर्षों पर जोर देते हुए तर्क दिया है कि विचाराधीन उत्पाद अध्याय 30 के तहत निर्धारित मानदंडों को पूरा नहीं करता है; कि भले ही उत्पाद के पास है। कुछ उपचारात्मक या रोगनिरोधी मूल्य, यह अभी भी कॉस्मेटिक होगा क्योंकि इसमें सहायक उपचारात्मक और रोगनिरोधी मूल्य वाले लोग शामिल नहीं हैं; और टैरिफ आइटम 3305 90 19, विशेष रूप से "बाल तेल" के लिए, सीधे उत्पाद को कवर करता है, एक विशिष्ट प्रविष्टि एक सामान्य प्रविष्टि पर प्राथमिकता लेगी। ए. एस. जी. ने तर्क दिया है कि उत्पाद का सामान्य बोलचाल परीक्षण प्रतिवादी के पक्ष में नहीं है, क्योंकि उत्पाद किसी भी चिकित्सा व्यवसायी द्वारा निर्धारित नहीं है, चिकित्सा और सामान्य दुकानों में बिना किसी पर्चे के स्वतंत्र रूप से उपलब्ध है, और काउंटर पर खरीदा जा सकता है, जैसा कि प्रतिवादी द्वारा स्वीकार किया गया है। इसके अलावा, लेबल प्रिस्क्रिप्शन के तहत अधिकृत चिकित्सा वितरक या खुदरा विक्रेता द्वारा बिक्री की शर्त का संकेत नहीं देता है; यह किसी विशेष बीमारी का इलाज नहीं करता है; और लेबल पर दावे केवल विपणन उद्देश्यों के लिए हैं। विद्वान ए. एस. जी. ने अल्पाइन इंडस्ट्रीज (ऊपर) में इस निर्णय पर भरोसा किया है कि कोई भी

उत्पाद के सहायक चिकित्सीय या रोगनिरोधी उपयोग से "बाल तेल" के रूप में इसकी प्रकृति नहीं बदलेगी यदि आम बोलचाल में, इसे कॉस्मेटिक के रूप में माना जाता है। लर्नड ए. एस. जी. ने यह भी प्रस्तुत किया है कि उत्पाद का विज्ञापन बाल तेल के रूप में किया जाता है न कि एक दवा के रूप में और जनता द्वारा माना जाता है जो उत्पाद को बाल तेल (कॉस्मेटिक) के रूप में खरीदते और बेचते हैं न कि दवा के रूप में। 20.2 . न्यायनिर्णायक प्राधिकरण द्वारा जो देखा गया है और विद्वान ए. एस. जी. द्वारा जो तर्क दिया गया है, उसके विपरीत, यह देखा गया है कि कारण दर्शाएँ नोटिस की पहली प्रतिक्रिया में, प्रतिवादी ने जोर देकर कहा कि उत्पाद को 'दवा' के रूप में वर्गीकृत करने के लिए दोहरे परीक्षण तथ्यों और कारकों को देखते हुए इसके उत्पाद ए. एच. ए. एच. ओ. के संबंध में विधिवत संतुष्ट थे:

((i) उपभोक्ता आयोग, केंद्रीय कर और सेवा कर, हैदराबाद बनाम के संदर्भ में की गई विनिर्माण प्रक्रिया। अश्विनी होमियो फार्मसी [दिनेश माहेश्वरी, जे.]

औषधि नियंत्रक और आयुष निदेशालय द्वारा जारी विनिर्माण लाइसेंस, उत्पाद में चार होम्योपैथिक दवाओं, अर्निका मोंटाना, कैथारिस, पिलोकार्पिन की उपस्थिति का संकेत देगा।

और सिनकोना; (ii) इस प्रकार उपयोग की जाने वाली दवाओं का उल्लेख मैटेरिया मेडिका ऑफ होम्योपैथिक ड्रग्स जैसी आधिकारिक पाठ्य पुस्तकों में किया गया है; (iii) कि इसके लेबल ने अनुसूची के तहत "होम्योपैथिक मेडिसिन" शब्दों को इंगित किया है।

1945 के नियम; (iv) कि उत्पाद को खोपड़ी पर लगाया जाना चाहिए और मौखिक रूप से सेवन नहीं किया जाना चाहिए; यह बालों की जड़ों में रक्त परिसंचरण की कमी, बालों के झड़ने (खालित्य), रूसी, सिरदर्द और नींद की कमी (अनिद्रा) को ठीक/रोकेगा, और उक्त बीमारियों से उपचार से बालों में प्राकृतिक रंग के विकास और रखरखाव के मामले में अच्छा स्वास्थ्य होगा; और (v) कि उत्पाद बाजार की भाषा के संदर्भ में एक दवा थी।

लगभग 19 वर्षों की अवधि में इसके उपयोग से इसका प्रमाण मिलता है। प्रतिवादी ने यह भी प्रस्तुत किया कि उत्पाद 'कॉस्मेटिक' नहीं था, क्योंकि उपयोग की जाने वाली सामग्री में रोगनिरोधी गुण थे और इसका उपयोग सफाई या सौंदर्यीकरण या आकर्षण को बढ़ावा देने या उपस्थिति में बदलाव के लिए नहीं किया गया था; और इसके लेबल पर लंबे बहते बालों वाली महिला का चित्रण केवल व्यक्तिपरक था और बालों के झड़ने और रूसी के लिए इलाज किए जाने पर लंबे बहते बालों से अच्छे स्वास्थ्य के संकेत के रूप में व्याख्या की जा सकती है।

20.2. 1 . न्यायाधिकरण ने विवादित आदेश में किए गए अवलोकन और निष्कर्षों के साथ-साथ उसके समक्ष रखे गए साक्ष्य और उद्धृत साक्ष्य पर भी ध्यान दिया।

निर्णय और अन्य बातों के साथ-साथ यह अभिनिर्धारित किया कि भले ही माल बेचा गया था

काउंटर पर और मेडिकल प्रिस्क्रिप्शन पर नहीं, इससे सामान दवा की श्रेणी से बाहर नहीं होगा; कि जब अलग-अलग

चिकित्सा की शाखाओं और लाइसेंस देने वाले अधिकारियों ने गंजापन या बाल झड़ने को बीमारी के रूप में मान्यता दी, न्यायनिर्णायक प्राधिकरण एक अलग दृष्टिकोण नहीं ले सका जिसे चिकित्सा की शाखाओं द्वारा मान्यता नहीं दी गई थी; कि उत्पाद में स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया था कि इसका उपयोग अन्य बीमारियों के लिए भी किया जा सकता है।

जैसे कि नींद की कमी, रक्त परिसंचरण में वृद्धि और यह कहीं भी बालों की देखभाल या बालों की सुंदरता बढ़ाने के लिए खुद को चित्रित नहीं करता है; कि लेबल ने नियमों के अनुसूची के तहत होम्योपैथिक दवा के रूप में उत्पाद का संकेत दिया।

1945 , सामग्री और उनकी संरचना, संकेत, विपरीत-संकेत और उपयोग का तरीका और लेबल की ऐसी सामग्री से ही पता चलता है कि आम बोलचाल में भी, उपयोगकर्ता और व्यापारी इसे होम्योपैथिक दवा के रूप में समझते थे; कि लेबल पर कोई सलाह नहीं थी और न ही यह सुझाव दिया गया था कि इसका उपयोग बालों के तेल के रूप में किया जा सकता है; और निर्विवाद रूप से, उत्पाद चार होम्योपैथिक दवाओं से बना था जैसे कि अर्निका मोंट, कैथारिस, पिलोकार्पिन और सिनकोना और इसका उपयोग बालों के झड़ने, अनिद्रा,

रूसी, सिरदर्द और अन्य बीमारियों के इलाज के लिए किया जाता था; और उत्पाद [2023] 6 एस. सी. आर.

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

इसे प्रासंगिक नियमों के तहत जारी ड्रग लाइसेंस के तहत निर्मित किया गया था, जिसे तेलंगाना सरकार के आयुष विभाग के अतिरिक्त निदेशक और ड्रग कंट्रोलर (होमियो) द्वारा समय-समय पर नवीनीकृत किया गया था; कि आयुष विभाग के ड्रग कंट्रोलर की विश्लेषण रिपोर्ट के अनुसार भी, उत्पाद दवा थी; उत्पाद सीरियल नं. 1945 के नियमों की अनुसूची के की 35 (होम्योपैथिक बाल तेलों में 3X शक्ति तक सक्रिय तत्व होते हैं) और उक्त अनुसूची में केवल दवाएं शामिल हैं न कि सौंदर्य प्रसाधन। न्यायाधिकरण ने यह भी पाया कि उत्पाद को पहले से ही वाणिज्यिक करों के संदर्भ में आंध्र प्रदेश उच्च न्यायालय द्वारा दवा माना गया था; और टी. एन. वी. ए. टी. अधिनियम 2006 के उद्देश्य से तमिलनाडु सरकार के वाणिज्यिक करों के अग्रिम निर्णय प्राधिकरण ने उत्पाद को होम्योपैथिक दवा माना। न्यायाधिकरण ने इस तथ्य पर भी ध्यान दिया कि अतीत में भी, प्रतिवादी

उत्पाद के वर्गीकरण के लिए कारण दर्शाएँ नोटिस जारी किए गए थे

कॉस्मेटिक और अपीलीय प्राधिकरण ने सामान्य बोलचाल के सभी पहलुओं के साथ-साथ उत्पाद की सामग्री और इसके उपयोग पर गौर करने के बाद माना कि उत्पाद एक होम्योपैथिक दवा थी। न्यायाधिकरण ने श्री बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन (उपरोक्त) के मामले को अलग करते हुए कहा कि इसमें विचाराधीन उत्पाद सामान्य बोलचाल परीक्षण को संतुष्ट नहीं करता है और उक्त उत्पाद डी. एम. एल. को आम बोलचाल में शौचालय की तैयारी के रूप में जाना जाता है न कि आयुर्वेदिक चिकित्सा के रूप में। न्यायाधिकरण ने आगे बताया

कि अल्पाइन इंडस्ट्रीज (ऊपर) के मामले में इस न्यायालय का निर्णय

यह लागू नहीं था क्योंकि उक्त मामले में, औषधि और सौंदर्य प्रसाधन अधिनियम, 1940 के तहत निर्धारिती द्वारा प्राप्त दवा लाइसेंस में ही उल्लेख किया गया था कि यह एक गैर-फार्माकोपिया वस्तु के रूप में बाहरी अनुप्रयोग के लिए मलम और क्रीम के लिए एक लाइसेंस था, जबकि वर्तमान मामले में, उत्पाद होम्योपैथिक दवा के रूप में पंजीकृत था।

20.2. 2 . न्यायाधिकरण के निष्कर्षों का समर्थन करते हुए, प्रतिवादी के विद्वान वरिष्ठ वकील ने तर्क दिया है कि ए. एच. ए. एच. ओ. एक चिकित्सीय है। या खोपड़ी से संबंधित बीमारियों को ठीक करने के लिए तेल के माध्यम से रोगनिरोधी दवा। इस उत्पाद का विज्ञापन "हेयर ऑयल" के रूप में नहीं किया गया है, लेकिन यह है

केवल "अश्विनी होम्यो अर्निका हेयर ऑयल" के रूप में विपणन किया गया।

21. मामले की समग्र समझ में, और वर्तमान मामले के तथ्यों के लिए प्रासंगिक सिद्धांतों के अनुप्रयोग के साथ, हम स्पष्ट रूप से हैं

यह विचार कि विचाराधीन उत्पाद बिना किसी संदेह के दोहरे परीक्षणों से गुजरता है और न्यायाधिकरण द्वारा इसे उचित रूप से दवा के रूप में अभिनिर्धारित किया गया है। 22. सामग्री से संबंधित परीक्षण को लेते हुए, यह सुझाव देने का कोई कारण नहीं दिखता है कि विचाराधीन उत्पाद, आहो, ग्राहकों के आयुक्त, केंद्रीय शुल्क और सेवा कर, हैदराबाद बनाम।

अश्विनी होमियो फार्मसी [दिनेश माहेश्वरी, जे.]

इस परीक्षा को पास नहीं करता है। यह निर्विवाद है कि उत्पाद को सक्षम द्वारा विधिवत लाइसेंस प्राप्त होने के बाद एक दवा के रूप में निर्मित किया गया है।

अधिकारी और चार होम्योपैथिक का संयोजन ले जाते हैं इसकी तैयारी में दवाएँ, अर्निका मोंटाना, कैथारिस, पिलोकार्पिन और सिनकोना। इन होम्योपैथिक दवाओं का विधिवत उल्लेख भारत के होम्योपैथिक फार्माकोपिया में पाया गया है और साथ ही प्रतिवादी के विद्वान वकील द्वारा हमारे सामने रखे गए डिक्शनरी ऑफ प्रैक्टिकल मैटेरिया मेडिका में भी इसका उल्लेख किया गया है।

22.1 . द्वारा पारित विस्तृत आदेश से गुजरने के बाद

न्यायनिर्णायक प्राधिकरण, हम यह देखने के लिए विवश हैं कि किसी भी तरह से उत्पाद को कॉस्मेटिक के रूप में रखने की अत्यधिक चिंता में, न्यायनिर्णायक प्राधिकरण ने अपनी आपत्तियों का सुझाव देने का भी प्रयास किया

होम्योपैथिक दवाओं के रूप में ए. एच. ए. एच. ओ. की सामग्री। लेबल की सामग्री के अपने सूक्ष्म विश्लेषण में न्यायनिर्णायक प्राधिकरण का दृष्टिकोण भी मछली पकड़ने की जांच की प्रकृति में था जैसे कि केवल कुछ अंतर या कुछ खामियों का पता लगाने के लिए, इस मामले के सार को देखे बिना कि विचाराधीन उत्पाद स्पष्ट रूप से 1945 के नियमों की अनुसूची के तहत एक होम्योपैथिक दवा होने का संकेत दिया गया था। प्रकृति की ओर देखें उत्पाद और उसके गुणों के बारे में, प्रासंगिक संकेतों को भी उचित शब्दों में निर्दिष्ट किया गया है और इसकी प्रकृति और उद्देश्य को देखते हुए, उपयोग के लिए निर्देश भी इस तरह से दिए गए हैं कि इसकी सीधे खोपड़ी पर मालिश की जाए और इसे रात भर के लिए छोड़ दिया जाए। इसलिए, उपयोग की जाने वाली खुराक और किस अवधि के लिए विनिर्देशन की कमी के बारे में न्यायनिर्णायक प्राधिकरण की टिप्पणियाँ।

इसका उपयोग अपनी कमियों को लेकर किया जाना है। जैसा कि देखा गया है, विचाराधीन उत्पाद अनिवार्य रूप से खोपड़ी में और बालों के साथ उत्पन्न होने वाली स्थितियों से निपटने के लिए है जो इसका अभिन्न अंग है। इस उत्पाद में होम्योपैथिक दवाएँ शामिल हैं। इसका उपयोग करने का तरीका इसे खोपड़ी पर रखना और रात भर के लिए छोड़ देना है। उत्पाद की प्रकृति को देखें 15 खण्ड । 1971 संस्करण। और वॉल्यूम। वी 1986 एड। 16 जॉन हेनरी क्लार्क द्वारा ए डिक्शनरी ऑफ प्रैक्टिकल मैटेरिया मेडिका; बी. जैन पब्लिशर्स (पी) लिमिटेड, नई दिल्ली।

17 जैसा कि पी में समझाया गया है। 821 हमारे सामने रखे गए मैटेरिया मेडिका के अर्क में से, "पिलोकार्पिन कई एल्कलॉइड की सबसे विशेषताओं में से एक है जिन्हें अलग किया गया है। जाबोरांडी (पिलोकार्पस पिनलस) "। बक्सन होमियो फार्मसी (उपरोक्त) के मामले में न्यायाधिकरण के निर्णय में, इस घटक के गुणों को स्पष्ट रूप से इंगित किया गया है, जिसमें प्रासंगिक चिकित्सा ग्रंथों के संदर्भ में "गंजापन के उपचार के लिए" भी शामिल है।

23] 6 एस सी आर।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

और इसके उपयोग, खुराक के संबंध में विनिर्देशन की कमी के बारे में अवलोकन उत्पाद को उसके औषधीय मूल्य से बाहर नहीं ले जाते हैं। इसके अलावा, न्यायनिर्णायक प्राधिकरण की टिप्पणियों के कारण असंतोष

दृष्टिकोण की तर्कसंगतता। यदि प्रत्यर्थी ने लेबल पर स्पष्ट शब्दों में कहा है कि उत्पाद की प्रकृति, उद्देश्य और उपयोग के तरीके को देखते हुए, उत्पाद में कोई विपरीत संकेत नहीं हैं, तो यह स्पष्ट नहीं है। औषधि।

22.2 . न्यायनिर्णायक प्राधिकरण के दृष्टिकोण की विकृति और अनुचितता को इन टिप्पणियों से भी देखा जाता है कि, यदि

उत्पाद की पहचान दवा के रूप में करने का इरादा था, इसे "हेयर ऑयल" के रूप में लेबल करने की कोई आवश्यकता नहीं थी। जबकि अभिव्यक्ति "बाल तेल" दिखाई देता है लेबल, "हेयर ऑयल" अभिव्यक्ति से पहले अन्य अभिन्न अभिव्यक्तियों "होमो" और "अर्निका" को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता था और इसे अलग नहीं छोड़ा जा सकता था। न्यायनिर्णायक प्राधिकरण इस हद तक गया था कि

यह देखने के लिए कि बालों का विकास तत्काल ध्यान या उपचार की आवश्यकता वाली बीमारी के बजाय एक कॉस्मेटिक आवश्यकता थी! न्यायाधिकरण ने ठीक ही कहा है कि जब बाल झड़ने या गंजापन को एक चिकित्सा स्थिति के रूप में मान्यता दी जाती है, तो न्यायनिर्णायक प्राधिकरण एक अलग दृष्टिकोण नहीं ले सकता था, जिसे चिकित्सा की किसी भी शाखा द्वारा मान्यता नहीं दी गई थी।

1940 के अधिनियम के तहत जारी किए गए लाइसेंस की शर्तें, हमारे विचार में, स्पष्ट रूप से सामग्री परीक्षण को संतुष्ट करता है। दूसरे शब्दों में, इसकी सामग्री पर, उत्पाद वास्तव में होम्योपैथिक के संयोजन वाली एक दवा है।

दवाएँ।

23. प्रत्यर्थी द्वारा उत्पाद के लिए उपयोग की जाने वाली अभिव्यक्ति "बाल तेल" पर अपीलार्थी की स्पष्ट निर्भरता के संबंध में, यह भी देखा जा सकता है कि उपभोक्ता आयोग, केंद्रीय कर और सेवा कर, हैदराबाद V.

अश्विनी होमियो फार्मसी [दिनेश माहेश्वरी, जे.]

23.1 . वर्तमान मामले में यह भी स्पष्ट है कि विचाराधीन उत्पाद को 'कॉस्मेटिक' के रूप में वर्गीकृत करने के लिए विभाग का रुख अध्याय 33 अनिवार्य रूप से उसमें होने वाली विशिष्ट प्रविष्टि "हेयर ऑयल" पर आधारित है और ऐसा प्रतीत होता है कि उत्पाद के लेबल पर होने वाली अभिव्यक्ति "हेयर ऑयल" को उनके द्वारा निर्णायक माना गया है। यहाँ ऊपर जिस पर चर्चा की गई है, उसके लिए यह एक स्वाभाविक परिणाम के रूप में भी होगा कि उत्पाद के लेबल पर होने वाली अभिव्यक्ति "हेयर ऑयल" केवल उस माध्यम का संकेत दे रही है जिसके माध्यम से होम्योपैथिक दवाओं को उत्पाद सहित लागू किया जाना है। हम उत्पाद को अध्याय 33 में ले जाने के लिए अपीलार्थी की ओर से प्रस्तुतियों और प्रयासों को केवल इसलिए स्वीकार करने में असमर्थ हैं क्योंकि इसके लेबल पर

पूर्ववर्ती महत्वपूर्ण अभिव्यक्तियों "होमो" और "अर्निका" को नजरअंदाज करते हुए अभिव्यक्ति "हेयर ऑयल"। जैसा कि इस न्यायालय ने बी. पी. एल. में कहा है

फार्मास्यूटिकल्स (ऊपर), किसी उत्पाद को अध्याय 33 में ले जाने के लिए, इसे पहले 'कॉस्मेटिक' होना चाहिए। इसी तरह, अध्याय 30 के नोट 1 (ई) के संदर्भ की भी कोई प्रासंगिकता नहीं है क्योंकि विचाराधीन उत्पाद को हेडिंग 3305 की तैयारी और फिर महत्वहीन या सहायक चिकित्सीय या रोगनिरोधी गुणों वाला नहीं कहा जा सकता है। जहां तक विचाराधीन उत्पाद का संबंध है, जो अनिवार्य रूप से होम्योपैथिक दवाओं से बना है, जिसका चिकित्सीय और रोगनिरोधी उपयोग होता है, इसे केवल सहायक दवा मूल्य वाला नहीं कहा जा सकता है। इसे अलग तरह से रखते हुए, हम संतुष्ट हैं कि विचाराधीन उत्पाद, ए. एच. ए. एच. ओ., मुख्य रूप से औषधीय मूल्य का है और उसमें कॉस्मेटिक की वस्तु, यानी बालों का तेल, उस औषधीय मूल्य के उचित उपयोग के लिए एक माध्यम के अलावा और कुछ नहीं है।

23.2 . उपरोक्त के संबंध में, हम बी. पी. एल. फार्मास्यूटिकल्स (उपरोक्त) के मामले में इस न्यायालय के विचार को उपयुक्त पाते हैं -

हमारे सामने सवाल। इसमें, यह न्यायालय निर्धारिती द्वारा "सेलसन शैम्पू" ब्रांड नाम के तहत बेचे जाने वाले उत्पाद पर विचार कर रहा था। इस न्यायालय ने विभिन्न कोणों से लागू किए गए विभिन्न परीक्षणों के संदर्भ में और यह पता लगाने के बाद कि इसका सक्रिय घटक सेलेनियम सल्फाइड था, इसे दवा पाया। उस संदर्भ में, इस न्यायालय ने यह भी संकेत दिया कि इस तरह के उत्पाद का उपयोग करने वाला व्यक्ति यह कहने के लिए तैयार नहीं हो सकता है कि वह [2023] 6 एस. सी. आर.

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

रूसी या इसी तरह की अन्य बीमारियों से छुटकारा पाने के लिए एक विशेष यौगिक का उपयोग कर रहा था, लेकिन यह बताने में संकोच नहीं करेगा कि वह एक का उपयोग कर रहा था शैम्पू का विशेष ब्रांड। इस संबंध में बी. पी. एल. फार्मास्युटिकल्स में अवलोकन घटक परीक्षण के साथ-साथ सामान्य बोलचाल परीक्षण से भी संबंधित हैं और हमारे विचार में, प्रतिवादी के मामले को मजबूत करते हैं।

23.3 . विशिष्ट प्रविष्टि के बारे में प्रस्तुतियों को प्राथमिकता दी जानी चाहिए

सामान्य प्रविष्टि अपीलार्थी के मामले को आगे नहीं ले जाती है। वर्तमान मामले में, वास्तव में, 3305 शीर्षक के तहत टैरिफ आइटम 'हेयर ऑयल' से संबंधित अध्याय 33 की निर्दिष्ट प्रविष्टि को ही एक सामान्य प्रविष्टि के रूप में लिया जाना है और किसी भी मामले में, जब हेयर ऑयल का उपयोग केवल दवा के उपयोग/प्रशासन/अनुप्रयोग के लिए एक माध्यम के रूप में किया जा रहा है, तो मामला शीर्षकों 3003 या 3004 के तहत दवा से संबंधित विशिष्ट प्रविष्टि में आएगा।

और यह होम्योपैथिक प्रणाली की दवाओं का होने के कारण, यह या तो टैरिफ आइटम 3003 90 14 या टैरिफ आइटम 3004 90 14 में आएगा। किसी भी मामले में, विचाराधीन उत्पाद अध्याय 33 के अंतर्गत नहीं आ सकता है।

24. जैसा कि देखा गया है, हमने बैकसन होमियो फार्मेसी के मामले में न्यायाधिकरण के उक्त निर्णय को संदर्भित करना उचित समझा है

(ऊपर), जिस पर प्रतिवादी द्वारा हमेशा भरोसा किया गया था क्योंकि यह "सनी अर्निका हेयर ऑयल" के नाम से बेचे जाने वाले समान उत्पाद से संबंधित था। उक्त निर्णय स्पष्ट रूप से बताता है कि प्रतिवादी के पक्ष में घटक परीक्षण और हम उत्पाद को एक दवा मानते हुए न्यायाधिकरण द्वारा समान अवयवों के विस्तृत विश्लेषण से संतुष्ट हैं। होम्योपैथी के मौलिक सिद्धांतों और औषधीय गुणों और कई अवयवों के चिकित्सीय/रोगनिरोधी उपयोग के संदर्भ में घटक परीक्षण, जैसा कि बैकसन होमियो फार्मेसी (उपरोक्त) के मामले में न्यायाधिकरण के बहुमत की प्रमुख राय में व्यापक रूप से देखा गया है, विश्वास को प्रेरित करता है और जब ए. एच. ए. एच. ओ. में ऐसी सभी होम्योपैथिक दवाएं पाई जाती हैं जो न्यायाधिकरण के विचाराधीन उत्पाद की सामग्री थीं, तो हम बैकसन होमियो फार्मेसी (उपर्युक्त) में न्यायाधिकरण के बहुमत के विचारों का समर्थन करना उचित और उचित पाते हैं और ऐसा प्रतीत नहीं होता है कि

अवयवों के औषधीय गुणों का पुनः विश्लेषण करने की आवश्यकता। यह देखने के लिए पर्याप्त होगा कि विचाराधीन उत्पाद, ए. एच. ए. एच. ओ., किसी भी संदेह से परे सामग्री परीक्षण में उत्तीर्ण होता है।

25. सामान्य बोलचाल परीक्षण की अन्य विशेषताओं पर, यानी जिस तरीके से उत्पाद को आम तौर पर समझा जाता है, उस पर ध्यान दिया जाता है।

अपीलकर्ताओं और न्यायनिर्णायक प्राधिकरण द्वारा सबसे आगे रखे गए आधारों में से एक यह था कि आहहो, उपभोक्ता आयोग, केंद्रीय कर और सेवा कर, दोनों में सुलभ था।

अश्विनी होमियो फार्मसी [दिनेश माहेश्वरी, जे.]

चिकित्सक। मेघदूत में, इस न्यायालय ने अन्य तय किए गए मामलों के संदर्भ में यह भी स्पष्ट कर दिया है कि जिन वस्तुओं को कॉस्मेटिक अर्थ वाले नामों के तहत बेचा जा सकता है, वे फिर भी संरचना के आधार पर दवाएँ ही होंगी। किसी भी कोण से देखने पर, केवल काउंटर पर उपलब्ध होने के लिए, विचाराधीन उत्पाद, ए. एच. ए. एच. ओ., एक दवा बनना बंद नहीं करता है।

26. इस प्रश्न की जांच करते समय एक अन्य आवश्यक विशेषता यह होगी कि क्या कोई विशेष उत्पाद अध्याय 30 के तहत दवा के रूप में या अध्याय 33 के तहत सौंदर्य प्रसाधन के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है।

तैयारी अनिवार्य रूप से रोग के इलाज या रोकथाम के लिए होती है, यानी चिकित्सीय या रोगनिरोधी गुणों के साथ या केवल देखभाल के लिए। संक्षेप में कहें तो, जब तैयारी इलाज या रोकथाम के लिए होती है, तो यह दवा होगी लेकिन, यदि

केवल देखभाल के लिए, यह कॉस्मेटिक होगा। बेशक, एक कॉस्मेटिक दवा नहीं बनेगी, भले ही उसके पास सहायक उपचारात्मक या रोगनिरोधी हो।

मूल्य, जैसा कि इस न्यायालय द्वारा अल्पाइन इंडस्ट्रीज (ऊपर) में अभिनिर्धारित किया गया है। हालाँकि, विचाराधीन उत्पाद, ए. एच. ए. एच. ओ., इस आधार पर विफल नहीं होता है क्योंकि यह होम्योपैथिक दवा की तैयारी है और जब इसका विपणन किया जाता है।

उन दवाओं को ले जाने के रूप में, वाणिज्यिक और आम बोलचाल में भी,

"होमो" और "अर्निका" जैसे महत्वपूर्ण शब्दों वाले अपने नाम के साथ, उत्पाद को केवल मुख्य रूप से औषधीय मूल्य वाले के रूप में समझा जा सकता है, न कि केवल कॉस्मेटिक मूल्य के रूप में।

27. न्यायनिर्णायक प्राधिकरण और अपीलार्थी की ओर से दूसरा सुझाव, लेबल पर लंबे काले बहते बालों वाली महिला के चित्रण के संदर्भ में सामान्य बोलचाल परीक्षण से संबंधित है और इस तरह इसे कॉस्मेटिक के रूप में माना जाता है, यह भी मामले को बेतुकेपन के कगार पर ले जा रहा है। जब विचाराधीन उत्पाद का उद्देश्य बालों के झड़ने को नियंत्रित करने के साथ-साथ रूसी को रोकने और अच्छी नींद लाने के लिए भी है, जो सभी अपने स्वयं के चिकित्सीय और रोगनिरोधी अर्थ रखते हैं, तो लंबे काले बहते बालों वाली महिला की तस्वीर को बालों के झड़ने से असंबंधित नहीं कहा जा सकता है।

उत्पाद से संबंधित संकेत। किसी भी मामले में, ऐसी तस्वीर, अपने आप में,

उत्पाद को कॉस्मेटिक नहीं बना सकते। दिलचस्प बात यह है कि उक्त तस्वीर के शीर्ष पर और उत्पाद के नाम के नीचे, यह [2023] 6 एस. सी. आर. की घोषणा करता है।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

" बालों के झड़ने को नियंत्रित करता है। खुजली को रोकता है "। न्यायनिर्णायक प्राधिकरण ने अपने विश्लेषण की प्रक्रिया को और अधिक अतार्किक ऊंचाइयों पर ले जाते हुए यह घोषणा की है कि बालों का विकास तत्काल ध्यान या उपचार की आवश्यकता वाली बीमारी के बजाय एक कॉस्मेटिक आवश्यकता थी। हमने तर्क की अतार्किकता और तर्क की कमी को दिखाने के लिए न्यायनिर्णायक प्राधिकरण की इन अभिव्यक्तियों को शाब्दिक रूप से पुनः प्रस्तुत किया है। दवा के माध्यम से बालों के झड़ने का उपचार या रोकथाम को अस्वीकार करने की मांग की गई थी

प्राधिकरण को उनकी इस धारणा से न्याय देना कि बालों का विकास केवल एक कॉस्मेटिक आवश्यकता थी। हम केवल इस तरह के दृष्टिकोण को अस्वीकार कर सकते हैं।

27.1 . इस मामले का सार यह है कि आम बोलचाल में, विचाराधीन उत्पाद को अनिवार्य रूप से इसके दावा किए गए औषधीय गुणों के लिए संपर्क किया जाएगा न कि बालों के तेल के रूप में। हमारे विचार में, यह पहलू स्वयं अपीलार्थी की दलीलों और न्यायनिर्णायक प्राधिकरण की टिप्पणियों को अस्वीकार करने के लिए पर्याप्त है। न्यायाधिकरण ने वर्तमान मामले के तथ्यों पर लागू कानून के अनुसार मामले को सही तरीके से निपटाया है।

28. न्यायनिर्णायक प्राधिकरण ने यह भी देखा है कि संबंधित अधिकारियों द्वारा जारी किए गए दवा लाइसेंसों ने ए. एच. ए. एच. ओ. को एक गैर-लाभकारी संगठन नहीं बनाया है।

होम्योपैथिक दवाई की तैयारी। हालांकि, न्यायनिर्णायक प्राधिकरण इस बात पर विचार करने में विफल रहा है कि 1945 के नियमों की अनुसूची के तहत जारी किए गए इस तरह के दवा लाइसेंस को नजरअंदाज नहीं किया जाना चाहिए था

कुल मिलाकर। सामान्य बोलचाल परीक्षण और सामग्री परीक्षण दोनों के संबंध में, यह कारक अपनी प्रासंगिकता रखता है, भले ही अंत में मामले का निर्णायक न हो। प्रिस्क्रिप्शन के तहत अधिकृत चिकित्सा वितरक या खुदरा विक्रेता द्वारा बिक्री की शर्त की कमी के बारे में प्रस्तुत करने की अपनी कमियां हैं क्योंकि यह नहीं दिखाया गया है कि क्या 1945 के नियमों की अनुसूची के तहत आने वाली ऐसी तैयारी के लिए भी नियम 97 के संदर्भ में इस तरह के उल्लेख की आवश्यकता थी। किसी भी मामले में, 1940 के अधिनियम के पालन के लिए ऐसी कोई भी आवश्यकताएँ

और 1945 के नियम केवल लाइसेंस देने और दवाओं के निर्माण और बिक्री को विनियमित करने वाले अधिकारियों के विचार का विषय हो सकते हैं। वर्तमान उद्देश्य के लिए एकमात्र प्रासंगिक पहलू यह है कि विचाराधीन उत्पाद को होम्योपैथी दवा के रूप में निर्मित किया जा रहा है, और इसके लिए होम्योपैथिक दवा के रूप में विपणन और उपयोग किया जा रहा है।

औषधीय मूल्य, अध्याय 30 में आएगा और इसे प्रसाधन के रूप में ब्रांडेड नहीं किया जा सकता है, ताकि 1985 के अधिनियम की पहली अनुसूची के अध्याय 33 के तहत आ सके।

29. अंत में, हम यह भी देख सकते हैं कि विचाराधीन उत्पाद, आंध्र प्रदेश सामान्य बिक्री में प्रविष्टि के संबंध में

कर अधिनियम, 1957 को इस न्यायालय द्वारा उपभोक्ता आयोग, केंद्रीय कर और सेवा कर, हैदराबाद बनाम का जवाब देने के लिए स्वीकार किया गया है। अश्विनी होमियो फार्मसी [दिनेश माहेश्वरी, जे.]

एक दवा का विवरण और एक कॉस्मेटिक उत्पाद नहीं होने के नाते, यह पाए जाने के बाद कि प्रतिवादी-निर्धारिती का इसकी सामग्री के बारे में दावा और इस तरह 1940 के अधिनियम की धारा 3 के अर्थ के भीतर एक दवा होने के लिए योग्य उत्पाद का राजस्व द्वारा खंडन नहीं किया जा सकता है। इस न्यायालय के उक्त निर्णय का 1985 के अधिनियम के उद्देश्य के लिए विचाराधीन उत्पाद के वर्गीकरण के प्रश्न पर सीधा प्रभाव नहीं पड़ सकता है, लेकिन इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता है कि विचाराधीन उत्पाद 1940 के अधिनियम के उद्देश्य के लिए और उक्त आंध्र प्रदेश सामान्य बिक्री कर अधिनियम, 1957 के उद्देश्य के लिए भी 'दवा' के विवरण का उत्तर देता हुआ पाया गया है। किसी भी दृष्टिकोण से देखा जाए तो यह एक दवा बनी हुई है।

क्या उत्पाद के वर्गीकरण को फिर से देखें

न्यायसंगत

30. यहाँ ऊपर जो चर्चा की गई है, उसके लिए यह स्पष्ट है कि विचाराधीन उत्पाद को उचित रूप से 'दवा' के रूप में वर्गीकृत किया गया था

अतीत और कुछ भी सामग्री नहीं बदली थी ताकि उसे फिर से वर्गीकृत किया जा सके। हालाँकि, राजस्व ने अपने वर्गीकरण पर फिर से विचार करने के लिए वर्ष 2012 में शुल्क संरचना के संशोधन पर भरोसा करने का प्रयास किया है। न्यायनिर्णायक प्राधिकरण ने इस औचित्य को इस तरह से बताया कि शुल्क शीर्षकों में पर्याप्त बदलाव किए गए थे,

विशेष रूप से जब अध्याय 30 को फिर से लिखा गया ताकि पेटेंट/स्वामित्व और जेनेरिक दवाओं के बीच के अंतर को दूर किया जा सके और उन्हें इस आधार पर वर्गीकृत किया जा सके कि उन्हें खुदरा बिक्री के लिए इकाई पात्रों में रखा गया है या नहीं; 1940 के अधिनियम और विभिन्न फार्माकोपिया के बारे में उल्लेख हटा दिया गया; और अध्याय 33 के तहत, वाक्यांश 'हेयर ऑयल' प्रमुख हो गया, जिसके तहत, सहायक शीर्षकों में कहा गया था:

'सुगंधित बाल तेल 'और' अन्य 'निर्दिष्ट किए गए। न्यायनिर्णायक प्राधिकरण के अनुसार, इन सभी परिवर्तनों की व्याख्या योग्य है

जो पहले तय किया गया था या निपटाया गया था, उसकी तुलना में विचाराधीन उत्पाद के लिए नई प्रविष्टियाँ। विद्वान ए. एस. जी. ने भी अपनी दलीलों के समर्थन में इन्हीं कारणों पर भरोसा किया है। हमारे विचार में, विभाग में केवल अध्याय 30 और अध्याय 33 में किए गए कुछ परिवर्तनों के संदर्भ में उत्पाद के संबंध में तय स्थिति को फिर से खोलने की मांग करने का कोई औचित्य नहीं था, जिसने अनिवार्य रूप से उनके दायरे और दायरे को व्यापक बनाया था और विस्तृत विनिर्देशों के साथ संशोधित सीमांत नोट और शुल्क प्रविष्टियाँ प्रदान की थीं। जहाँ तक प्रत्यर्थी, ए. एच. ए. एच. ओ. के उत्पाद का संबंध है, इन परिवर्तनों का अन्यथा कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

31. पुनर्वर्गीकरण के प्रस्ताव के समर्थन में, अपीलार्थी की ओर से आंध्र शुगर लिमिटेड (ऊपर) में निर्णय का हवाला दिया गया है।

23] 6 एस सी आर।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

हमने उक्त निर्णय के पैराग्राफ पर भरोसा किया है इससे पहले और यह स्वीकार करना मुश्किल है कि इसमें प्रस्ताव, इस प्रभाव के लिए कि अधिसूचना जारी करने वाले अधिकारियों द्वारा दिया गया अर्थ कानून की व्याख्या की समकालीन संरचना का एक अच्छा मार्गदर्शक है, वर्तमान मामले में कोई आवेदन करता है। लागू होने वाले सिद्धांत, जैसा कि बी. पी. एल. फार्मास्यूटिकल्स और विक्को में लिए गए निर्णयों में देखा गया है।

प्रयोगशाला (ऊपर) का कहना है कि वर्गीकरण के परिवर्तन को केवल विभिन्न कर संरचना के लागू होने के आधार पर यह दिखाए बिना स्वीकार नहीं किया जा सकता है कि उत्पाद ने अपना चरित्र बदल दिया है। श्री बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन (उपरोक्त) में लिया गया निर्णय उचित है।

उत्पाद डी. एम. एल. को औषधीय तैयारी के रूप में स्वीकार करने के असफल प्रयास के बाद (बैद्यनाथ । में), निर्धारिती-कंपनी ने वर्गीकरण में बदलाव के लिए एक और प्रयास किया।

1985 के अधिनियम के लागू होने के बाद। निर्धारिती-कंपनी की ओर से इस तरह के प्रयास को खारिज करते हुए, इस न्यायालय ने कहा कि चूंकि उत्पाद की संरचना, चरित्र और उपयोग समान रहे हैं, इसलिए नए उप-शीर्षक 3301.30 को शामिल करने के बाद भी, वर्गीकरण में परिवर्तन उचित नहीं था (श्री बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन में निर्णय के पैराग्राफ 58 के अनुसार, जिसे पहले पुनः प्रस्तुत किया गया था)। इस प्रकार, अधिनियम 1985 की पहली अनुसूची के अध्याय 30 और अध्याय 33 में प्रविष्टियों का केवल व्यापक आधार, अपने आप में, उत्पाद के पुनः वर्गीकरण के प्रयास के लिए औचित्य नहीं हो सकता था।

32. प्रविष्टियों के संशोधन के संबंध में भी, जैसा कि देखा गया है, अपीलार्थी का रुख-राजस्व यह रहा है कि अध्याय 30 को फिर से लिखा गया था।

32.1 . 2012 के संशोधन के माध्यम से, भले ही बालों पर उपयोग की तैयारी से संबंधित प्रासंगिक प्रविष्टियों को पहले की प्रविष्टियों की तुलना में सूक्ष्म वर्गीकरण प्रदान किया गया हो। (जैसा कि यहाँ पहले निकाली गई प्रविष्टियों से देखा जा सकता है), यह कभी भी ग्राहकों, केंद्रीय कर और सेवा कर का आयुक्त, हैदराबाद V.

अश्विनी होमियो फार्मसी [दिनेश माहेश्वरी, जे.]

इसका अर्थ यह माना जाता है कि जो कुछ भी बालों पर उपयोग करने के लिए तैयार किया जाता है और जिसका नाम "हेयर ऑयल" है, वह दवा के रूप में अपना चरित्र खो देगा यदि अन्यथा इसे चिकित्सीय या रोगनिरोधी उपयोग के लिए तैयार किया गया है। इसके अलावा, विभिन्न प्रविष्टियों को फिर से लिखना और फिर से संगठित करना।

दवाओं में उत्पाद के चरित्र पर शायद ही कोई प्रभाव पड़ता है।

इसे अध्याय 30 के तहत शामिल किया जाएगा, जहां इसे उपशीर्षक 3004 90 14 में रखा जा सकता है। इसी तरह, 1940 के अधिनियम या विभिन्न फार्माकोपिया के संदर्भ को हटाने की व्याख्या इस अर्थ में नहीं की जा सकती है कि विचाराधीन उत्पाद जैसा उत्पाद, जो अन्यथा एक दवा है, उस आधार के आधार पर वर्गीकृत किया जाता है जिसके माध्यम से दवा का उपयोग प्रदान किया जा रहा है।

33. हम यहाँ पहले ही चर्चा कर चुके हैं कि प्रासंगिक सिद्धांतों के अनुप्रयोग के साथ, विचाराधीन उत्पाद, ए. एच. ए. एच. ओ., दोहरे परीक्षण के माध्यम से साफ हो जाता है। इसलिए, अंतिम विश्लेषण में, हमारा स्पष्ट रूप से यह विचार है कि संशोधनों के संदर्भ में उत्पाद को फिर से वर्गीकृत करने का कोई प्रयास करने का कोई औचित्य नहीं था।

वर्ष 2012 में अध्याय 30 और 33 में लाया गया।

निष्कर्ष

34.

ऊपर जिन बातों की चर्चा की गई है, उनके उत्तर

निर्धारण के लिए उत्पन्न होने वाले बिंदु यह हैं कि विचाराधीन उत्पाद, ए. एच. ए. एच. ओ., केंद्रीय उत्पाद शुल्क अधिनियम, 1985 की पहली अनुसूची के अध्याय 33 के तहत 'सौंदर्य प्रसाधन या शौचालय की तैयारी' के रूप में नहीं, बल्कि अध्याय 30 के तहत 'दवा' के रूप में वर्गीकरण के योग्य है और वर्ष 2012 में लाए गए संशोधन के माध्यम से शुल्क संरचना में परिवर्तन ने उत्पाद के वर्गीकरण पर किसी भी पुनर्विचार को उचित नहीं ठहराया।

35. उपरोक्त को ध्यान में रखते हुए, यह अपील विफल हो जाती है और इसलिए खारिज कर दी जाती है। कोई लागत नहीं।

या

चिका खारिज कर दी गई।

निधि जैन